आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 66★ अंक : 2★ मूल्य : 10 रु.
10 फरवरी, 2009★ मांघ 2065

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

पीयें धोवन पानी, बोले मीठी वाणी यही कहे जिनवाणी ।

गहने
अलंकार
नक्काशीवाले
चमकिले
तेजस्वी
ओजस्वी

एक है वैसा, मुझे चाहिए था जैसा...

॥ स्वर्णतीर्थ ॥

प्रभावी
अदभूत
अक्षय
अर्थपूर्ण
अष्टपैलू
अगम्य
मोहर
अनमोल
अप्रतिम
माणिक

रतनलाल सी. बाफना
ज्वेलर्स
सोने • चांदी • हिरा • मोती
०२५७-२२२५९०३,३९०३ जलगाँव • औरंगाबाद ०२४०-२२४४५२०,२२
जहाँ विश्वास ही परंपरा है।

जिनवाणी हिन्दी–मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन. 263[illegible]

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक म[illegible]
दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.),
फोन नं. 0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005, फोन नं. 0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह–सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं. RJ/JPC/M-07/2009-11

卐 सदस्यता

स्तम्भ सदस्यता-रू.11000/-संरक्षक सदस्यता-रू.5000/
वार्षिक सदस्यता- रू. 50/- त्रिवर्षीय सदस्यता-रू.120/-
आजीवन सदस्यता देश में - रू. 500/-
विदेश में- रू. 5000/- इस अंक का मूल्य रू. 10/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- रू. 2500/-

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

चरे पयाइ परिसंकमाणो,
जं किंचि पासं इह मण्णमाणो।
लाभंतरे जीविय बूहइत्ता,
पच्छा परिन्नायमलापधंसी ।।7।।

— उत्तराध्ययन सूत्र 4.7

मुनि चले दोष से शंकित हो,
लघुदोष बन्ध-कारण समझे।
हो लाभ जहाँ तक तन पोसे,
बिन लाभ देह का मोह तजे।।7।।

फरवरी 2009
वीर निर्वाण संवत् 2535
माघ 2065

वर्ष 66 अंक 2

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोनः .2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो ।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	जैन जीवन-पद्धति	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	भीतर के भाव करते हिंसा का माप	-तत्त्वचिंतक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	11
	सम्यक् प्रयत्न में समर्थ बनें	-साध्वीप्रमुखा श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.	16
चिन्तन-	दर्शन - एक चिन्तन	-उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी शास्त्री	18
तत्त्वबोध-	द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव	-श्री चिरंजीव अनेकान्त	28
प्रासंगिक-	अहिंसा-दिवसः परम्परा, उद्देश्य और महत्त्व	-डॉ. दिलीप धींग	32
तत्त्वज्ञान-	उपांगों में पुण्य तत्त्व (5)	--सुश्री नेहा चोरडिया	40
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Pratikramaṇa Sūtra	*-Dr. Priyadarshana Jain*	47
तत्त्व चर्चा-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (47)	-श्री धर्मचन्द जैन	51
युवा-स्तम्भ-	सत्संग और स्वाध्याय	-श्री अशोक कुमार बागरेचा	54
धारावाहिक-	जम्बूकुमार (57)	-जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.	58
उपन्यास-	छाया (3)	-युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी म.सा.	64
नारी-स्तम्भ-	गुरु सहयोग से आत्म-विकास	- श्रीमती सुनीता डागा	69
स्वास्थ्य-विज्ञान-	खिंचाव चिकित्सा	- डॉ. चंचलमल चोरडिया	71
बाल-स्तम्भ-	संस्कार परिवर्तन	- श्री मधुरकर मुनि जी म.सा.	74
विचार-	प्रज्ञा की जागृति	- श्री नवरतनमल डोसी	57
	शान्ति का उपाय	-श्री गणेशमुनि जी	84
गीत/कविता-	धर्म-देशना की नदी	- श्री आर. जी. मिश्रा	17
	अभी मंजिल है बाकी	- मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.	24
	आचार्य श्री हीराचन्द्र महिमा गान	- श्री सम्पतराज चौधरी	25
	प्रार्थना	- श्री जिनेन्द्र कुमार जैन	31
	मान्यता	- डॉ. रमेश मयंक	39
संवाद-	समस्या-समाधान (20)		78
अभिव्यक्ति-	संकलित		81
साहित्य समीक्षा-	नूतन-साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	83
परिणाम-	अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड		85
युवक परिषद्-	उल्लेखनीय कदम		89
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		98
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		118

सम्पादकीय

जैन जीवन-पद्धति

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

जैन जीवन-पद्धति जैनों के लिए तो उपयोगी है ही, विश्व के लिए भी इसकी उपयोगिता असंदिग्ध है। आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक तीनों स्तरों पर जैन जीवन-पद्धति मनुष्य को स्वस्थ बनाती है। किन्तु ऐसे कम ही जैन गृहस्थ होंगे जो इस पद्धति के अनुसार अपना जीवन जीते हैं। साधु-साध्वियों के लिए अलग जीवन-पद्धति है तथा गृहस्थों के लिए अलग। पूर्ण ईमानदारी के साथ भावों की विशुद्धि करते हुए यदि आगमोक्त जैन जीवन-पद्धति को अपनाया जाए तो जीवन की अनेक समस्याओं का निराकरण साधक को सहज प्राप्त हो जाता है। यहाँ पर गृहस्थों की जीवन-पद्धति पर विचार करना ही अभीष्ट है।

जैन जीवन-शैली का सबसे प्रमुख प्रतिपाद्य है- हिंसा का अल्पीकरण अर्थात् कम से कम हिंसा हो। मन, वचन और काया तीनों स्तरों पर इसके प्रति जागरूक होने की आवश्यकता है। प्रमाद के वशीभूत व्यक्ति हिंसक विचारों से ग्रस्त हो जाता है और वह तुच्छ स्वार्थों की पूर्ति के लिए अथवा अनावश्यक रूप से ही हिंसा करता रहता है। श्रावक दो करण एवं तीन योग से हिंसा का त्यागी होता है। वह प्राणिमात्र के प्रति करुणाशील होकर मैत्री का प्रसार करने वाला होता है। अतः उसका जीवन दूसरों के लिए भी आदरणीय बनता है। किन्तु जो परिग्रह की अमर्यादित आकांक्षाओं में जीता है वह हिंसा से विरत नहीं हो पाता। इसलिए जैन जीवन-पद्धति में परिग्रह की मर्यादा पर भी बल दिया गया है। परिग्रह की मर्यादा तब होगी, जब लोभ का संवरण होगा। लोभ पर संयम तब होगा जब ऐन्द्रियक विषयों के प्रति आकर्षण कम होगा तथा सम्यग्दृष्टि का विकास होगा। जीवन की वास्तविक आवश्यकताएँ सीमित होती हैं, सांसारिक करणीय कार्यों के लिए भी धन के उपयोग की सीमाएँ हैं, किन्तु मनुष्य के मन में जो असीमित आकांक्षाएँ होती हैं, वे ही दुःखदायी होती हैं। जैन-पद्धति हमें आकांक्षाओं को समझने एवं उन पर नियन्त्रण करने की प्रेरणा प्रदान करती है। यह हमें न केवल शान्ति का मार्ग प्रशस्त करती है, अपितु दूसरों के प्रति प्रेम एवं करुणा

का संचार करते हुए सह-अस्तित्व तथा सामंजस्य के वातावरण को भी निर्मित करती है।

लोभ पर जब नियन्त्रण होता है तो जीवन में प्रामाणिकता का पुट अपने आप आ जाता है। व्यापार में प्रामाणिकता के साथ जीवन-व्यवहार में भी प्रामाणिकता का समावेश जैन जीवन-पद्धति का अंग रहा है और आज भी आदर्श श्रावकों में इसका अस्तित्व दृग्गोचर होता है। जहाँ प्रामाणिकता हो वहाँ भ्रष्टाचार का क्या काम?

मृत्यु अवश्यंभावी है, संसार से सम्बन्ध-विच्छेद होना सुनिश्चित है, व्यापार-व्यवसाय से नाता छूटना भी अवश्यम्भावी है। इस सत्य को ध्यान में रखकर जीवन का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए तथा व्यापक चिन्तन के साथ अनेकान्तवाद की दृष्टि को अपनाते हुए जीवन का सम्यक् प्रबन्धन करना चाहिए। अविरति या असंयम में व्यतीत जीवन व्यक्ति को जड़ता, पराधीनता, प्रमाद, हिंसा, कटुता आदि की ओर अग्रसर करता है, जो अशान्ति उत्पन्न करने में निमित्त बनते हैं। जैन जीवन-पद्धति संयम एवं व्रत-नियमों के साथ जीवन जीने की प्रेरणा करती है, जिससे खान-पान पर तो संयम होता ही है अनावश्यक इच्छाएँ भी नियन्त्रित हो जाती हैं।

आहार-संयम पर जैन जीवन-पद्धति में विशेष बल दिया गया है। आज जैन समाज में अधिक आकर्षण आहार का है। पचासों प्रकार के व्यंजन जब विवाह-समारोह में उपलब्ध होते हैं तो लोगों को सुखद प्रतीति होती हैं। आयोजनकर्ता भी इसमें गौरव का अनुभव करता है। भूख हो न हो, स्वाद का रस अति आहार की इच्छा और आदत को जन्म देता है। फिर अनेक प्रकार के रोग व्यक्ति को घेर लेते हैं। सामाजिक रूप से कमजोर परिवारों पर भी इस प्रकार के आयोजनों का विपरीत प्रभाव पड़ता है। रात्रि-भोजन त्याग जैन जीवन-पद्धति की एक विशेषता है, किन्तु इसको आज कितने लोग अपना रहे हैं। इसका पता विवाह-समारोहों में चलता है। जहाँ सूर्यास्त पूर्व भोजन में बहुत कम लोग नजर आते हैं तथा रात्रि में पाण्डाल भरे रहते हैं। दयाव्रत का आराधन करने वाले व्यक्ति भी जब रसलोलुप होते हैं तो उनकी साधना भी पूर्ण हितकारी नहीं होती।

जैन युवा यदि प्रारम्भ से जैन जीवन-पद्धति का अभ्यास प्रारम्भ करें तो

उन्हें यह कहने का अवसर नहीं मिलेगा कि धर्म का आचरण व्यर्थ है। धर्म का आचरण केवल धर्म-स्थलों में ही नहीं होता वह जीवन के प्रत्येक कार्य में रचा-बसा होता है। हम दूसरों को कितना धोखा देते हैं, कितना शोषण करते हैं, कितना अपमान करते हैं, कितना भेदभाव करते हैं, कितनी क्रूरता बरतते हैं, कितने झूठ बोलते हैं, कितनी चोरी करते हैं इत्यादि अनेकविध अपने व्यवहार का जब हम अवलोकन करते हैं तब धर्म का आचरण स्थान लेने लगता है। हमें जब यह अनुभव हो कि हमारा उक्त व्यवहार सही नहीं है, हमें इसे सुधारना है तो स्वतः जो आचरण होगा, वह भी धर्म का ही आचरण होगा। क्योंकि श्रावक के पाँच अणुव्रतों में जीवन को इसी प्रकार संवारा गया है, जिससे जीवन में हिंसा का अल्पीकरण, सत्य का सम्प्रयोग, अदत्तादान का त्याग, मैथुन से विरमण तथा परिग्रह का परिमाण सही रूप में प्रकट होता है। ऐसा जीवन स्वयं के लिए तो संतोष एवं शांति का वाहक होता ही है, किन्तु दूसरे भी ऐसे व्यक्ति को पसन्द करते हैं। जो दूसरों के लिए पीड़ाकारी होता है, बात-बात में झूठ बोलता है, व्यापार-व्यवसाय में प्रामाणिकता नहीं रखता, वासनाओं का गुलाम होता है तथा लोभ पर लगाम नहीं रखता, वह व्यक्ति दूसरों का अहित करने में कभी नहीं हिचकता। हमारे व्यवहार से किसी का अहित न हो, ऐसा भाव जैन जीवन-पद्धति से विकसित होता है।

धर्म दिखावे का न हो, भीतर से हो तो ही उसका लाभ अवश्य अनुभूत होता है। कोई हमारे धर्माचरण की प्रशंसा करें या न करें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, यह तो स्वयं के लिए पुण्य, संवर और निर्जरा का हेतु बनकर दुःखमुक्ति का साधन बनता है। प्रशंसा और प्रतिष्ठा में उलझ कर जो धर्माचरण करने का दंभ करता है वह तो दुःख की सरिता को ही प्रवाहित करता है।

दूसरों के साथ व्यवहार करते हुए हम आग्रह बुद्धि का त्याग करें, दूसरों के विचारों को भी सुनें और समझें, शान्ति के साथ सही तथ्यों के आधार पर निर्णय लें एवं सबका समुचित आदर करते हुए चलें तो जैन जीवन-पद्धति हमारे जीवन का अंग बन सकती है।

सप्त कुव्यसनों का त्याग जैन जीवन-पद्धति की एक अभिन्न विशेषता है। बचपन से ही इसके संस्कार बालक-बालिकाओं को दिए जाते हैं। मद्य, माँस,

शिकार, जुआ, चोरी, परस्त्री-गमन, वेश्या-गमन, इन सात कुव्यसनों से दूर रहकर बालक अनेकविध बुराइयों से बच जाता है। आगे चलकर वह गुरुजनों की सत्संग करता है एवं नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय को जीवन में स्थान देता है तो वह अपने जीवन को सम्यक् सोच के साथ सही दिशा देने में समर्थ होता है।

विश्व में भ्रष्टाचार की समस्या हो अथवा आतंकवाद की, पर्यावरण प्रदूषण की समस्या हो अथवा पारिवारिक विघटन की, आर्थिक मंदी की समस्या हो अथवा जलाभाव एवं भूमण्डलीय ताप की, इन समस्त समस्याओं का समाधान जैन जीवन-पद्धति में निहित है। विश्व-स्तर पर इस वास्तविकता को उजागर करने की आज महती आवश्यकता है। भगवान् महावीर के विचार इस दृष्टि से सर्वत्र प्रसारित किए जाने योग्य हैं। वैर से वैर शान्त नहीं होता, क्षमा या निर्वैरता से ही वैर को शान्त किया जा सकता है। असीमित इच्छाओं को उत्पन्न करने से समृद्धि नहीं आती, अनावश्यक इच्छाओं की अनुपयोगिता समझ में आने पर समृद्धि का अनुभव अपने आप होता है। भोगोपभोग परिमाण व्रत इस बात का संदेश देता है कि हमें अपनी इच्छाओं को सीमित कर लेना चाहिए, इसी में अपना हित है।

तपस्या को जैन जीवन-पद्धति में विशेष स्थान दिया गया है। इससे सहिष्णुता का विकास होता है, अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने का अभ्यास होता है, प्रायश्चित्त आदि आभ्यन्तर तप के आचरण से आत्म-विशुद्धि का अनुभव होता है। विपरीत परिस्थितियों में समभाव की साधना से अपने आवेगों पर नियन्त्रण करने की क्षमता का विकास होता है। रागद्वेषात्मक प्रतिक्रियाओं का उत्पात नहीं होता। किन्तु आज तप का बाहरी रूप अधिक दिखाई देता है। तपस्या का प्रदर्शन और गणना जैन जीवन-पद्धति की असली तस्वीर नहीं है। असली तस्वीर तो आत्म-शोधन में उसकी उपयोगिता से सिद्ध होती है।

जैन जीवन-पद्धति में पुरुषार्थ का महत्त्व है। अपना सुधार अपने हाथ में है, उसके लिए आत्म-निरीक्षण करने की आवश्यकता है। आत्म-मूल्यांकन ही आत्म-सुधार का मार्ग प्रशस्त करता है। अपने दोषों का निकन्दन हम ही कर सकते हैं। स्वाध्याय, सामायिक, प्रतिक्रमण एवं धर्म-साधना के सभी पक्ष इसे ही पुष्ट करते हैं। यह जैन जीवन-पद्धति मानवमात्र के लिए उपादेय है, इस तथ्य को विश्वस्तर पर स्थापित किए जाने की आवश्यकता है।

तत्त्व-चिन्तन

आगम-वाणी

गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा, अप्पव्वइएण व संथुया हविज्जा।
तेसिं इहलोइय-फलट्ठा, जो संथवं न करेइ स भिक्खू ॥10॥
सयणासण-पाण-भोयणं, विविहं खाइम-साइमं परेसिं।
अदए पडिसेहिए नियंठे, जे तत्थ न पउस्सइ स भिक्खू ॥11॥
जं किंचि आहार-पाणं विविहं, खाइम-साइमं परेसिं लद्धुं।
जो तं तिविहेण नाणुकंपे, मण-वय-काय-सुसंवुडे स भिक्खू ॥12॥
आयामगं चेव जवोदगं च, सीयं च सोवीर-जवोदगं च।
नो हीलए पिंडं नीरसं तु, पंतकुलाइं परिव्वए स भिक्खू ॥13॥
सद्दा विविहा भवंति लोए, दिव्वा माणुस्सगा तहा तिरिच्छा।
भीमा भय भेरवा उराला, जो सोच्चा न बहिज्जइ स भिक्खू ॥14॥
वादं विविहं समिच्च लोए, सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा।
पण्णे अभिभूय सव्वदंसी, उवसंते अविहेडए स भिक्खू ॥15॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, भाग-2, अध्ययन 15, गाथा 10-15

दीक्षा लेने से पहले या पीछे, परिचित या देखे हो मतिमान्।
उनका लौकिक फल पाने हित, जो करे न संस्तव वह मुनि जान ॥10॥
शयनासन भोजन पान विविध, खादिम-स्वादिम ना करे प्रदान।
दाता मुनि को प्रतिषेध करे, उन पर न कुपित जो वह मुनि जान ॥11॥
जो अशन पान और खाद्य स्वाद्य, यत्किंचित् गृही से कर आदान।
जो त्रिविध योग आशीष न दे, संवृत योगी है वह मुनि जान ॥12॥
आयामक यव-ओदन काँजी, यव-उदक शीत भोजन लो जान।
नीरस भोजन निन्दा न करे, विचरे लघु कुल में श्रमण महान् ॥13॥
देव मनुज और तिर्यंचों के, विविध शब्द सुनते मतिमान।
भीम भयंकर शब्दों को सुन, डरे नहीं वह श्रमण महान् ॥14॥
वाद-बहुल जग जान साधु सह, संयमी शास्त्र का रखता ज्ञान,
प्राज्ञ सहिष्णु समदर्शी उपशान्त शान्त वह श्रमण महान् ॥15॥

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- उजाला भय मिटाता है और अंधेरा भय फैलाता है। इसी प्रकार ज्ञान से भय मिटता है और अज्ञान से भय बढ़ता है।
- व्रत रखते हुए भी प्रमाद नहीं छोड़ा तो पाप का मूल छूटेगा नहीं।
- जो मूक भावदाता होते हैं, वे चुपचाप शान्त एवं त्यागमय जीवन से, शान्त मुखमुद्रा से, अपनी चर्या से, बिना बोले आगन्तुक व्यक्ति को शान्ति का रस देते हैं।
- पहले-पहल विचार-शुद्धि होनी चाहिए और उसके बाद दूसरे नम्बर पर आचार-शुद्धि होनी चाहिए।
- कर्म को काटना है तो उसका रास्ता है- श्रुतधर्म और चारित्रधर्म को अपनाना।
- श्रुतधर्म से विचारशुद्धि होती है और आचारधर्म से चारित्रशुद्धि।
- वाणी का संयम, तन का संयम, मन का संयम ही हमारी आत्मशुद्धि में सहायक होता है।
- जहाँ भौतिक लाभ होता है, वहाँ संगठन आसानी से हो जाता है, लेकिन धार्मिक संगठन मुश्किल से होता है।
- मिथ्या विचार और मिथ्या आचार बन्ध के हेतु हैं।
- हमारी मनःस्थिति में, राग और द्वेष के रूप में जो चिन्तन चलता है, परिणमन होता है, वह विकार है और वही बन्ध का कारण है।
- जैसे नमक के बिना भोजन अच्छा नहीं लगता है, उसी तरह द्रव्य-दया के साथ भाव-दया भी आवश्यक है।
- आप चाहे तप कीजिये, दया कीजिये, शीलव्रत धारण कीजिये, दान दीजिये, जो कुछ भी कीजिये निष्कपट भाव से, सरल मन से कीजिये। ऐसा नहीं हो कि मन में कुछ और है एवं बाहर कुछ और।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

भीतर के भाव करते हिंसा का माप

तत्त्वचिंतक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

तत्त्वचिंतक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के द्वारा मुम्बई के कल्पतरू गार्डन-कांदिवली में दिनांक 12.09.2008 को फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन जी मेहता द्वारा किया गया है। -सम्पादक

अधिकार-लालसा से अकर्मण्यता पोषित होती है और हिंसात्मक प्रवृत्तियों को जन्म मिलता है। अहिंसा की बात अधिकार-लालसा छूटे बिना अधूरी रहेगी। आप इस गलतफहमी में नहीं रहें कि किसी जीव की हिंसा होने से हिंसा का पाप लगता है। अगर ऐसा होता तो गजसुकुमाल के शरीर से अग्निकाय के जीवों की विराधना हुई, तो उनकी मुक्ति सम्भव नहीं होती। फिर तो जिन साधकों के छः काय के जीवों की विराधना त्रियोग एवं त्रिकरण से न करते हुए भी हो रही है, उनकी मुक्ति संभव ही नहीं हो सकती। समुद्र से, जलाशय से मोक्ष में जाने वालों की बात आगम कहता है। पैंतालीस लाख योजन में ऐसा कोई स्थान खुला नहीं जहाँ से कोई जीव मोक्ष में नहीं गया हो। समुद्र के एक-एक सिरे से आगम की मान्यता के अनुसार जीव मोक्ष गये हैं।

जहाँ अधिकार है, लालसा है वहाँ हिंसा है। छठे गुणस्थान तक हिंसा है। उसके आगे पानी के जीव मर रहे हैं, अग्नि के जीव मर रहे हैं, फिर भी हिंसा का पाप नहीं हो रहा।

मान लो पाँच व्यक्ति एक पंचेन्द्रिय जीव को मार रहे हैं। क्या पाँचों को समान पाप होगा? हाँ, समान भाव हैं तो एक जैसा पाप हो सकता है। अगर भावों में असमानता है तो एक-सा पाप नहीं होगा। भगवती सूत्र में भांगे चलते हैं। एक साथ बंध, एक साथ उदय। अलग-अलग बंध, अलग-अलग उदय। एक साथ बंध अलग उदय। अलग बंध, साथ उदय। सब प्रकार की स्थिति हो सकती है। क्योंकि सबके परिणाम अलग हैं। दो के परिणाम एक हैं तो एक

सरीखा पाप। बाकी के परिणाम अलग तो पाप भी अलग-अलग। एक-दूसरे के परिणामों में अनन्त गुणा अन्तर हो सकता है, कदाचित् समान भी रह सकता है।

हिंसा शरीर से हुई है तो जीव के ऊपर शरीर क्रिया का बोझ उतना आयेगा जितना शरीर के प्रति लगाव है। किसी ने तीर छोड़ा। तीर पक्षी को लगा। मारने वाले को तो क्रिया लगेगी ही, किन्तु वह धनुष जिससे बना है, उसको भी क्रिया लग सकती है। तीर-कमान, लकड़ी, डोरी वे सब वनस्पति के जीवों से है। उन्हें तीन-चार-पाँच क्रिया भी लग सकती है। भगवती सूत्र में एवं पन्नवणा में वर्णन आता है- एक लोहे का जीव रहकर आया, उसकी ममता छूटी नहीं, उस लोहे से किसी ने छुरी बनाली और कसाई उसका उपयोग करता है। ममता नहीं छूटी तो पाप क्रिया है। संथारा कर लिया, पर यदि शरीर की ममता नहीं छूटी तो संथारे के पच्चखाण कर लेने पर भी उसकी शरीर के प्रति क्रिया रहेगी। इसीलिए तो संलेखना के पाठ में 'ति कट्टु' ऐसे शरीर को वोसिरा कर शब्द आये। ममता है तब तक संथारा नहीं। अन्तिम श्वास तक जागृति रखनी पड़ती है। अन्तिम श्वास तक शरीर से परायेपन की अनुभूति है तो ठीक है। शरीर की क्रिया जीव पर तभी बोझ डालती है जब शरीर से सम्बन्ध जुड़ जाता है। शरीर है तो किसी-न-किसी जीव की विराधना होती ही है। तेहरवें-चौदहवें गुणस्थान तक कोई नहीं बच सकता। जबकि पाप छठे गुणस्थान से आगे नहीं होता है।

आत्म-विस्मृति प्रमाद है। शरीर के रहते शरीर की ममता छूटनी चाहिये। शरीर बाद में छूटेगा, ममता पहले छूटेगी इसी का नाम कायोत्सर्ग है। जीव मर रहा है, शरीर में बंधा है, ममता नहीं छूट रही है। वीतराग शासन में सम्यक् दर्शन की सबसे ज्यादा महिमा है। दृष्टि सही हो गई तो सृष्टि सही हो जायेगी। जिसका घर बाद में छूटता है, घर की ममता पहले छूटती है वही सम्यंग् दर्शनी बन सकता है। जो शरीर को अपना मानता है वह पहले गुणस्थान में है। शरीर का सारा बंध सोलह कषाय के साथ में जीव पर आ रहा है। इस हिंसा का पाप श्रावक को लग रहा है।

कोई जीव शरीर को अपना नहीं मानता, किन्तु प्रमादवश अव्रत का त्याग नहीं कर पाता। वासुदेव श्री कृष्ण जैसे व्रत के लिए छटपटाते हैं, श्रेणिक नवकारसी करना चाहता है, पर कर नहीं पाता। दृष्टि सही बन गई तो व्यक्ति शरीर से परायापन महसूस करता है। मिथ्यात्व छूट गया, अनन्तानुबंधी छूट गया, बाकी के कषाय ढीले पड़ रहे हैं उसको हिंसा का पाप कम लगता है।

काया से सबका पाप लग रहा है। क्रिया की प्रतिक्रिया अलग है। एक बुढिया इतनी रोने लगी कि पूछो मत। उससे पूछा, क्या हो गया, तो बोली मेरे से घोर अनर्थ हो गया। एक बार पानी भर रही थी, बुढ़ापे में ध्यान नहीं रहा बर्तन में कीड़ियाँ ही कीड़ियाँ थी। वे लाल कीड़ियाँ दिखाई नहीं दी। पानी भरने से बहुत सारी कीड़ियाँ मारी गई। उसकी मारने की अभिलाषा नहीं थी। सैकड़ों कीड़ियाँ मर गई। एक कीड़ी मारने से भी ज्यादा पाप लग सकता है। बुढ़िया की आसक्ति नहीं थी, इसलिए पश्चात्ताप की अग्नि में वह पाप जल रहा था। इससे उसका बहुत सारा पाप धुल गया, साफ हो गया। यह छटपटाहट लगती है तब पाप हल्का हो सकता है। यहाँ बैठे पच्चीस सौ लोग हो सकते हैं जिनके भीतर में वीतराग वाणी का पानी पहुँचा है, उनकी बाहर की क्रिया में अन्तर होगा, भीतर की प्रतिक्रिया में अन्तर होगा। जिनकी आत्मा अन्तर में रोई है वह पाप से दूर हटता है। गलती हुई उस समय नादानी हुई। हरी सब्जी काटनी पड़ती है, गैस जलाना पड़ता है, पर चाव से नहीं, मजबूरी है इसलिए गैस जलाना पड़ रहा है। कांचरा छीलने वाले की खाल नहीं उतारी जा सकती। काचरा छीलकर अपने अभिमान का पोषण कर लिया तो वह भयंकर पाप है। रसोई के बाद प्रशंसा की भावना सुनने पर पाप ज्यादा है। लोग मेरी तारीफ करें। रसोई बनाने में उतना खतरा नहीं है जितनी प्रशंसा सुनने में है। बेटे की शादी है, बेटी की शादी है, पाँच सितारा होटलों में जितना खतरा नहीं उससे ज्यादा अपने-आपको ऊँचा दिखाने की भावना में रहा हुआ है। हिंसा का सम्बन्ध बाहर की क्रिया से जितना नहीं भीतर की वृत्ति से एवं संकल्प से अधिक है। घर के काम करते हुए आरम्भ या हिंसा से बचा नहीं जा सकता। कमाई करते हुए औद्योगिकी हिंसा होगी ही। विरोधी को मारना पड़ सकता है। विरोधी को मारने वाला आराधक हो सकता

है।

भीतर को संभालना मुश्किल है। इसका मतलब यह नहीं कि मैं बाहर की हिंसा का अनुमोदन करता हूँ। हिंसा की मेरी कोई अनुमोदना नहीं है वह चाहे बाहर की है या भीतर की। बाहर की हिंसा भी हिंसा है, पर भीतर की हिंसा से बचने पर ज्यादा जोर है।

सम्यक् दर्शन पूर्वक बारह व्रत जरूरी हैं। लोग खाना-पूर्ति के लिए धर्म चलाते हैं। साधक की अहं वृत्ति ज्यों की त्यों सुरक्षित है तो वह खाना पूर्ति का धर्म है। ऐसा धर्म तो अभवी जीव भी कर सकता है, अभवी भी क्रिया पाल सकता है, वह नौवें ग्रेवेयक की यात्रा करके आ जाता है।

जब तक मिथ्यात्व और अनन्तानुबंधी नहीं छूटते तब तक साधना नहीं होगी। यह सीधा बेरोमीटर है। मेरा त्याग कैसा, यह दिखाने का भाव आध्यात्मिकता में बड़ी रुकावट है। साफ कपड़ा हो या मैला कपड़ा अपने आपको दिखाने का भाव साधक की साधना में बाधक है। दुनियाँ मेरे को ज्ञानवान समझे, क्रियावान समझे, तपस्वी समझे, बस इस कारण भीतर में दोष है। ऊपर से भले ही वह लेप लगा रहा है, भीतर में मिथ्यात्व है, अनन्तानुबंधी है। ऊपर से चाहे सामायिक करता है, चाहे साधुपना पालता है वह लेप लगाने जैसा ही है। भीतर के गुण अलग हैं बाहर के अलग। मैंने इतना दान तो दे दिया, मैं बीस साल से सामायिक कर रहा हूँ, मुझे पचास साल हो गये सामायिक करते। मैं रोज चौदह नियम चितारता हूँ इतने साल हो गये, मैं संवर-पौषध करता हूँ। सामायिक अलग है, आप अलग। पौषध अलग है, आप अलग। मैं कहता हूँ तो विभाव में जा रहे हैं? तेबीस घंटे उनसठ मिनट उनसठ सैकण्ड तक विभाव में रहे। एक सैकण्ड भी विभाव में जाने पर जीव को डर लगना चाहिये।

अन्य सारे व्रत यावत् जीवन होते हैं। शिक्षाव्रत अल्प काल के हो सकते हैं। 23 घंटे 59 मिनट 59 सैकण्ड के लिए नहीं, चौबीस घंटे के लिए होते हैं। श्रावक ने कोई व्रत एक साल तक लिया है तो लगातार साल भर के लिए है, एक घंटा भी बीच में छूट नहीं है।

एक व्यक्ति जा रहा है। उसके पैर से कोई जीव मर गया। उसने आकुट्टी से हनने की बुद्धि से हनने के पच्चक्खाण ले रखे हैं, जीव के साथ अपनेपन की भावना है, पर मर गया। ऐसा हो सकता है। मैं अपने लिए कहूँ। 1989 का चौमासा ब्यावर में था। पंडित रत्न श्री शुभेन्द्र मुनि जी आगे-आगे, मैं पीछे चल रहा था। सीढ़ियाँ उतरते कोई चिड़ी का बच्चा मर गया। मैं पीछे-पीछे सीढ़ियाँ उतर रहा हूँ वह बच्चा कब आया, कैसे आया एक परसेंट मारने की भावना नहीं, पर वह एक क्षण में पैर के नीचे आ गया। पैर से मरा या मरा हुआ आया, पर मारने की कोई भावना नहीं थी। किन्तु व्यवहार शुद्धि के लिए प्रायश्चित्त करना पड़ा। पचोले का प्रायश्चित्त पीपाड़ में करके शुद्धीकरण किया गया।

आज भ्रूण हत्याएँ होती हैं। यह भी पंचेन्द्रिय की हत्या है। इस हत्या के लिए पति-पत्नी दोनों को प्रायश्चित्त होगा। जीव मरा है तो प्रायश्चित्त। आत्मा की पूरी जागृति रहे। शरीर से अलग महसूस कर रहा है तो अप्रमत्तता है। जो आत्मभाव में लीन है उसको पाप नहीं है। असाता वेदनीय का पाप छठे गुणस्थान तक, प्रमाद का पाप छठे गुणस्थान तक है। अशुभ योग भी छठे गुणस्थान तक है। शरीर के साथ जितना चिपकाव है उतना हिंसा का संबंध है। सम्मान-प्राप्ति की अपेक्षा में भी हिंसा है। प्रमत्त योग से सारे प्राणी मेरे समान हैं। मैं जड़ के सहयोग से ऊपर दिखना चाहता हूँ। मेरे पास सत्ता है, मेरे पास पद है, मेरे पास कार है, बंगला है, मेरे पास अधिकार है ये जितनी लालसाएँ हैं इनसे हिंसात्मक प्रवृत्तियों को जन्म मिलता है।

हमें अहिंसा की भावना को देखना है। भीतर से "अभिहया, वत्तिया, लेसिया" की जागृति हो जाती है तो कदम-कदम पर वह डरता है। घर के नौकर भी उसे कौटुम्बिक पुरुष नजर आते हैं। एक बाई के आज बारह की तपश्चर्या के पच्चखाण हैं। इनके घर में उड़ीसा का एक नौकर काम करता है। हिन्दी नहीं आती। उड़िया में लिखकर नवकार मंत्र याद करा दिया। वह मासूम बच्चा विवशता से आया है, पर आप उसे कौटुम्बिक पुरुष मान कर उसे आगे बढ़ा सकते हैं।

प्रवचन

सम्यक् प्रयत्न में समर्थ बनें*

साध्वी प्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.

उपस्थित धर्म प्रेमी बन्धुओं! विश्ववन्द्य श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने संसारस्थ प्राणियों पर अनन्त-अनन्त उपकार करके दो प्रकार का धर्म बताया-एक अगार धर्म और दूसरा अणगार धर्म। धर्म-साधना करने वाले मानव अंगुलियों पर गिनने लायक हैं। मैंने कई व्यक्तियों से सुना यहाँ एक समर्थ नगर बसा है। मन में उत्कण्ठा जगी। पूज्य श्री समर्थमल जी म.सा. के दर्शन तो कई बार किये, पर समर्थनगर नहीं देखा था। भाई सुरेश जी कांकरिया और गोलेच्छा साहब आदि की प्रबल भावना कर फरसने का अवसर आया। समर्थमलजी म.सा. ने आत्म-साधना में अपना सामर्थ्य एवं शक्ति फोड़ी, अतः आप भक्तों ने अपने नगर का नाम समर्थ नगर रख दिया। समर्थनगर को प्राप्त करके आप धर्म में अपना सामर्थ्य और शक्ति लगाने की पूरी कोशिश और चेष्टाएँ करें।

ज्ञानगच्छ एवं रत्नसंघ का परस्पर प्रेम पुराना है। वि.स. 2012 की समाप्ति और 2013 के प्रारम्भ में भीनासर सम्मेलन में पधारते हुए श्रमण संघ के आग्रह एवं पूज्य हस्तीमल जी म.सा. के आग्रह से समर्थमल जी म.सा. भीनासर पधारे।

समर्थमलजी म.सा. सरलता की विभूति थे। ऐसा अनुभव मैंने कई बार किया है। जैसे-एक बार पाली सुराणा मार्केट में बहुश्रुत जी म.सा. और पण्डित लक्ष्मीचंद जी म.सा. साथ विराजे थे। एक दिन मैं नहीं गई तो बहुश्रुत जी म.सा. ने पूछा- "आज मैनासुन्दरी क्यों नहीं आई?" पण्डित जी म.सा. ने कहा- "आज मेड़ता में बड़ी सती हरकंवर जी म.सा. का स्वर्गवास हो गया।" यह सुनते ही बहुश्रुत जी म.सा. संवेदना प्रकट करने के लिए दोपहर की गर्मी में पधारे। कुल मिलाकर वे अनेक गुणों से युक्त थे और धर्म के मामले में उन्होंने अपनी सामर्थ्य लगाई।

* 23 नवम्बर, 2008 को समर्थनगर, जोधपुर में प्रदत्त प्रवचन से सुश्री कांता पींचा द्वारा संकलित

सही है जितने भी महापुरुष होते हैं वे अपनी कठोर साधना में ही शक्ति यानी सामर्थ्य लगाते हैं। जैसे आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का जीवन भी देख सकते हैं। वे कितने सजग सावधान एवं अप्रमत थे।

लोग आज भी अपनी ताकत धन कमाने, परिवार बढ़ाने, जमीन ज्यादाद की तरक्की करने में लगाते हैं। एक घर में दो बहिने हैं। एक बहिन प्रातःकाल झाडू-बुहारी लेकर प्रांगण की सफाई करके कूड़े-कचरे को एक कोने में इकट्ठा करती है। इतने में ही दूसरी बहन वहाँ जाकर कूड़े-कचरे को घर के प्रागंण में बिखेर देती है। मेहनत तो दोनों ने की, पर आप एक बहिन के प्रयत्न को सम्यक् कहेंगे और दूसरी बहन के प्रयत्न को मिथ्या कहेंगें। इसी प्रकार आप संसार के प्राणी चार प्रकार के पुरुषार्थों में अर्थ और काम पुरुषार्थ के पीछे घोड़े की तरह दौड़कर और मशीनों की तरह चलकर मिथ्या पुरुषार्थ करते हैं। अब मेरा आग्रह है, आप धर्म पुरुषार्थ में लगकर अनन्त शक्ति को अगार और अणगार धर्म में लगाकर मोक्ष पुरुषार्थ को सफल करें। तभी इस समर्थ नगर में रहने की सहज उपलब्धि मोक्ष रूप में मिलेगी।

धर्म देशना की नदी

श्री आर. जी. मिश्रा

(आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुम्बई चातुर्मास के समय लिखित)

सजा हुआ सम व सरण, प्रमुदित संत समाज।
'कल्पतरु उद्यान' भी, धन्य हो रहा आज।।
धर्म-देशना की नदी, बहती है दिन-रात।
आत्म-शुद्धि में लीन हैं, श्रावक-मुनि सब साथ।।
गुरु हस्ती की हस्तियाँ, रहीं जगत पर छाय।
जिनशासन प्रभावना, करतीं लगन लगाय।।
हीरा श्री हीरा-हृदय, दृगन दया के नीर।
उत्तम तप स्वाध्याय रत, कंचन-कांत शरीर।।
मुनि प्रमोद की विज्ञता, गुरुवर गिरा गंभीर।
शील-धर्म सदुपदेश के, प्रेरक-प्रबल-प्रवीर।।

-द्वारा श्री पी.एस. सुराणा, 224, एन.एस.सी. बोस रोड, चेन्नई

चिन्तन

दर्शन - एक चिन्तन

उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी शास्त्री (उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी म. सा के शिष्य)

यह समग्र संसार अनादि है, अनन्त है। इसमें संयोगजन्य और वियोगजन्य सुख-दुःख की अविराम धारा प्रवहमान है। इसमें अवगाहन करते हुए जब प्राणी थक जाता है तब वह शाश्वत आनन्द की शोध-यात्रा पर निकलता है। यहाँ जो भी हेय है और उपादेय है, वह उसकी गहराई से मीमांसा करता है। परिणामस्वरूप वही 'दर्शन' बन जाता है। 'दर्शन' का अभिप्राय 'तत्त्व' का साक्षात्कार है अथवा उसकी उपलब्धि है। तत्त्वों में भी मूलभूत जो तत्त्व है, वह 'आत्मा' है। जो आत्मा को यथार्थ रूपेण जान लेता है, वह सब को जान लेता है। अस्तित्व की दृष्टि से सर्व-तत्त्व समान हैं, किन्तु मूल्य की दृष्टि से 'आत्मा' नामक तत्त्व सर्वाधिक मूल्यवान तत्त्व है। मूल्य का निर्णय आत्मा पर आधृत है, अन्य किसी भी तत्त्व पर नहीं।

पदार्थ का अस्तित्व स्वयंजात होता है, किन्तु उसका मूल्य चेतना से सम्बद्ध हुए बिना कदापि नहीं होता है। उदाहरण के रूप में 'दुग्ध धवल' है। इसके लिए चेतना से सम्बन्ध स्थापित होना आवश्यक नहीं है, अनिवार्य भी नहीं है, किन्तु 'उपयोगी' है। यह मूल्य विषयक निर्णय चेतना से सम्बन्ध स्थापित हुए बिना नहीं हो पाता है। निष्कर्ष यह है कि दुग्ध उपयोगी है -यह मूल्यांकन पर आधारित है। आत्मा द्वारा अज्ञात वस्तुवृत्त अस्तित्व के जगत में रहते हैं। उनका अस्तित्व विषयक निर्णय एवं मूल्य विषयक निर्णय - ये दोनों आत्मा द्वारा परिज्ञात होने पर होते हैं। पदार्थ का अस्तित्व है। इसमें चेतना की कोई अपेक्षा नहीं है, किन्तु पदार्थ जब भी ज्ञेय बनता है तब चेतना के माध्यम से उसके अस्तित्व का यथार्थतः निर्णय होता है। यह चेतना के साथ पदार्थ के सम्बन्ध की प्रथम कोटि है। द्वितीय कोटि में उसका यथार्थ रूपेण मूल्यांकन होता है तब वह पदार्थ परिहेय अथवा उपादेय बनता है। उक्त विवेचना के प्रकाश में यह अतिस्पष्ट हो जाता है कि दर्शन के प्रमुख सत्कार्य दो हैं- प्रथम वस्तुवृत्त विषयक निर्णय है और द्वितीय मूल्य विषयक निर्णय है। ज्ञेय, हेय एवं उपादेय - प्रस्तुत

त्रिपुटी से इसी तत्त्व का स्पष्टरीत्या निर्देशन प्राप्त होता है। यही तत्त्व 'ज्ञपरिज्ञा' एवं 'प्रत्याख्यान परिज्ञा' इस बुद्धिद्वय से उपलब्ध होता है।

इसी सन्दर्भ में यह तथ्य ज्ञातव्य है कि जो ज्ञान यथार्थ है, निर्दोषता लिये हुए है, अथवा पूर्णतः सम्यक् है, वह प्रमाण है। ज्ञान एवं प्रमाण इन दोनों का व्याप्य-व्यापक भाव सम्बन्ध है। प्रमाण व्याप्य है, ज्ञान व्यापक है। ज्ञान यथार्थ भी है और अयथार्थ भी होता है। जो ज्ञान वस्तुतः सम्यक् निर्णायक है, वह यथार्थ होता है और जो ज्ञान संशय, विपर्यय आदि से संयुक्त है, वह ज्ञान अयथार्थ है। प्रमाण यथार्थ ज्ञान ही होता है। पदार्थ का संशय आदि से सर्वथा-रहित जो निश्चित ज्ञान होता है, वह वास्तव में प्रमाण है। वह प्रमाणभूत कहलाता है। वस्तुवृत्त के निर्णय में वही ज्ञान सर्वथा रूपेण सक्षम होता है। ज्ञेय, हेय और उपादेय का परिबोध उसी का प्रतिफल है। पदार्थ मात्र ज्ञेय है। अस्तित्व के दृष्टिकोण से ज्ञेयमात्र सत्य है। सत्य का जो मूल्य है वह सैद्धान्तिक होता है और यह आत्मानुभूति से अतीत नहीं है। आत्मिक विकास शिव है, यह आध्यात्मिक मूल्य है। पौद्गलिक जो साज-सज्जा है, वह सौन्दर्य है। यह व्यावहारिक मूल्य है। यदि व्यापक दृष्टि से चिन्तन किया जाय तो स्पष्टतः विदित होगा कि मानव की जितनी अपेक्षाएँ होती हैं, उतनी ही मूल्यांकन की दृष्टियाँ हैं। निश्चय नय की अपेक्षा से न कोई वस्तु अभीष्ट है और न कोई अनिष्ट ही है। निष्कर्ष की भाषा में यह कथन यथार्थपूर्ण है कि सौन्दर्य की संकल्पना दृश्यमान पदार्थ में की जाती है। वह वर्ण, गंध, रस और स्पर्श के चतुष्टय से सम्पन्न होता है। वर्ण, गन्ध प्रभृति चतुष्टय किसी में शुभ परिणमनशील होता है और किसी में अशुभ परिणमनशील है। एतदर्थ सौन्दर्य-असौन्दर्य, प्रियता-अप्रियता, हेयता-उपादेयता आदि के निर्णय में पदार्थ की योग्यता निमित्तभूत बनती है। पदार्थ के जो भी शुभ परमाणु हैं अथवा अशुभ परमाणु हैं, वे मन को प्रभावित करते हैं। जिस मानव के शारीरिक एवं मानसिक परमाणुओं के साथ पदार्थगत परमाणुओं का साम्य होता है, वह मानव उस पदार्थ के प्रति आकर्षित अवश्य हो जाता है। जब व्यक्ति और वस्तु में वैषम्य है, तब आकर्षण नहीं होता। यह साम्य एवं वैषम्य देश, काल तथा परिस्थिति प्रभृति के समवाय पर निर्भर है। एक देश, काल और परिस्थिति में जिस व्यक्ति के लिये जो पदार्थ हेय रूप होता है वही अन्य देश, काल और

परिस्थिति में अतिशय उपादेय बन जाता है। यह व्यावहारिक दृष्टिकोण है। परमार्थ दृष्टि की अपनी मौलिक विशेषता यह है कि आत्मा ही सर्वथा एवं सर्वदा सुन्दर है। वह प्रतिपल - प्रतिक्षण उपादेय है। आत्मतत्त्व के व्यतिरिक्त समग्र पदार्थ परिहेय ही हैं। अपनी आत्मा का जो निश्चय है वही वास्तव में दर्शन है। उसी को 'दर्शन' कहना यथार्थ है।

यह ध्रुव सत्य है कि मूल्य के प्रत्येक निर्णय में आत्मा की सन्तुष्टि एवं असन्तुष्टि अन्तर्निहित अवश्य होती है। अशुद्ध-अवस्था में आत्मा का सन्तोष अथवा असन्तोष भी शुद्ध नहीं होता है। इसलिये यह तथ्य स्पष्ट है कि उक्त दशा में होने वाला जो भी मूल्यांकन है, वह नितान्त बौद्धिक होता है एवं व्यावहारिकता लिये हुए होता है। वह शिवत्व के अनुकूल नहीं होता है। शिवत्व के प्रमुख-साधन विविध हैं, और वे हैं- सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र। यह श्रद्धा, ज्ञान और चारित्र की त्रिवेणी ही शिवत्व के सर्वथा अनुकूल है। दर्शन आत्मा का निश्चय है, बोध आत्मा का ज्ञान है और चारित्र आत्मा में स्थिति है, रमण है। इसी को आध्यात्मिक रत्नत्रयी कहा जाता है। इसी के आधार पर यह तथ्य परिस्पष्ट हो जाता है कि आस्रव हेय की कोटि के अन्तर्भूत है और संवर सर्वथा रूपेण उपादेय है। हेय और उपादेय की जो भी अनुभूति है, वह दर्शन है। अगम्य को गम्य बनाने वाली विचार प्रणाली भी 'दर्शन' है। इतना ही नहीं, दर्शन की प्रणाली युक्ति पर आधारित है। दर्शन तत्त्व के गुणों से सम्बन्ध रखता है। एतदर्थ दर्शन तत्त्व-विज्ञान है। यह कथन करना सर्वथा उचित है कि युक्ति विचार का विज्ञान है। तत्त्व के सन्दर्भ में चिन्तन करने के लिये युक्ति अथवा तर्क का आधार नितान्त अपेक्षित होता है। जीवन की बौद्धिक - मीमांसा भी 'दर्शन' है और जीवन की आलोचना भी 'दर्शन' है। इनमें पूर्णता निहित नहीं है। किन्तु अपूर्णता में भी सत्यांश अवश्य है और पूर्णता में सत्य, शत-प्रतिशत रूप से संनिहित है। वास्तव में दर्शन के क्षेत्र में तार्किक-प्रणाली का अपना महत्त्व रहा है, मूल्य भी अतिशय रूप में रहा है।

इसी परिप्रेक्ष्य में यह तथ्य सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है कि आस्तिक-दर्शन की मूलभूत भित्ति 'आत्मवाद' रही है। "मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? कहाँ जाऊँगा? इस सप्राण-जिज्ञासा से दर्शन का जन्म होता है। धर्म और दर्शन इन

दोनों का प्रधान- आधार 'आत्मा' ही है। यदि आत्मतत्त्व है, तब दर्शन है। जब आत्मा ही नहीं है तब दर्शन भी नहीं है। यहीं से आत्मतत्त्व आस्तिकों का आत्मवाद बन जाता है। वाद की स्थापना के लिये दर्शन का विस्तार होता है और उसकी सत्यता के लिये धर्म का विस्तृत रूप प्रगट हो जाता है। वास्तव में धर्म की आत्मा में प्रविष्ट आत्मवाद अध्यात्मवाद बन जाता है। आत्मा ही दर्शनीय है, श्रवणीय है और मननीय है। तत्त्व भी यही है कि 'दर्शन' का प्रारम्भ आत्मा से होता है और उसका अन्त 'मोक्ष' में हो जाता है। सत्य का बोध, उसका 'शरीर' है और सत्य का आचरण उसका जीवत्व है। धर्ममूलक जो दर्शन का विचार है, वह चतुर्विध प्रश्नों पर चलता है। उन प्रश्नों का संक्षेप में स्वरूप-वर्णन इस प्रकार है-

1. बन्ध :- आत्मा और कर्म का संयोग एवं कर्म का निर्मापण अर्थात् व्यवस्था करण। बन्ध की अपेक्षा आत्मा और कर्मपुद्गल कथंचित् अभिन्न हैं, एकमेक हैं। लक्षण की अपेक्षा से वे भिन्न-भिन्न हैं। आत्मा चेतन है, कर्मपुद्गल अचेतन है। आत्मा अमूर्त है, जबकि कर्म-परमाणु मूर्त हैं।

2. बन्ध-हेतु :- कर्म-सम्बन्ध के अनुकूल आत्मा की परिणति अथवा योग्यता ही बन्ध का मूल-हेतु है। क्रियात्मक - शक्ति-जनित परिकम्पन के माध्यम से आत्मा और कर्म-परमाणुओं का संयोग होता है। इस प्रक्रिया को आस्रव कहा जाता है। वास्तव में कर्म बन्ध का मूल-हेतु 'आस्रव' है।

3. मोक्ष :- आत्मा की शुद्धतम-पर्याय 'मोक्ष' है। स्वयं का स्वयं के द्वारा स्व-स्वरूप स्थिति में स्थित होना, अपने स्वभाव में परिणमन करना, कार्मिक-बन्धनों से सर्वथा रूपेण मुक्त होना 'मोक्ष' है। बन्धन-विमुक्ति की उत्कट-जिज्ञासा उत्पन्न होने पर जीव साधक बनता है और साध्य 'मोक्ष' होता है। आस्रव का कर्म-संग्राहक रूप मोक्ष का बाधक ही है।

4. मोक्ष-हेतु :- मोक्ष के साधक तत्त्व दो हैं - प्रथम 'संवर' है और द्वितीय निर्जरा है। संवर वस्तुतः बन्ध-निरोध है। संवर आस्रव का प्रतिपक्ष है। आस्रव का संवर होता है। निर्जरा का आशय 'कर्मक्षय' है और उससे होने वाली आत्म-स्वरूप की संप्राप्ति है। निर्जरा बन्ध का प्रतिपक्ष है। बन्ध की निर्जरा होती है। उससे आत्मा का परिमित रूप से स्वरूपोदय होता है। पूर्णतः संवर एवं पूर्णतः

निर्जरा होने पर ही आत्मा का पूर्णोदय होता है, मोक्ष होता है। आत्म-विकास की जो पूर्ण दशा है उसी का नाम 'मोक्ष' है।

यह एक ज्ञेय तथ्य है कि दर्शन का विचार जहाँ से प्रारम्भ होता है और जहाँ अवरुद्ध होता है, उसके परिपार्श्व में वहीं 'बन्ध' और 'मोक्ष' आता है। मोक्ष-दर्शन के विचार-चिन्तन की यही मर्यादा रेखा है और जो भी विचार होता है वह इनके परिवार के रूप में होता है। दो प्रकार की प्रज्ञा है प्रथम 'ज्ञ' है एवं द्वितीय 'प्रत्याख्यान' परिज्ञा है। अर्थात् जानना है तदनन्तर छोड़ना है। जितने भी पदार्थ हैं वे सभी ज्ञेय हैं। आत्म-तत्त्व के साथ जो विजातीय-सम्बन्ध है, वह हेय है, त्याज्य है। उपादेय एवं हेय से भिन्न कुछ भी नहीं है। आत्मा का अपना रूप सत्, चित् एवं आनन्दमय है। जब तक हेय नहीं छूटता है तब तक वह छोड़ने-लेने की उलझन में फंसा रहता है। हेय छूटते ही यह अपने रूप में आ जाता है। तदनन्तर बहिर्जगत् से न कुछ लेता है और न कुछ प्राप्त करने की उसको अपेक्षा होती है। यह पौद्गलिक शरीर छूट जाता है। शरीर के जो भी धर्म हैं, वे भी छूट जाते हैं। शरीर के प्रमुख धर्म चतुर्विध हैं- आहार, श्वास-उच्छ्वास, वाणी, और चिन्तन। ये रहते हैं तब तक संसार का चक्र गतिशील रहता है। बहिर्जगत् में विचारों और सम्पर्कों का सम्बन्ध जुड़ा रहता है।

यह प्रश्न है कि 'दर्शन' का चरम और परम ध्येय क्या है? प्रस्तुत प्रश्न का उचित उत्तर यही है कि आध्यात्मिक अनुभव। आध्यात्मिक अनुभव का अभिप्राय यह नहीं है कि स्वतन्त्र आत्मा का एकत्व में मिल जाना, किन्तु अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व का अनुभव करना है। यह ध्रुव सत्य है कि प्रत्येक आत्मा की स्वतन्त्र रूप से सत्ता है और प्रत्येक आत्मा अनन्त शक्ति-सम्पन्न है। आत्मा और परमात्मा ये सर्वथा रूपेण भिन्न-भिन्न सत्तात्मक तत्त्व नहीं हैं। अशुद्ध-अवस्था में जो आत्मा होती है वही शुद्ध दशा में परमात्मा बन जाती है। अशुद्ध अवस्था में आत्मा के ज्ञान एवं शक्ति जो आवृत्त और विकृत होते हैं, वे पूर्ण दशा में विकसित हो जाते हैं, शुद्ध-दशा में पूर्णतः प्रगट हो जाते हैं। मुक्त-दशा में आत्मा का किसी अन्य-शक्ति में विलय नहीं होता है। वह किसी अन्य सत्ता का अवयव अथवा भिन्न-भिन्न अवयवों का संघात नहीं होता है। वह स्वयं स्वतन्त्र सत्ता है। उसके प्रत्येक अवयव परस्पर अनुविद्ध हैं। एतदर्थ वह स्वयं अखण्ड है। उसका

सहज स्वरूप प्रगट होता है, यही मुक्ति है। मुक्त-जीवों की विकास की अवस्था में अणुमात्र भी विभेद नहीं होता है, किन्तु उनकी सत्ता स्वतन्त्र होती है। सत्ता का स्वातन्त्र्य मोक्ष-प्राप्ति में बाधक रूप नहीं होता है। अविकास अथवा स्वरूपावरण वास्तव में उपाधिजन्य होता है। इसलिये कर्म-उपाधि मिटते ही वह मिट जाता है। सर्व मुक्त आत्माओं का विकास एवं स्वरूप भी समकोटिक होता है। आत्मा की जो पृथक्-पृथक् सत्ता है, स्वतन्त्र रूपेण अस्तित्व है वह उपाधिकृत नहीं है, सहज ही है। इसलिये किसी भी स्थिति में उनकी स्वतन्त्रता पर कोई आंच नहीं आती है।

मुक्त-दशा में आत्मा समस्त वैभाविक-आधेयों तथा औपाधिक विशेषताओं से आत्यन्तिक विरहित हो जाती है। मुक्त होने पर पुनरावर्तन नहीं होता है। उस पुनरावर्तन का हेतु 'कर्मचक्र' ही है। उसके रहते मुक्ति नहीं होती है। कर्म का निर्मूल- विनाश होने पर, उसका बन्ध नहीं होता है। कर्म का लेप सकर्म से होता है। अकर्म कर्म से कदापि लिप्त नहीं होता है। निष्कर्ष यही है कि कर्म का घनत्व मिटते ही आत्मा सहज गति से ऊर्ध्व लोकान्त तक चली जाती है। जब तक कर्म का घनत्व होता है तब तक लोक का घनत्व उस पर आधिपत्य संस्थापित करता है। ज्योंही कर्म का घनत्व मिटता है आत्मा निर्भार हो जाती है। ऐसी स्थिति में लोक का घनत्व उसकी ऊर्ध्वगति में बाधक रूप नहीं बन पाता है। जो मुक्तजीव हैं, वे अशरीरी होते हैं। गति शरीर-सापेक्ष होती है, इसलिये वे गतिशील नहीं होते।

अग्नि की शिखा स्वभाव-सिद्ध लाघव के कारण ऊपर की ओर जाती है। इसी प्रकार अकर्म जीव की ऊर्ध्वगति के चार प्रमुख कारण हैं- पूर्व प्रयोग, असंगता, बन्ध-विच्छेद और तथाविध-स्वभाव। वास्तव में कर्म-मुक्त आत्माएँ अनन्त हैं और वे आकार एवं प्रकार से सर्वथा रहित हैं। एतदर्थ उन्हें देखा नहीं जा सकता और जब वह स्वरूप संप्राप्त हो जाता है तब उसे निहारने की अभिलाषा भी नहीं रहती। क्योंकि परमात्मत्व अर्थात् ईश्वरत्व आत्मा में संनिहित है, अतः कार्मिक-बन्धन टूटते ही आत्मीय-स्वरूप प्रगट हो जाता है। उन्हें सत्-चित् और आनन्द कहा जाता है। कर्म-मुक्त आत्माओं के स्वरूप में पूर्णतः समता होती है।

सारपूर्ण भाषा में यही कहा जा सकता है कि दर्शन आत्मिक-विशुद्धि और तात्त्विक-व्यवस्था के लिये है, आत्मवंचना अथवा अन्य को जाल में फंसाने के लिये नहीं है। इसलिये दर्शन के माध्यम से सत्य का अन्वेषण होना चाहिये। वास्तव में दर्शन का मुख्य रूप तत्त्व-दर्शन एवं मोक्ष-दर्शन रहा है, इसलिये उसने विराट् विश्व की विशद रुपेण व्याख्या की है तथा मोक्ष के साधक एवं बाधक तत्त्वों की मीमांसा की है। हमारा जीवन-व्यवहार धर्म से शासित होता है। धर्म का स्वरूप आचार है। उसे दिशा-दर्शन 'दर्शन' से प्राप्त होता है। यथार्थ अर्थ में दर्शन सत्य की दिशा का उद्घाटक है। वह सर्वथा रूपेण नवीन एवं सर्वदा मौलिक आयाम है।

अभी मंजिल है बाकी

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

गुरु ने राह दिखाई, अभी चलना है बाकी।
राही तुम भूल न जाना, अभी मंजिल है बाकी..........।।टेर ।।
मधुर व्यवहार हो अपना, मधुरता हो वचन में,
टूटे ना दिल किसी का, बसे वो प्रेम मन में।
क्षमा का पाठ पढ़ा है, अभी सहना है बाकी.............।।1 ।।
नहीं दें दोष किसी को, यदि विपदा भी आए,
किये जो कर्म मैंने, उदय वो आज आए।
खेल कर्मों का समझें, अभी बचना है बाकी............।।2 ।।
जन्म-जन्मों से भटके, आत्म-हित को न समझा,
मार्ग सच्चा भुलाकर, रहा पर में ही उलझा।
आज सद्बोध मिला है, सफल होना है बाकी..........।।3 ।।
जहाँ ना जन्म मृत्यु, जहाँ ना कष्ट क्रंदन,
चलो उस पार चेतन, जहाँ ना कर्म बंधन।
प्रभु 'गौतम' से कहते, अभी तिरना है बाकी...........।।4 ।।

-नयना गोलेछा, बालोतरा द्वारा व्याख्यान से संकलित

गीत

आचार्य श्री हीराचन्द्र महिमा गान

श्री सम्पतराज चौधरी, दिल्ली

(लय- धरती धोरां री)

हीरा गुरुवर प्यारा प्यारा, बाणी बरसे इमरत धारा।
सुणने कटे करम री कारा, महिमा हीरा री ।।
ओ ओ महिमा.......

देखत श्रद्धा रो संचार, गुरुवर थां पर है एतबार।
सुणलौ अब म्हांरा उद्‌गार, बोली हिरदा री ।।
ओ ओ महिमा.......

'मोती' 'मोहनी' रा जाया, छोड़ी जग री सारी माया।
थां नै संजम मारग भाया, जन्मया अवतारी ।।
ओ ओ महिमा.......

'हस्ती' चरणा रा हा चाकर, जिणसुं लिया ज्ञान रा आखर।
शोभित तीजा पद रा ठाकर, सौरभ हस्ती री।।
ओ ओ महिमा.......

गुरुवर सत्य धरम रा खोजी, थां तो वीर प्रभु रा फौजी।
रमता आतम में मन मौजी, उत्तम अणगारी ।।
ओ ओ महिमा.......

उजला संत-सती है सागै, जिणमें उपाध्याय जी आगे।
ज्यांरा दरसण सूं दुःख भागै, रासी रतनां री ।।
ओ ओ महिमा.......

थां रो उत्तम है आचार, उण में ढील नहीं स्वीकार।
थां रो संयम ही सिणगार, सूरत शूरां री ।।
ओ ओ महिमा.......

थांरी आगम री ओळखाण, लागै घणा ग्यान री खाण ।
ओटो देय'र करो बखाण, गुरुवर श्रुतधारी ।।
ओ ओ महिमा.......

थां सो संत पुरुष है मुसकिल, था री मुगति री है मंजिल ।
दीखै वीतराग री झिलमिल, आभा चंदा री ।।
ओ ओ महिमा.......

थां तो व्यसन मुक्ति रा दूत, थां रो असर हुवै अदभूत ।
भागै एबां रा सब भूत, गुरुवर हितकारी ।।
ओ ओ महिमा.......

थां तो साहस री सैनाणी, झोलौ खावै समता पाणी ।
सुण ने उद्‌बुध वै हर प्राणी, बरखा आनन्द री ।।
ओ ओ महिमा.......

थां रो नाम लियां बल जागै, मन री खोटाई सब भागै ।
सगला गौरव गाथा गावै, पोथी बीरां री ।।
ओ ओ महिमा.......

थां तो रतन संघ आधार, म्हारे हिवड़ै रा थें हार ।
दरसण मुगति रा है द्वार, ऊँचा पदधारी ।।
ओ ओ महिमा.......

म्हांने सुपथ दिखावो नाथ, माथै धर कर अपणौ हाथ ।
लेय'र संत-सती ने साथ, गुरुवर महत्तारी।।
ओ ओ महिमा.......

थां तो इमरत रा हो झरणा, म्हांने थांरो ही है सरणा ।
कर दो भगतां पर थें करुणा, बोलै नर-नारी ।।
ओ ओ महिमा.......

म्हें तो अटक्यां हां मझधार, गुरुवर अपणौ विरद विचार ।
मोड़ो अब म्हांरी पतवार, गुरुवर पतवारी ।।
ओ ओ महिमा.......

थां तो तारण-तीरण जहाज, म्हांरी सुणलो अब आवाज ।
भव सूं पार उतारो राज, विनती सारां री ।।
ओ ओ महिमा.......

करणी आज बणी साकार, इणने कोड्यां में मत हार ।
मनवा सतगुरु तारणहार, प्रगट्या सुखकारी ।।
ओ ओ महिमा.......

म्हारे आंगणियै पधार, करदो संयम री बौछार ।
मानो म्हांरी थें मनवा, आओ जसधारी ।।
ओ ओ महिमा.......

माणस मन्दिर में बैठावां, थांने निसदिन म्हें तो ध्यावां ।
दीया भगति रा जलावां, ज्योति सरधारी ।।
ओ ओ महिमा.......

जदस्यूं म्हारे हिवड़ै आया, म्हांरा चमक्या भाग सवाया ।
थें तो दीसौ नहीं पराया, जाऊँ बलिहारी ।।
ओ ओ महिमा.......

थां तो 'हस्ती' री हो आस, थां में गुरवां रो है वास ।
उणरी आज्ञा थां रे सांस, प्रण में नरनारी ।।
ओ ओ महिमा.......

थां तो घणा गुणा रा सागर, गुरुवर भरदो म्हांरी गागर ।
चरणन सीस नवाऊँ सादर, भगती हीरा री ।।
ओ ओ महिमा.......

किरपा 'मान मुनि' री म्हां पर, 'गौतम' परसादी इण उपर ।
'आनन्द' जोड़ बणाई गाकर, गाथा हीरा री ।।
ओ ओ महिमा.......

तत्त्वबोध

द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव

श्री चिरंजीव अनेकान्त

सत्य अनन्त है। उसका एक दृष्टिकोण से प्रतिपादन नहीं किया जा सकता। केवली भगवान् अनन्त सत्य को जान लेते हैं, किन्तु वे भी उसका प्रतिपादन एक साथ नहीं कर सकते। पदार्थ और उसके पर्याय अनन्त हैं उसके द्वारा प्रतिपादित सत्य की कुछेक पर्यायों को पूर्ण सत्य मानकर अवशिष्ट पर्यायों को अस्वीकार करना सत्य की सीमा से बाहर जाना है। अनेकान्त कहता है- सत्य को एक दृष्टि से मत देखो। सत्य को अस्तित्व की दृष्टि से देखते हो तो साथ-साथ नास्तित्व की दृष्टि से भी देखो।

वस्तुबोध की चार दृष्टियाँ- वस्तु को जानने के अनेक कोण, अनेक अपेक्षाएँ होती हैं। तत्त्वार्थ सूत्र (1/7-8) में वस्तुविज्ञान के चौदह कोण-मार्गणाएँ प्रतिपादित हैं- निर्देश, स्वामित्व, साधन, अधिकरण, स्थिति, विधान, सत्संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव और अल्पबहुत्व। अनुयोगद्वार सूत्र (121) में वस्तु बोध के नौ प्रकार प्रज्ञप्त हैं- सद्प्ररूपणा, द्रव्यप्रमाण, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाषा, भाव और अल्पबहुत्व।

भगवान् महावीर द्वारा प्रतिपादित निरूपण की मुख्य चार दृष्टियाँ हैं- द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव। इनको जाने बिना वस्तु स्वरूप का सम्यक् बोध नहीं हो सकता। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार भी क्षेत्र (Space) और काल (Time) इन दो आयामों के बिना वस्तु की व्याख्या नहीं की जा सकती। भगवान् महावीर के अनुसार विज्ञान सम्मत क्षेत्र व काल के साथ-साथ द्रव्य (Substance) और भाव (Mode) भी वस्तु की व्याख्या के लिए अनिवार्य हैं। हमारे सारे निर्णय द्रव्य-सापेक्ष, काल-सापेक्ष, क्षेत्र-सापेक्ष तथा भाव-सापेक्ष होते हैं।

द्रव्य- भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में परिवर्तित होते हुए भी जिसका मौलिक स्वरूप एवं क्षमता क्षीण नहीं होती, वह द्रव्य है। दार्शनिक परिभाषा में द्रव्य वही है जिसके गुण और पर्याय हों। अद्रुवत्, द्रवति, द्रोष्यति तांस्तान् पर्यायान् इति

द्रव्यम् - जो भिन्न-भिन्न अवस्थाओं को प्राप्त हुआ, हो रहा है और होगा वह द्रव्य है। अस्तित्व का निर्णय द्रव्य सापेक्ष ही होता है न कि भाव सापेक्ष। चेतन-अचेतन एक-दूसरे के अस्तित्व में हस्तक्षेप नहीं कर सकते। क्योंकि आत्मा एवं परमाणु का स्वतन्त्र अस्तित्व है। यही द्रव्य सापेक्ष निर्णय है। प्रत्येक द्रव्य में दो प्रकार के धर्म रहते हैं- एक सहभावी धर्म (गुण) जो द्रव्य में नित्य रूप से रहता है दूसरा क्रमभावी धर्म (पर्याय) जो परिवर्तनशील रहता है।

क्षेत्र- विवक्षित पदार्थ के क्षेत्र का निरूपण करना भी आवश्यक है। क्षेत्र आकाश का द्योतक है। आकाश के दो प्रकार हैं- लोकाकाश और अलोकाकाश। जैन दर्शन के अनुसार लोक और अलोक का विभाजन नैसर्गिक है, अनादिकालीन है। वह किसी भी ईश्वरीय सत्ता द्वारा कृत नहीं है। महान् वैज्ञानिक अलबर्ट आइन्स्टाइन की आकाशविषयक अवधारणा भी इसी प्रकार की है। क्षेत्र सापेक्ष निर्णय स्वतंत्र एवं परतन्त्र दोनों हो सकते हैं। एक परमाणु अमुक काल तक इस क्षेत्र में रहेगा यह उस परमाणु की स्वतंत्रता है। अमुक काल के बाद वह इस क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में चला जाएगा-यह उसकी परतन्त्रता है।

काल- श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार काल दो प्रकार का है- नैश्चयिक काल और व्यवहार काल। नैश्चयिक काल का सम्बन्ध प्रत्येक अस्तित्व के साथ है, व्यावहारिक काल का सम्बन्ध सूर्य की गति के साथ है (भगवती सूत्र 2/122-123)। दिगम्बर मान्यता में काल अणु रूप है (द्रव्यसंग्रह-22)। वैदिक दर्शनों में भी काल के सम्बन्ध में व्यावहारिक एवं नैश्चयिक दोनों रूप मिलते हैं। न्याय, वैशेषिक दर्शन में काल को सर्वव्यापी एवं स्वतंत्र द्रव्य माना गया है (न्यायकारिकावली-45 तथा वैशेषिक दर्शन-2/2/6-10) योग, सांख्य आदि दर्शन काल को स्वतंत्र द्रव्य नहीं मानते (सांख्यतत्त्वकौमुदी-33)। काल सापेक्ष निर्णय से ही व्यवहार में उलझनें पैदा नहीं होती। पुरुषार्थी अगर असफल रहे तो उसे निराश होने की बजाय अनेकान्त को समझना चाहिये। पुरुषार्थ वर्तमान पर्याय है। उसकी असफलता में बाधक तत्त्व है- अव्यक्त पर्याय, सूक्ष्म पर्याय, अतीत का पर्याय। अतीत को छोड़कर वर्तमान की व्याख्या नहीं की जा सकती। वर्तमान काल विपाक काल होता है। वर्तमान है परिणाम का काल। संरचना व निर्माण काल जो अतीत से प्रभावित होता है और भविष्य को

प्रभावित करता है। अतः अतीत और भविष्य के बीच की कड़ी है वर्तमान। वर्तमान सापेक्ष निर्णय काल सापेक्ष होते हैं।

बौद्धों के महान् आचार्य धर्मकीर्ति ने स्याद्वाद के सिद्धान्त का मखौल उड़ाते हुए कहा- "स्याद्वाद निर्णय तक नहीं पहुँचता।" वह कहता है- यह भी हो सकता है वह भी हो सकता है। अस्तित्व भी हो सकता है नास्तित्व भी हो सकता है। तब हम क्यों नहीं मानें कि "दही ऊँट हो सकता है और ऊँट दही हो सकता है?" समाधान की भाषा में यदि चिन्तन किया जाए तो पदार्थ सर्वथा परतन्त्र नहीं है। तब स्वतन्त्र अस्तित्व वाले पदार्थ दही को ऊँट व इसी प्रकार ऊँट को दही होने से कौन रोक सकता है? आचार्य धर्मकीर्ति ने इस चिन्तन की जरूरत ही नहीं समझी कि आज जिन परमाणुओं ने दही की रचना की है वे ही परमाणु काल के अन्तराल में परिवर्तित होकर ऊँट के शरीर की रचना कर सकते हैं। आज जो परमाणु ऊँट से शरीर की संरचना कर रहे हैं वे परमाणु भी बदल कर दही के रूप में परिवर्तित हो सकते हैं। निष्कर्ष यह है कि काल निरपेक्ष निर्णय कभी भी सत्य को स्पर्श नहीं कर सकते हैं।

भाव– विवक्षित पदार्थ में औदयिक, उपशम, क्षायिक, क्षायोपशमिक अथवा पारिणामिक भावों (पर्यायों)का कथन करना इसके अन्तर्गत आता है। द्रव्य की पर्याय को भी भाव कहा जाता है। किसी जीव का पर्याय परिवर्तन भी भाव है।

इस प्रकार भावों का चक्र चलता रहता है। इस अपेक्षा से प्रत्येक द्रव्य का स्वभाव स्वपर्याय होता है।

जिस प्रश्न को गौतम बुद्ध ने अव्याकृत कहकर छोड़ दिया उसे भगवान् महावीर ने द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव इन चार दृष्टियों के द्वारा समाहित कर स्कन्दक परिव्राजक की जिज्ञासा को शान्त किया। भगवती (सूत्र 2/44-45) में वर्णित स्कन्दक एवं भगवान् की चर्चा का सार यह है कि भगवान् कहते हैं- "से तं खंदगा! दव्वओ लोए सअंते, खेत्तओ लोए सअंते, कालओ लोए अणंते, भावओ लोए अणंते।" हे स्कन्दक! द्रव्यतः लोक एक व सान्त है। क्षेत्रतः लोक असंख्येय कोटाकोटि योजन परिधि वाला प्रज्ञप्त है और सान्त है। कालतः वह अनंत है तथा भावतः भी अनन्त है। इसी प्रकार की जिज्ञासा जीव के सम्बन्ध में शान्त करते हुए भगवान् ने स्कन्दक से कहा–द्रव्यतः जीव एक व

सान्त है। क्षेत्रतः जीव असंख्य प्रदेशी है, सान्त है। कालतः जीव अनन्त है तथा भावतः जीव में अनंत ज्ञान पर्यव, अनंत दर्शन पर्यव, अनंत चरित्र पर्यव, अनंत गुरुलघु एवं अनंत अगुरुलघु पर्यव हैं।

उपर्युक्त समस्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव का सिद्धान्त सापेक्षता का सिद्धान्त है। सापेक्षता के बिना किसी भी अस्तित्व का प्रतिपादन नहीं किया जा सकता। जो निर्णय इन चार दृष्टियों के आधार पर नहीं बदलता वह निर्णय नहीं अनिर्णय होता है। इसलिए भगवान् महावीर ने कहा- तुम कोई भी निर्णय द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और भव से निरपेक्ष होकर मत करो।

-224, एन एस सी बोस रोड, चेन्नई

प्रार्थना

जिनेन्द्र कुमार जैन

(तर्ज :-जो भगवती त्रिशला तनय)

जो मोहिनी मोती तनय, और गाँधी कुल के भान हैं।
जनमें शहर पीपाड़ में, गुरु हीरा प्रियवर नाम है।। टेर।।
दीक्षा भी ली पीपाड़ में, गुरु गज कृपा दिया ज्ञान है।
तन मन से की सेवा सरल, वैयावृत्त्य गुण से महान है।।1।।
गुरु इच्छा से जोधाणा में, नायक बने संघ प्राण है।
आज्ञा पले गुरु की सदा, रत्नसंघ की पहचान है।।2।।
गंभीरता सम वीर सी, भानु सा तेज प्रताप है।
समभाव वसुधा सा भरा, प्रिय इष्ट मनोज्ञ कान्त है।।3।।
सौम्य लगे चेहरा सदा, शांति सदा निज ध्यान है।
ज्ञानी प्रबल आनन्द रम, हो व्यसन मुक्ति ठान है।।4।।
करणी करे भारी सदा, व्रत-नियम में चट्टान है।
गुरु हीरा मेरे सिंह से, उपदेश शैली महान् है।।5।।
विपदाओं में हरदम सदा, प्रमुदित हो समता पाम है।
इन पूज्य हीरा गणीश को, मेरे अनेक प्रणाम है।
आचार्य पूज्य गुरुदेव को, मेरे अनेक प्रणाम है।।6।।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

प्रासंगिक

अहिंसा-दिवस : परम्परा, उद्देश्य और महत्त्व

डॉ. दिलीप धींग

वर्ष 2008 की शुरुआत मेरे लिए अहिंसा के उपहार के रूप में हुई थी। अहिंसा के कुछ उल्लेखनीय कार्यों के विवरण जिनवाणी ने प्रकाशित करके मुझे प्रोत्साहित किया। जिनवाणी के प्रबुद्ध पाठकों ने भी मुझे धन्यवाद भेजे और बधाइयाँ दीं। इन कार्यों के अन्तर्गत तेबीसवें तीर्थंकर भगवान् पार्श्वनाथ के जन्म कल्याणक पर देश के सबसे बड़े प्रदेश राजस्थान में अहिंसा दिवस की घोषणा से मुझे विशेष प्रसन्नता हुई।

घोषित अहिंसा दिवसों के समुचित अनुपालन के लिए सम्बन्धित अधिकारियों से चिट्ठी-पत्री करना, ज्ञापन/विज्ञप्ति देना आदि कार्य समाज के सहयोग से मैं वर्षों से कर रहा हूँ। यदि हम निष्ठापूर्वक उचित समय पर उचित तरीके से कार्य करते हैं तो उसका सुफल भी मिलता है। कभी-कभी मेहनत करते हुए भी सफलता नहीं मिलती है या आधी-अधूरी मिलती है तो भी कार्य करने वालों को निराश नहीं होना चाहिये; अपितु अधिक उत्साह से अच्छे कार्य जारी रखने चाहिये। इसके अलावा असफल कार्य भी बड़े अनुभव दे सकते हैं। अहिंसा और सेवा के क्षेत्र में कार्य करने वालों को अध्ययनशील, स्थिरचित्त, सहिष्णु और लक्ष्य के प्रति समर्पित रहना होता है।

अहिंसा के कार्य करते समय भी लोग कई तरह के सवाल खड़े कर देते हैं, जिनके तर्कसंगत समाधान भी करने होते हैं। कई बार तो हमारे अपने ही व्यक्ति हतोत्साहित करने वाली बातें कह देते हैं और कई बार जिन व्यक्तियों से हम कोई विशेष उम्मीद नहीं रख रहे होते हैं, उनसे अप्रत्याशित सहयोग मिल जाता है। अहिंसा दिवस के अनुपालन और किसी तिथि/ पर्व को अहिंसा दिवस के रूप में मनाने के लिए मेरे प्रयासों पर भी जिज्ञासुओं ने कुछ प्रश्न उठाए हैं। एक व्यक्ति ने पूछा कि महज़ एक दिन या कुछ दिन पशु-पक्षी वध और

बूचड़खानों के संचालन पर प्रतिबंध लग जाने से क्या फर्क पड़ जाता है। अहिंसा दिवस (अमारि, अगता या अक्ता) के सम्बन्ध में तीन बिन्दु मननीय हैं-

- हिंसा को स्थगित करना भी अहिंसा है।
- हिंसा की मांग व पूर्ति को प्रतिबंधित करना भी अहिंसा है।
- हिंसा का अल्पीकरण भी अहिंसा है।

अहिंसा दिवस के पालन से हिंसा एक या कुछ दिनों के लिए स्थगित की जाती है। इससे अहिंसा के प्रति एक वातावरण जन-जीवन में बनता है। दूसरा अहिंसा दिवस के माध्यम से सीधे तौर पर हिंसा की आपूर्ति पर प्रतिबंध लगाया जाता है। अहिंसा दिवस का सही रूप से प्रचार हो और सामिषभोजी व्यक्तियों या समुदायों में यह चेतना जागृत की जाए कि अमुक दिन पर उन्हें मांस आदि का वर्जन करना है तो हिंसा की मांग थोड़े समय के लिए अवरुद्ध हो जाएगी। मांग और पूर्ति अन्योन्याश्रित हैं। अर्थशास्त्र के अनेक नियम तथा वस्तुओं के दाम मांग और पूर्ति के सिद्धान्त के अनुसार तय होते हैं। हम सामान्य तौर पर देखते हैं कि जब जलापूर्ति या बिजली वितरण में कटौती की जाती है तो उनका उपभोग कम हो जाता है। इसे इस प्रकार भी कह सकते हैं कि जल या बिजली की बचत के लिए उनके वितरण में कटौती की जाती है। इसी प्रकार राज्य की ओर से जितने अंशों में या जिस किसी रूप में हिंसा में कटौती की जाती है या हिंसा पर अंकुश लगाया जाता है, उतने ही अंशों में अहिंसा को राज्याश्रय मिलता है। अहिंसा को राज्याश्रय मौजूदा समय की सबसे बड़ी जरूरत है।

लोग एक और प्रश्न उठाते हैं कि अगते घोषित तो हो जाते हैं, लेकिन उनका पालन ठीक ढंग से नहीं होता है। राजकीय आदेश पहली बात है, वह कानूनन बाध्यकारी होता है। सरकारी आदेश के सही अनुपालन के लिए शासन, प्रशासन और जनता - सबकी जिम्मेदारी बनती है। जब अन्य नियमों के प्रति समाज, सरकार, मीडिया आदि पर्याप्त चौकन्ने रहते हैं तो अहिंसा दिवस के पालन में ढिलाई कतई उचित नहीं है। जागरूक व्यक्तियों द्वारा अहिंसा दिवस के सही अनुपालन के लिए समाज में माहौल बनाया जाना चाहिये।

अहिंसा दिवस के अनुपालन में जैन समाज ने हमेशा पहल की है। लेकिन इस कार्य को सिर्फ जैन समाज के धरातल पर करने की बजाय अन्य सभी समाजों या उनके प्रतिनिधियों के साथ मिलकर करना चाहिये। अहिंसा सबकी है और सबके लिए है। वह जोड़ती है। अहिंसा की आराधना में पंथ, जाति, वर्ग आदि भेदों की उपेक्षा की जानी चाहिये। अहिंसा दिवस के समुचित अनुपालन के लिए निम्न प्रयासों के अच्छे परिणाम मिल सकते हैं –

- समस्त अहिंसक एवं शाकाहारी समाज अहिंसा दिवस के पालन के प्रति प्रतिबद्धता दर्शाएँ।
- सामिषभोजी व्यक्तियों को चाहिये कि वे अहिंसा दिवस पर मांस क्रय करके गैर-कानूनी कार्य नहीं करें।
- वध-व्यवसाय से जुड़े व्यक्तियों को उनके व्यवसाय से जुड़े कानूनी नियमों के पालन का दायित्व समझना/ समझाना चाहिये।
- मीडिया, प्रशासन व स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से तथा अन्य उचित तरीकों से सम्बन्धित व्यक्तियों को कानून के अनुपालन के लिए प्रेरित करना चाहिये।
- शासन एवं प्रशासन को उनके कानूनी फर्ज को निभाने की याद दिलानी चाहिये और चूक करने पर मीडिया आदि के माध्यम से उनका ध्यान आकृष्ट करना चाहिये।
- अहिंसा, शाकाहार और प्राणी रक्षा के पक्ष में प्रचुर तथ्य और सामग्री उपलब्ध है। अहिंसा दिवस के अनुपालन के लिए ऐसे तथ्य समाज, प्रशासन और आम आदमी तक पहुँचाए जाने चाहिये।

कार्यकर्ताओं के समक्ष बहुत सारे तथ्य और परिस्थितियाँ होती हैं। हमारे प्रयासों से जितने अंशों में अगता का पालन होता है, उतने अंशों में हिंसा का अल्पीकरण मानते हुए आगे और अधिक प्रयास करने चाहिये।

जैन ग्रन्थों में अहिंसा दिवस के समर्थन में अनेक सूत्र, सन्दर्भ व प्रसंग मिलते हैं। अहिंसा दिवस के माध्यम से जीवों का वध रुकता या टलता है तो वह

भी अहिंसा का एक रूप ही है। मगध सम्राट् श्रेणिक को जब उनके नरकगामी होने का पता चलता है तो नरक से बचने के लिए वे विविध उपाय करते हैं। तीर्थंकर महावीर द्वारा एक उपाय उन्हें यह सुझाया गया कि यदि वे कालशौकरिक कसाई से पशु वध बंद करवा दे तो उनकी नरक टल सकती है। जीव हिंसा रुकवाने के महान् फल के पक्ष में ही आगम ग्रन्थों में अभयदान (जीवनदान) को सर्वोत्तम दान कहा गया है। अभयदान की यह परम्परा आगम युग से आज तक चली आ रही है।

इस परम्परा में जैनाचार्यों, सन्तों और अहिंसानिष्ठ व्यक्तियों ने अपनी-अपनी सामर्थ्य और प्रभाव से हर कालखण्ड में अमारि की तरह-तरह की घोषणाएँ करवाईं। हेमचन्द्राचार्य के उपदेश से गुर्जर राज्य के महाराजा कुमारपाल ने उनके अधीनस्थ सभी 18 प्रदेशों में निरन्तर 14 वर्षों तक अमारि की घोषणा का पूर्णतः प्रभावपूर्ण ढंग से पालन करवाकर अगणित मूक पशु-पक्षियों को अभयदान प्रदान किया।[1] शान्ति, सुरक्षा, समृद्धि और सर्वांगीण विकास की दृष्टि से कुमारपाल का शासनकाल भारतीय इतिहास का स्वर्णकाल था। अहिंसा के अनुपालन से समग्र और स्थायी उन्नति का यह अमर उदाहरण है। सम्राट् अशोक द्वारा की गई अहिंसा की उद्घोषणाएँ आज भी शिलालेखों में विद्यमान हैं। आचार्य हीरविजय सूरीश्वर की प्रेरणा से सम्राट् अकबर ने पर्युषण तथा कई भारतीय पर्व उत्सवों पर अहिंसा दिवस के अनेक फरमान जारी करके उनका पालन करवाया था। उनकी प्रेरणा से अकबर ने स्वयं मांसाहार का पूर्ण त्याग कर दिया था।

14 मार्च 2008 को सर्वोच्च न्यायालय ने जब यह निर्णय सुनाया कि जैन धर्मावलम्बियों की धार्मिक भावना का आदर करते हुए पर्युषण के दौरान नौ दिन तक कत्लखाने बन्द रखे जाने चाहिये, तब उस निर्णय में सम्राट् अकबर का भी हवाला दिया गया था।[2] इस क्रम में जैन समाज की मांग पर वर्ष 2008 में राजस्थान में श्वेताम्बर और दिगम्बर समाज के 18 दिवसीय पर्युषण में से 9 दिनों (31 अगस्त, 1,2,3,4,7,10,14, और 16 सितम्बर 2008) के लिए

पशु वधगृह और मांस मछली की दुकानें बन्द रखने का आदेश दिया गया।[3]

जैन दिवाकर मुनि चौथमलजी का जीवन प्राणियों के अवध और जीवों की अहिंसा के लिए समर्पित था। तत्कालीन रियासतों और ठिकानों की ओर से उनकी प्रेरणा से हुए अहिंसा के आदेशों में कई तथ्य मिलते हैं[4]–

- उनसे पूर्व भी शासन की ओर से कई अहिंसा दिवस घोषित थे। दिवाकर जी की प्रेरणा से शासकों ने विद्यमान अगता के प्रभावी पालन का संकल्प व्यक्त किया और कुछ नये अगता की घोषणा और अहिंसा के संकल्प किये।
- एक साथ कई दिनों, सप्ताहों, पखवाड़ों और महीनों तक अहिंसा दिवस चलते थे। जैसे कई रियासतों या ठिकानों की ओर से जन्माष्टमी से लगाकर अनन्त चतुर्दशी (22 दिनों) तक तथा सम्पूर्ण श्राद्ध पक्ष में बूचड़खाने बन्द रहते थे तो कई स्थानों पर पूरे श्रावण और भादवा, कहीं श्रावण, भादवा, कार्तिक और वैशाख तो कहीं निरन्तर चार महीने चौमासे के अहिंसा दिवस के रूप में उल्लेखित हैं। कुछ जगहों पर अन्य दिनों के अलावा माह की दोनों एकादशी तथा पूर्णिमा व अमावस्या को भी स्थायी अगते घोषित थे। कुछ राजाओं की ओर से अधिक मास होने की स्थिति में पूरा अधि मास अहिंसा दिवस के रूप में घोषित था।
- स्टेट काउंसिल जोधपुर में अगता कमेटी भी बनी हुई थी, जो अगता की घोषणा और उनके सही अनुपालन के लिए कार्य करती थी।
- अहिंसा दिवस के अन्तर्गत मुख्यतः बूचड़खाने और मांस-मछली की दुकानें बन्द रहती थीं। जलाशयों में मत्स्याखेट और जंगलों में शिकार भी प्रतिबंधित रहता था। कई आदेशों में शराब की दुकानें बन्द रखने और मदिरा-निर्माण की भट्टियों पर प्रतिबंध का भी उल्लेख है।

स्पष्ट है कि भारतीय धर्मों में पर्व तिथियों पर अगता पलवाने की प्राचीन परम्परा रही है। जैन धर्म और समाज ने इस परम्परा को आगे बढ़ाने में अहम् भूमिका निभाई है। फलस्वरूप जैनेतर समुदायों के द्वारा भी एवं जैनेतर

पर्व-तिथियों पर भी समय-समय पर अहिंसा दिवसों की घोषणा और उनका अनुपालन किया और करवाया जाता है। राजस्थान में प्रतिवर्ष उन्नीस दिनों के लिए स्थायी अगते घोषित हैं।[5] उनमें महावीर जयन्ती और आचार्य देवेन्द्र पुण्य तिथि का सीधा सम्बन्ध जैन धर्म से हैं। संवत्सरी के अगते भी गणेश चतुर्थी, ऋषि पंचमी और अनन्त चतुर्दशी के नाम से घोषित हैं। अन्य अहिंसा दिवसों के अन्तर्गत गणतंत्र दिवस, शहीद दिवस, महाशिवरात्रि, अग्रसेन जयन्ती, रामनवमी व ज्योतिराव जयन्ती, अंबेडकर जयन्ती, बुद्ध पूर्णिमा, स्वतन्त्रता दिवस, जन्माष्टमी, गांधी जयन्ती, पेड़ा ग्यारस, रूप चौदस, दीपावली और कार्तिक पूर्णिमा है। राजस्थान उच्च न्यायालय और श्रम विभाग के आदेश के अनुसार प्रत्येक शुक्रवार को भी अगता घोषित है। गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, गांधी जयन्ती और अन्य कुछ विशेष अवसरों पर राज्य की ओर से मद्य-निषेध भी लागू रहता है।

जैन धर्म ने अहिंसा में इतनी गहरी आस्था व्यक्त की, कि अहिंसा की उपासना को किसी भी नाम और निमित्त से स्वीकार कर लिया। इन अहिंसा दिवसों का प्रचार-प्रसार भी मुख्यतः जैन समाज की पत्र पत्रिकाओं में ही होता है। वस्तुतः सभी पर्व दिवस हमारे सबके हैं। अहिंसा दिवस की दृष्टि से उनका प्रचार सर्वत्र होना चाहिये। इससे अहिंसा दिवस के अनुपालन में सबकी सहभागिता भी जुड़ जाएगी। राजस्थान की अहिंसा दिवस की सूची देखने से पता चलता है कि अहिंसा भारत की आत्मा है। इसमें बिना किसी भेदभाव के लगभग सभी प्रमुख राष्ट्रीय, सांस्कृतिक और धार्मिक पर्वों पर अगता पलवाने की शुभ परम्परा को कायम रखने का प्रयत्न किया गया है।

अन्य राज्यों में भी स्थायी या अस्थायी अहिंसा दिवस घोषित हैं, लेकिन उनका पर्याप्त प्रचार नहीं देखा गया। अहिंसा के लिए कार्य करने वालों को अहिंसा दिवसों के समुचित अनुपालन तथा नवीन अहिंसा दिवसों की राजकीय घोषणा के लिए प्रयास करना चाहिये। वांछित परिणाम और व्यापक सफलता के लिए सभी समुदाय के व्यक्तियों को मिलकर कार्य करना चाहिये।

आज संसार अनेक समस्याओं और संकटों से घिरा हुआ है। यदि सभी समस्याओं को एक ही शब्द में कहना पड़े तो वह है- हिंसा। और यदि एक ही शब्द में कोई समाधान है तो वह है- अहिंसा। अहिंसा का प्रकृति और पर्यावरण पर भी अनुकूल प्रभाव होता है। इस सम्बन्ध में अहिंसा दिवस के महत्त्व को प्रतिपादित करने वाली एक घटना मुझे प्रेरक लगी।' वि.स. 1948 (1927 ई.) में जैन दिवाकर चौथमलजी का वर्षावास जोधपुर (राज.) में था। बारिश नहीं होने की वजह से तत्कालीन जोधपुर स्टेट के प्रधानमंत्री की ओर से एक दिन भक्ति दिवस के रूप में मनाने के लिए अनुरोध किया गया। मुनि चौथमलजी ने भी यह उद्घोषणा सुनी तो एक श्रावक के माध्यम से अधिकारी से कहलवाया कि जब तक कसाईखानों में हिंसा चालू है, मूक प्राणियों की गर्दन पर छुरे चलते रहेंगे तब तक कोरी भक्ति या प्रार्थना से कुछ नहीं हो सकता। सुकाल के लिए कत्लखानों को बन्द करवाना होगा। दिवाकर जी के सुझाव पर भक्ति दिवस को अहिंसा दिवस या अहिंसामय भक्ति दिवस के रूप में मनाने की घोषणा हुई। वध और वधगृहों का संचालन पूर्णतः बन्द रहा। इसे अहिंसा का सुप्रभाव ही कहना चाहिये कि दूसरे ही दिन हुई जोरदार वर्षा से अकाल का अंधेरा, सुकाल के सवेरे में बदल गया। वध निषेध और बूचड़खानों के संचालन पर प्रतिबंध को लेकर वर्तमान में अनेक नये आयाम जुड़े और जुड़ रहे हैं। कत्लखानों के विरुद्ध आवाज उठ रही है।

शान्ति के लिए अहिंसा दिवस की भारतीय परम्परा का महत्त्व संयुक्त राष्ट्र ने भी समझा और वर्ष 2007 से अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी के जन्म दिन 2 अक्टूबर को प्रतिवर्ष 'विश्व अहिंसा दिवस' के रूप में घोषित किया। लेकिन अहिंसा दिवस के स्वरूप को दुनिया के समक्ष सही और व्यापक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करना अभी शेष है। यह तो सब कहते हैं कि दुनिया, मानव और मानवता को बचाने के लिए अहिंसा ही एक मात्र रास्ता है। किन्तु दुनियावालों को यह समझना चाहिये कि निरीह पशु-पक्षियों की हत्या रोके

बिना, शाकाहार अपनाए बिना अहिंसा की बात अधूरी रहती है। आचार्य हस्ती के शब्दों में 'हिंसा के संस्कारों को मानव मस्तिष्क से तभी दूर किया जा सकता है, जब मनुष्य और मनुष्येतर सभी प्राणियों की हिंसा को पाप समझा जाए और उसके उन्मूलन के लिए प्रयास किया जाए।'[7] अहिंसा दिवस की परम्परा को आगे बढ़ाना समय की मांग है और आवश्यकता भी।

- अध्यक्ष, अहिंसा विचार मंच, 53, डोरे नगर, उदयपुर-02 (राज.)

सन्दर्भ :-

1. जैन धर्म का मौलिक इतिहास, आचार्य हस्तीमलजी महाराज, चतुर्थ भाग, पृष्ठ 343
2. जिनवाणी, अप्रेल 2008, पृष्ठ 99-100
3. राजस्थान पत्रिका, उदयपुर, 31 अगस्त 2008, मुखपृष्ठ
4. देखें- उपाध्याय मुनि प्यारचन्द जी लिखित पुस्तक 'आदर्श उपकार'
5. स्रोत- जशकरण डागा, मंत्री, जीवदया मण्डल, टोंक (राज.)
6. जैन दिवाकर : संस्मरणों के आइने में, प्रवर्तक रमेशमुनि, पृष्ठ 33-34
7. गजेन्द्र सूक्ति सुधा, पृष्ठ 3

मान्यता

डॉ. रमेश मयंक

यदि-मन में सद्विचार हैं,
सुमार्ग के संस्कार हैं
सद्भावना पूर्ण व्यवहार है
तो मानो- धन - सम्पदा अपार है
और - यदि मन में
कुविचार हैं
कुमार्ग पर गमन की तेज रफ्तार है
पग-पग पर दुर्व्यसन स्वीकार हैं
पर निंदा, पर हानि से प्यार है
तो मानें-निकृष्ट निर्धन लाचार हैं।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

तत्त्वज्ञान

उपांगों में पुण्य तत्त्व(5)

(प्रज्ञापना सूत्र में पुण्य-2)

सुश्री नेहा चोरड़िया, जलगाँव

एकेन्द्रिय में आत्मोन्मुखता के अनायास भाव आते हैं, तो एकेन्द्रिय काय-पुण्य के द्वारा आगे-आगे साधन सामग्री जुटाता जाता है। तेजस्काय, वायुकाय से निरन्तर विशेष-विशेष हिंसा की संभावना रहती है। उसका पुण्य बढ़ नहीं पाता, अतः वह सम्यक्त्व के योग्य साधन नहीं जुटा पाता और इसलिये वह अगले भव में भी सम्यग्दृष्टि नहीं बन पाता।

स्पष्टतः पुण्य तत्त्व की उपादेयता है। आत्मभाव सदा शान्ति प्रदाता ही है। आत्मभाव की प्रधानता से पुद्गल की प्रवृत्ति अहितकारी नहीं बनती, अपितु वह जीव को पवित्र करती ही है।

पुण्य की 42 प्रकृतियाँ हैं। प्रज्ञापना सूत्र के 21वें पद में अवगाहना संस्थान प्रकरण में 5 शरीरों का वर्णन है जो सभी पुण्य प्रकृति से प्राप्त होते हैं। तैजस-कार्मण शरीर अनादि से हैं तो औदारिक और वैक्रिय में से चौथे गुणस्थान तक एक न एक का बंध होता ही है और आहारक शरीर कर्मभूमिज-गर्भज-सम्यग्दृष्टि-ऋद्धिप्राप्त-अप्रमत्त संयमी मनुष्य को होता है अर्थात् उत्कृष्ट पुण्यशाली को ही यह शरीर प्राप्त होता है।

पुण्य की सातावेदनीय, उच्चगोत्र, देवद्विक, पंचेन्द्रिय जाति, वैक्रिय तैजस कार्मण शरीर, वैक्रिय अंगोपांग समचतुरस्र संस्थान, शुभ वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, शुभ विहायोगति, अगुरुलघु, निर्माण, पराघात, उच्छ्वास, तीर्थंकर, आहारकद्विक, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशः कीर्ति इन 32 पुण्य प्रकृतियों में से किसी एक या सभी के उत्कृष्ट पुण्य के अनुभाग का बंध होता है तो अन्तर्मुहूर्त के भीतर अवश्य केवलज्ञान हो जाता है। उस केवलज्ञान के लिए परम सहायक होता है शुभ मन। आगे 22वें पद में

बताया है अशुभ मन से क्या होता है? जेणं अप्पणो वा परस्स वा तदुभयस्स वा असुभं मंण संपधारेइ, से तं पाओसिया किरिया। जिससे स्व का, पर का अथवा स्व एवं पर दोनों का मन अशुभ कर दिया जाता है वह प्राद्वेषिकी क्रिया है।

भगवती शतक 5 उद्देशक 6 में कहा है- ''हे भगवन्! कोई पुरुष धनुष को ग्रहण करे, धनुष को ग्रहण करके बाण को ग्रहण करे, बाण को ग्रहण करके धनुष से बाण फेंकने वाले आसन से बैठे, बैठकर फेंके जाने वाले बाण को कान तक खींचे, खींच कर ऊँचे आकाश में बाण फेंके। ऊँचे आकाश में फेंका हुआ वह बाण, वहाँ जिन प्राण, भूत, जीव और सत्त्वों का अभिहनन करे, उनके शरीर को संकुचित करे, उन्हें श्लिष्ट करे, उन्हें परस्पर संहत करे, उनका स्पर्श करे, उनको चारों तरफ से पीड़ा पहुँचाए, उन्हें क्लान्त करे अर्थात् मारणान्तिक समुद्घात तक ले जावे, उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जावे और उन्हें जीवन से रहित कर देवे, तो हे भगवन्! उस पुरुष को कितनी क्रियाएँ लगती हैं?''
उत्तर- हे गौतम! वह पुरुष धनुष को ग्रहण करता है यावत् बाण को फेंकता है यावत् वह पुरुष कायिकी, आधिकरणिकी, प्राद्वेषिकी, पारितापनिकी और प्राणातिपातिकी-इन पाँच क्रियाओं से स्पृष्ट होता है। जिन जीवों के शरीर से वह धनुष बना है, वे जीव भी 5 क्रियाओं से स्पृष्ट हैं। भगवती सूत्र शतक 8 उद्देशक 6 में पृच्छा की है कि - एक जीव परकीय औदारिक शरीर को आश्रित करके कितनी क्रियाओं वाला होता है? उत्तर में प्रभु कहते हैं- जीव परकीय औदारिक शरीर को आश्रित करके कभी 3, कभी 4, कभी 5 क्रियाओं से युक्त होता है और कभी क्रिया रहित भी होता है। तात्पर्य यह है कि (1) कायिकी, (2) आधिकरणिकी, (3) प्राद्वेषिकी, (4) पारितापनिकी और (5) प्राणातिपातिकी- इस तरह ये पाँच क्रियाएँ होती हैं। इनमें से जब एक जीव कोई अन्य पृथ्वी कायिक आदि जीव के शरीर को आश्रित करके काय व्यापार करता है उस समय उस जीव के कायिकी, आधिकरणिकी, प्राद्वेषिकी ये 3 क्रियाएँ होती हैं। जिस जीव के राग नष्ट नहीं हुआ ऐसे प्रमत्त जीव के कायिकी क्रिया के सद्भाव से नियम से आधिकारणिकी और प्राद्वेषिकी ये दो क्रियाएँ होती ही हैं

तथा अंतिम जो दो क्रियाएँ हैं वे उनमें विकल्प से होती हैं। कायिकी, आधिकरणिकी और प्राद्वेषिकी इन 3 क्रियाओं में आपस में अविनाभाव नित्य परस्पर संबद्ध हैं, इसलिए तीन क्रियावाला एक जीव कहा गया है। अर्थात पाँचों क्रियाओं में प्रद्वेष अनिवार्यतः रहता ही है। कह सकते हैं कि अशुभ मन, वचन व काया के साथ इनका संबंध है। भगवती शतक 1 उद्देश्क 1 से भी यही पुष्टि मिलती है कि अशुभ योग से प्रमत्त को ही ये क्रियाएँ लगती हैं, शुभ योग में ये क्रियाएँ नहीं लगती। इन क्रियाओं से बचना सदैव उपादेय है, पर वह शुभ मन या शुभ योग से ही संभव है। इससे सुस्पष्ट होता है कि पुण्य उपादेय ही है। आगे प्रज्ञापना सूत्र का 23वाँ पद कहता है:-

सायावेयणिज्जस्स णं भंते! कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गल-परिणामं पप्प कइविहे अणुभावे पण्णत्ते? गोयमा! सायावेयणिज्जस्स णं कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव अट्ठविहे अणुभावे पण्णत्ते। तंजहा- (1) मणुण्णा सद्दा (2) मणुण्णा रूवा, (3) मणुण्णा गंधा, (4) मणुण्णा रसा, (5) मणुण्णा फासा, (6) मणोसुहया, (7) वयसुहया, (8) कायसुहया।

भगवन्! जीव के द्वारा बद्ध यावत् पुद्गल परिणाम को पाकर सातावेदनीय कर्म का कितने प्रकार का अनुभव कहा गया है? गौतम! जीव के द्वारा बद्ध सातावेदनीय कर्म का यावत् आठ प्रकार का अनुभव कहा गया है, यथा - (1) मनोज्ञ शब्द, (2) मनोज्ञ रूप, (3) मनोज्ञ गंध, (4) मनोज्ञ रस, (5) मनोज्ञ स्पर्श, (6) मन का सौख्य (7) वचन का सौख्य, (8) काया का सौख्य।

सुभनामस्स णं भंते। कम्मस्स जीवेणं पुच्छा।

गोयमा! सुभनामस्स णं कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव चोद्दसविहे अणुभावे पण्णत्ते। तंजहा- (1) इट्ठा सद्दा (2) इट्ठा रूवा (3) इट्ठा गंधा (4) इट्ठा रसा (5) इट्ठा फासा (6) इट्ठा गति (7) इट्ठा ठिती (8) इट्ठे लवण्णे (9) इट्ठा जसोकित्ती (10) इट्ठा उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय पुरिसक्कार परक्कमे (11) इट्ठ सरया (12) इट्ठ कंत-स्सरया (13) पियस्सरया (14) मणुण्णस्सरया।

शुभ नाम कर्म का अनुभाग कितने प्रकार का है? वह 14 प्रकार का है, जैसे- (1) इष्ट शब्द (2) इष्ट रूप (3) इष्ट गंध (4) इष्ट रस (5) इष्ट स्पर्श (6) इष्ट गति (7) इष्ट स्थिति (8) इष्ट लावण्य (9) इष्ट यश कीर्ति (10) इष्ट उत्थान-बल-वीर्य- पुरुषकार-पराक्रम (11) इष्ट स्वर (12) कान्त स्वर (13) प्रिय स्वर (14) मनोज्ञ स्वर।

उच्चागोसस्स णं भंते! कम्मस्स जीवेणं पुच्छा।

गोयमा! उच्चागोयस्स णं कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव अट्ठविहे अणुभावे पण्णत्ते। तंजहा- (1) जातिविसिट्ठया (2) कुलविसिट्ठया (3) बलविसिट्ठया (4) रूववविसिट्ठया (5) तवविसिट्ठया (6) सुयविसिट्ठया (7) लाभविसिट्ठया (8) इस्सरियविसिट्ठया।

उच्चगोत्र कर्म का अनुभाव कितने प्रकार का है ? वह 8 प्रकार का है - (1) जाति-विशिष्टता (2) कुल विशिष्टता (3) बल विशिष्टता (40) रूप विशिष्टता (5) तप विशिष्टता (6) श्रुत विशिष्टता (7) लाभ विशिष्टता (8) ऐश्वर्य विशिष्टता।

प्रज्ञापना के 23 वें पद में कर्मोदय बताते हुए इन सूत्रों का वर्णन भी है और सुखविपाक आदि सूत्रों में जहाँ भी इनकी - इट्ठा, कंता, पिया, मणुण्णा, मणामा की पृच्छा हैं- किं वा दच्चा, किं वा किच्चा, किं वा भोच्चा उन्होंने ऐसा क्या दिया था, क्या किया था जो वे इष्ट, कांत, प्रिय, मनोज्ञ, मनाम थे? इसी के साथ कहा- कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं सुवयणं सोच्चा अर्थात् अच्छी उपलब्धि के लिए अच्छा कार्य या वीर्य आवश्यक है। आर्य अथवा श्रमण के वचन-श्रव्रण भी पुण्य + संवर आदि के सहयोग से ही होते हैं अर्थात् ये सभी उपादेय हैं।

सातावेदनीय, शुभनामकर्म, उच्चगोत्र के बंध वर्णन से भी स्पष्ट होता है कि सकषायी अवस्था तक पुण्य का बंध सहज आत्मभाव से होता है, उसे हम रोक नहीं सकते। हाँ, रोक सकते हैं उसका एक ही रास्ता है कषाय में रक्त रहें।

कर्मसिद्धान्त से देखें - क्रोध करने से असातावेदनीय का बंध और

क्रोध-त्याग से सातावेदनीय अर्थात् पुण्य का बंध होता है। माया से, वचन/काया आदि की वक्रता से अशुभ नाम कर्म और त्याग करने से शुभनामकर्म का बंध होता है। मान से नीच गोत्र और मान नहीं करने से उच्च गोत्र प्राप्त होता है। अर्थात् गलत को रोकने से सही अपने आप हो जाता है, करना नहीं पड़ता। पाप को रोकें तो सहज ही पुण्य का बंध होता है। इस पुण्य को हम कैसे रोक सकते हैं? अर्थात् पाप हेय तो पुण्य उपादेय हुआ।

णाणावरणिज्जस्स णं भंते! कम्मस्स जहण्णठितिबंधए के? गोयमा! अण्णयरे सुहुमसंपराए उवसामए वा खवए वा। णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स जहण्णठितिबंधए तव्वइरित्ते अजहण्णे। एवं एतेणं अभिलावेणं मोहाऽऽउअवज्जाणं सेसकम्माणं भाणियव्वं। मोहणिज्जस्स णं भंते! कम्मस्स जहण्णठितिबंधए के? गोयमा! अण्णयरे बायरसंपराए उवसामए वा खवए वा, एस णं गोयमा! अण्णयरे मोहणिज्जस्स कम्मस्स जहण्णठितिबंधए तव्वइरित्ते अजहण्णे।

भगवन्! ज्ञानावरणीय कर्म की जघन्य स्थिति का बंधक कौन? गौतम! वह अन्यतर (कोई एक) सूक्ष्मसंपराय, उपशामक या क्षपक होता है उससे अतिरिक्त अजघन्य स्थिति का बंधक होता है। इस प्रकार मोहनीय और आयु को छोड़कर 6 कर्मों के विषय में जानना चाहिए। मोहनीय कर्म की जघन्य स्थिति का बंधक कौन? गौतम! वह अन्यतर बादर संपराय, उपशामक अथवा क्षपक होता है, उससे भिन्न अजघन्य स्थिति का बंधक होता है।

सात कर्मों की जघन्य स्थिति, इसी समय चार घाति कर्मों का जघन्य अनुभाग, आयु को छोड़कर 3 अघातिकर्मों का उत्कृष्ट अनुभाग (साता वेदनीय, यशःकीर्ति, उच्चगोत्र)बंध होता है।

पुण्य, संवर एवं निर्जरा रूपी धर्म से कर्म की स्थिति घटती ही जाती है, इसके साथ पाप का अनुभाग घटता जाता है एवं पुण्य का अनुभाग बढ़ता जाता है।

देखिये उत्कृष्ट स्थिति का विवेचन- सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्ते सागारे जागरे सुत्तोवउत्ते मिच्छादिट्ठी कण्हलेसे

उक्कोससंकिलिट्ठपरिणामे ईसिमज्झिमपरिणामे वा।

ज्ञानावरणीय की उत्कृष्ट स्थिति को कौन बांधता है? जो संज्ञी पंचेन्द्रिय समस्त पर्याप्तियों से पर्याप्त, साकारोपयोग वाला, जाग्रत, श्रुत में उपयोगवान मिथ्यादृष्टि, कृष्णलेश्यावान, उत्कृष्ट संक्लिष्ट परिणाम वाला अथवा किंचित् मध्यम परिणाम वाला हो। वह ज्ञानावरणीय की उत्कृष्ट स्थिति बांधता है।

आउयस्स णं भंते। कम्मस्स जहण्णठितिबंधए के? गोयमा! जे णं जीवे असंखेप्पद्धप्पविट्ठे सव्वणिरुद्धे से आउए, सेसे सव्वमहंतीए आउअबद्धाए, तीसे णं आउअबंधद्धाए चरिमकालसमयंसि सव्वजहण्णियं ठिई पज्जत्ता पज्जत्तियं णिव्वत्तेति।

आयुष्य कर्म की जघन्य स्थिति का बंधक कौन है? गौतम! जो जीव असंक्षेप्य अद्धाप्रविष्ट होता है, उसकी आयु सर्वनिरुद्ध (सबसे कम) होती है। शेष सबसे बड़े उस आयुष्य बंधकाल के अंतिम काल के समय में जो सबसे जघन्य स्थिति को तथा पर्याप्ति-अपर्याप्ति को बांधता है।

केरिसए णं भंते! तिरिक्खजोणिए उक्कोसकालठितीयं आउयं कम्मं बंधइ? गोयमा! कम्मभूमए वा कम्मभूमगपलिभागी वा सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए सागारे जागरे सुत्तोवउत्ते मिच्छदिट्ठी परमकिण्हलेस्से उक्कोससंकिलिट्ठपरिणामे-

किस प्रकार का तिर्यंच उत्कृष्ट काल की स्थिति वाले आयुष्य कर्म को बांधता है? गौतम! जो कर्मभूमि में उत्पन्न हो अथवा कर्मभूमिज के समान हो, संज्ञी पंचेन्द्रिय, सर्व पर्याप्तियों से पर्याप्त, साकारोपयोग वाला, जाग्रत, श्रुत में उपयोगवान, मिथ्यादृष्टि, परमकृष्णलेश्यावान एवं उत्कृष्ट संक्लिष्ट परिणाम वाला हो।

केरिसए णं भंते! मणूसे उक्कोसकालठितीयं आउयं कम्मं बंधइ? गोयमा! कम्मभूमगे वा कम्मभूमगपलिभागी वा जाव सुत्तोवउत्ते सम्मदिट्ठि वा मिच्छादिट्ठि वा कण्हलेसे वा सुक्कलेसे वा णाणी वा अण्णाणी वा उक्कोस संकिलिट्ठपरिणामे वा तप्पाउग्गविसुज्झ-

माणपरिणामे वा, एरिसए णं गोयमा! मणूसे उक्कोसकालठिइयं आउअं कम्मं बंधइ।

केरिसिया णं भंते! मणूसी उक्कोसकालठितीयं आउयं कम्मं बंधइ? गोयमा! कम्मभूमिगा वा कम्मभूमगपलिभागी वा जाव सुत्तोवउत्ता सम्मदिट्ठि सुक्कलेस्सा तप्पाउग्गविसुज्झमाणपरिणामा एरिसिया णं गोयमा! मणूस्सी उक्कोसकालठितीयं आउयं कम्मं बंधइ।

किस प्रकार का मनुष्य उत्कृष्ट काल की स्थिति वाले आयुष्य कर्म को बांधता है? गौतम! जो कर्मभूमिज हो या कर्मभूमिज के सदृश हो यावत् श्रुत में उपयोगवान, सम्यग्दृष्टि हो या मिथ्यादृष्टि कृष्णलेश्यी हो या शुक्ल लेश्यी, ज्ञानी या अज्ञानी, उत्कृष्ट संक्लिष्ट परिणाम वाला हो या तत्प्रायोग्य विशुद्ध होते हुए परिणाम वाला हो वह उत्कृष्ट आयु का बंध करता है।

किस प्रकार की मनुष्य स्त्री उत्कृष्ट काल की स्थिति वाले आयुष्य कर्म को बांधती है? गौतम! जो कर्मभूमि में उत्पन्न या सदृश हो यावत् श्रुत में उपयोगवान, सम्यग्दृष्टि, शुक्ललेश्यी, तत्प्रायोग्य विशुद्ध होते हुए परिणाम वाली हो।

कितना स्पष्ट है सम्यग्दृष्टि, शुक्ललेश्यी, विशुद्ध्यमान परिणाम इनमें क्या हेय? अर्थात् शुक्ल पक्षी उस जीव का संसार संचिठ्ठण शेष था, मोहनीय प्रमुख चार घाति कर्म का क्षपण शेष था। लव सप्तम- 4 मिनिट 21.9/11 सेकिण्ड जितने समय में इन कर्मों का अंत हो सकता था, पर उतना सा समय कम रह गया- पुण्य ने उस बचे संसार को सुंदरतम किया। पुण्य कभी भी अटकाता नहीं, वह संसार को घटाने तथा घटे संसार को अच्छा बनाने में ही जीव का सहकार देता है।

इसके पश्चात् 36 वें पद तक अनेक उपयोगी तथ्यों का विवेचन हुआ है, उनमें 24 दंडकों पर द्रव्यानुयोग की प्रधानता के साथ कर्म बंध-वेदन के भंग रूप गणितानुयोग का क्वचित् विश्लेषण भी है। पुण्य तत्त्व संबंधी प्ररूपण प्रायः नहीं है, अस्तु प्रज्ञापना सूत्र में पुण्य की चर्चा को यहीं विराम दे रहे हैं।

Tattva bodha

PRATIKRAMAṆA SŪTRA

Dr. Priyadarshana Jain

FOR ASCETICS

TEXT	TRANSLATION
Icchāmi	-I wish to
Ṭhāmi	-Do
Kāussagam	-Kāyotsarga
Jo me devasio	-Related to the day
Aiyāro	-Any transgressions
Kao	-I have done
Kāiyo	-Through body
Vāiyo	-Through speech
Māṇasio	-Through mind
Ussutto	-Spoken against the Sūtras
Ummaggo	-Spoken against the path
Akappo	-Committed the forbidden acts
Akaraṇijjo	-Committed any transgression
Dujjhāo	-Done mournful contemplation
Duvvicintio	-Had evil thoughts
Aṇāyaro	-False conduct
Aṇicchiyavvo	-Desirous contemplation
Asamaṇa pāuggo	-Gone against Śramaṇa Dharma
Nāṇe taha daṁsaṇe	-Knowledge and Faith
Carritte	-Complete Conduct
Sue sāmāie	-Scriptural knowledge and Sāmāyika
Tiṇhaṁ guttīṇaṁ	-Three restraints (guptis)
Cauṇhaṁ kasāyāṇaṁ	-Four-fold Passions
Pañcaṇhaṁ mahavvayāṇaṁ	-Five Mahāvratas
Chaṇhaṁ jivanikayānaṁ	-Six types of life-forms
Sattanhaṁ pindesananaṁ	-Seven regulations regarding alms
Atthāṇahaṁ pavayaṇamāuṇaṁ	-Eight-fold Pravacana mātā

Navaṇham bambhaceraguttīṇaṁ-Nine-fold Brahmacarya

Dasavihe samaṇadhamme	-Ten-fold Śramaṇa Dharma
Samaṇāṇam jogāṇaṁ	-Vow of Equanimity
Jaṁ khaṇḍiyaṁ	-Partially transgressed them
Jaṁ virāhiyaṁ	-Completely broken them
Tassa micchāmi dukkaḍam	-May that Sin be fruitless

FOR HOUSE HOLDERS

Iccāmi	-I wish to
Thāmi	-Do
Kāussagaṁ	-Kāyotsarga
Jo me devasio	-Related to the day
Aiyāro	-Any transgressions
Kao	-I have done
Kāiyo	-Through body
Vāiyo	-Through speech
Māṇasio	-Through mind
Ussutto	-Spoken against the Sūtras
Ummaggo	-Spoken against the Path
Akappo	-Committed the forbidden acts
Akaraṇijjo	-Committed any transgression
Dujjhāo	-Done mournful contemplation
Duvvicintio	-Had evil thoughts
Aṇāyaro	-False conduct
Aṇicchiyavvo	-Desirous contemplation
Asāvaga pāuggo	-Gone against Śrāvaka Dharma
Nāṇe taha damsaṇe	-Knowledge and Faith
Carittācaritte	-Partial Conduct
Sue sāmāie	-Scriptural knowledge and Sāmāyika
Tiṇhaṁ guttīṇaṁ	-Three restraints (guptis)
Cauṇhaṁ kasāyāṇaṁ	-Four-fold Passions
Pañcanhamaṇuvvayāṇaṁ	-Five Anuvratas
Tiṇham Guṇavvayāṇaṁ	-Three Gunavratas
Cauṇhaṁ Sikhāvayaṇaṁ	-Four sīkshāvratas
Bārassa-vihassa	-Twelve-fold

Sāvaga-dhammassa	-Śrāvaka-Dharma
Jaṁ khaṇḍiyaṁ	-Partially transgressed them
Jaṁ virāhiyaṁ	-Completely broken them
Tassa micchāmi dukkadam	-May that sin be fruitless

MEANING

O Lord! I wish to achieve steadiness of mind, body and speech hence I wish to do the ***Kāyotsarga,*** but prior to that I expiate for all my ***doṣas*** i.e. if I have committed any transgressions through mind, body and speech related to knowledge, faith, conduct, particularly spiritual knowledge and the vow of Sāmāyika I wish that may that sin become fruitless for me ***(Micchāmi dukkaḍaṁ).*** If I have spoken against the scriptures and the right path, done mournful contemplation and desired anything against the path, I regret for the same. If I have partially or completely transgressed or broken any of the vows related to ***Śramaṇa Dharma*** like three restraints, four-fold passions, five great vows, protection of the six types of life-forms, seven regulatory vows regarding taking alms, eight-fold ***pravacana mātā,*** nine-fold celibacy, ten-fold noble virtues and the vow of equanimity, then may that sin become fruitless.

For a ***Śrāvaka-*** If I have partially or completely transgressed or broken any of the vows related to ***Śrāvaka Dharma*** like five ***aṇuvratas,*** three ***guṇa vratas*** and four ***sikśāvratas,*** i.e. the twelve-fold ***Śrāvaka vratas,*** then may that sin become fruitless.

EXPLANATION

Man is a unity of three traits namely animality, humanity and divinity and is bestowed with three great energies of mind, body and speech. Man can channelise these energies in the right direction and manifest the divinity latent in him; on the other hand he can also misuse these energies and fall prey to the animal instincts. An aspirant, desirous of liberation, be it an ascetic or a layman has to act judiciously in channelising the energies of mind, body and speech, at every step. If he is invigilant even for a while, then it leads to his downfall. Through this ***Pratikramana Sūtra*** the aspirant expiates for the shortcomings of these three channels of activity and in future vows to remain firm in spirituality and

equanimity for which he has taken the great vows of an ascetic/***Śrāvaka***. They have to be careful in practising restraint of mind, body and speech (***Three Guptis***) seek scriptural knowledge and be equanimous every moment. They have to conquer the four-fold passions viz. anger, conceit, deceit, and greed. For an ascetic the five ***Mahāvratas*** are the complete vows of ***Ahimsā, Satya, Asteya, Brahma-carya*** and ***Aparigraha*** i.e. non-violence, truthfulness, non-stealing, celibacy, and non-possession respectively. The six types of life-forms are earth-bodied, water-bodied, fire-bodied, air-bodied, plant-bodied and mobile beings. The regulations regarding taking the alms are to enable him to practice the great vow of non-violence. The eight-fold ***'Pravacana Mata'*** is like a mother for an ascetic as it guides and protects him in the practice of the vows. The five ***samitis*** and the three ***guptis*** are called ***'Pravacana Mata'***. The five ***samitis*** are the regulations in conducting oneself and the three ***guptis*** are the three restraints of mind, body and speech. The ***samitis*** regulate the acts of movements like walking, speaking, collecting alms, use of vessels and discarding the wastes of the body. As an ascetic has taken the vow of celibacy he practices it completely and does not entertain the company of women in nine-fold ways. The ten-fold ***Śramaṇa dharma*** is practice of forbearance, humility, simplicity, truthfulness, supreme purity,self-restraint austerity, renunciation, chastity and detachment.

For a ***Śrāvaka*** the five primary vows i.e. ***anuvratas*** are partial non-violence, truthfulness, non-stealing, celibacy and limiting of the possessions. The three multiplicative vows i.e. ***guṇavratas*** are limiting of movement in various directions, limiting the things of everyday use and giving up necessary violence and activities. The four disciplinary vows or ***sikśāvratas*** are of practicing equanimity (***Sāmāyika***), further limitation of everyday movement, taking to prolonged ***Sāmāyika*** i.e. Pausadha and giving alms to the ***Śramaṇas***. This is the twelve-fold ***Śrāvaka Dharma*** which a ***Śrāvaka*** is supposed to follow and if he has transgressed any of the above partially or completely he expiates for the same and prays that may that sin become fruitless.

-Lecturer, Dept. of Jainology, University of Madras, Chennai

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 47)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(वैक्रिय काय योग)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा- वैक्रिय काय योग में कौन-कौन सी समकित पायी जाती है?

समाधान- वैक्रिय काय योग में 4 समकित मिलती हैं- 1. औपशमिक, 2.क्षायोपशमिक, 3.क्षायिक, 4. सास्वादन। वैक्रिय काय योग में वेदक समकित नहीं होती।

जिज्ञासा- वैक्रिय काय योग में वेदक समकित क्यों नहीं मानी जाती?

समाधान- वेदक समकित क्षायिक समकित पाने के एक समय पूर्व की अवस्था मानी जाती है। नारकी देवता में वैक्रिय काय योग अपर्याप्त व पर्याप्त दोनों अवस्थाओं में होता है तथा मनुष्य तिर्यञ्च में पर्याप्त अवस्था में होता है। जबकि वेदक समकित मनुष्य को छोड़कर नारकी, देवता व तिर्यञ्चों में अपर्याप्त अवस्था में ही होती है। अपर्याप्त अवस्था में भी आहार पर्याप्ति पूर्ण हो जाये तथा शरीर पर्याप्ति पूर्ण न हो, इस बीच में एक समय के लिये होती है।

यद्यपि अपर्याप्त अवस्था में वैक्रिय काय योग नारकी देवता में होता है, किन्तु वह शरीर पर्याप्ति के बाद माना जाता है जबकि वेदक समकित शरीर पर्याप्ति के पूर्व होती है, इस कारण से वैक्रिय काय योग में वेदक समकित नहीं होती। यद्यपि कर्मग्रन्थादि में क्षमोपशमिक समकित को भी वेदक समकित के नाम से कहा गया है, तथापि यहाँ वेदक समकित का तात्पर्य क्षायिक समकित से एक समय पूर्व होने वाली वेदक समकित से ही लेना चाहिए।

मनुष्यों में 15 कर्मभूमिज मनुष्यों में पर्याप्त अवस्था में वेदक समकित होती है, किन्तु जिस समय वेदक समकित हो, उस एक समय की स्थिति में वैक्रिय काय योग संभव नहीं है।

जिज्ञासा- वैक्रिय मिश्र काय योग में कौन-कौनसी समकित होती है?

समाधान- वैक्रिय मिश्र काय योग में 5 समकित पायी जाती है- 1.औपशमिक, 2.क्षायोपशमिक, 3.क्षायिक, 4.वेदक और 5.सास्वादन। वैक्रिय मिश्र काय योग में मिश्र गुणस्थान नहीं होता।

जिज्ञासा- वैकिय मिश्रकाय योग में मिश्र गुणस्थान क्यों नहीं माना जाता?

समाधान- वैक्रिय मिश्र काय योग मनुष्य-तिर्यञ्चों में वैक्रिय लब्धि के प्रयोग में होता है तथा नारकी-देवता में अपर्याप्त अवस्था में वैक्रिय शरीर की अपूर्णता में तथा पर्याप्त अवस्था में उत्तर वैक्रिय करने पर होता है।

अपर्याप्त अवस्था में पहला, दूसरा व चौथा ये तीन गुणस्थान हो सकते हैं। तीसरा मिश्र गुणस्थान नहीं। किसी भी प्रकार की लब्धि के प्रयोग में भी तीसरा गुणस्थान संभव नहीं है। क्योंकि तीसरे गुणस्थान की विशेषता है कि इसमें- 1. जन्म नहीं होता, 2. मरण नहीं होता, 3. आयु का बन्ध नहीं होता, 4. किसी भी लब्धि का प्रयोग नहीं होता।

जिज्ञासा- वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र काय योग में कितने उपयोग होते हैं।

समाधान- उपयोग के मुख्य भेद दो हैं- 1. साकारोपयोग, 2.अनाकारोपयोग। इनके उत्तर भेदों की अपेक्षा- साकारोपयोग के 8 भेद (पाँच ज्ञान, तीन अज्ञान), अनाकारोपयोग के 4 भेद (चार दर्शन) इस प्रकार कुल 12 भेद हैं। चारों गति की अपेक्षा समुच्चय रूप से वैक्रिय, वैक्रियमिश्र काययोग में पहले से लेकर छठे गुणस्थान तक छह गुणस्थान होते हैं। अतः मुख्य दो भेदों की अपेक्षा दोनों उपयोग तथा

उत्तर भेदों की अपेक्षा 10 उपयोग (केवलज्ञान, केवलदर्शन को छोड़कर) होते हैं।

जिज्ञासा- वैक्रिय, वैकिय मिश्र काय योग में कितने योग होते हैं?

समाधान- वैक्रिय तथा वैक्रिय मिश्र काय योग इन दोनों में 9 योग होते हैं- 4 मन के, 4 वचन के और 1 काया का (वैक्रिय अथवा वैक्रिय मिश्र, इन दोनों में से कोई एक)

वैक्रिय काययोग तथा वैक्रिय मिश्र काय योग ये दोनों काययोग किसी भी जीव में एक साथ नहीं मिलते हैं।

जिज्ञासा- वैक्रिय काययोग तथा वैक्रिय मिश्र काययोग ये दोनों योग जीव में एक साथ क्यों नहीं मिलते?

समाधान- जब वैक्रिय मिश्र काय योग होता है, उस समय वैक्रिय काय योग नहीं होता। क्योंकि वैक्रिय मिश्र काय योग वैक्रिय शरीर की शरीर पर्याप्ति पूर्ण होने के पहले तक होता है, जबकि वैक्रिय शरीर की शरीर पर्याप्ति पूर्ण होते ही वैक्रिय काय योग प्रारम्भ हो जाता है। अतः वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र काय योग ये दोनों एक साथ नहीं मिल पाते।

जिज्ञासा- वैक्रिय-वैक्रिय मिश्र काययोग में कौन-कौन से चारित्र मिलते हैं?

समाधान- वैक्रिय काय योग में 1 से 6 गुणस्थान तथा वैक्रिय मिश्र काय योग में 5 गुणस्थान (प्रथम छह गुणस्थान में से तीसरा छोड़कर) होते हैं। चारित्र छठे से चौदहवें गुणस्थान तक पाया जाता है। वैक्रिय तथा वैक्रिय मिश्र काययोग में छठे गुणस्थान की अपेक्षा से सामायिक व छेदोपस्थापनीय ये दो चारित्र मिलते हैं। यद्यपि छठे गुणस्थान में परिहारविशुद्धि चारित्र भी मिलता है, किन्तु परिहार विशुद्धि चारित्र में वैक्रिय तथा वैक्रिय मिश्र काय योग संभव नहीं होता। इस कारण से वैक्रिय-वैक्रिय मिश्र काय योग में परिहार विशुद्धि चारित्र नहीं मिलता है।

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

युवा-स्तम्भ

सत्संग और स्वाध्याय की क्यों न हो उपेक्षा?

श्री अशोक कुमार बागरेचा

प्रायः हम सभी का यह अनुभव है कि सबमें कम अधिक अनुपात में दुर्गुण एवं कषाय होते ही हैं। हम उनसे मुक्त होना भी चाहते हैं, लेकिन जानते और चाहते हुए भी अनायास अकरणीय कार्य हो जाते हैं, कषाय भी उत्तेजित हो जाते हैं। अतः हमारे सामने यह प्रश्न खड़ा रहता है कि किसी के कहने सुनने मात्र से हम कषायों से मुक्त नहीं हो पाते हैं तो क्या ऐसा उपाय नहीं है कि जानने, मानने और चाहने के बाद हमारे भीतर कषाय प्रज्वलित ही न हों अर्थात् हमारा मन कषायों से उद्वेलित न हो। हमारे मन में अकरणीय कार्य के प्रति कोई रुचि न हो और सत्कार्यों के प्रति मन में रुचि और आकर्षण बना रहे। जब तक ऐसा उपाय नहीं होगा तब तक तो मन में राग-द्वेषात्मक कषायों के प्रति आकर्षण बना ही रहेगा और तब सब कुछ जानते, मानते और चाहते हुए भी हम जीवन में सद्गुणों की ओर उन्नति नहीं कर पायेंगे।

गहराई से चिंतन किया जाये तो वह उपाय अनुप्रेक्षा अर्थात् सद्गुणों की उपयोगिता एवं दुर्गुणों की हेयता के भावों से स्वयं को बारम्बार भावित करना ही है। जब बार-बार ऐसा चिंतन सुनकर, समझकर या पढ़कर किया जायेगा तब चित्त में उसका प्रभाव बढ़ता जायेगा और स्वतः मन में बुरे विचार आना बंद हो जायेंगे तथा सद्गुणों का आकर्षण पैदा हो जायेगा। जब रुचि पैदा हो जाती है तब सत्प्रवृत्ति का आचरण अपने आप सहज होने लग जाता है, क्योंकि सभी व्यक्ति अपनी रुचि के अनुसार ही अधिकतम कार्य करते हैं। सद्गुणों के प्रति रुचि पैदा करने का साधन दीर्घकाल तक बार-बार सद्गुणों की अनुप्रेक्षा करना ही है। सत्संग भी इसमें साधन है। अच्छी पुस्तकों का स्वाध्याय करना अर्थात् पढ़ना, सुज्ञजनों के साथ चर्चा-वार्ता आदि रूप में विचार विमर्श करना, और उसी सत्चिंतन पर स्वयं द्वारा बार-बार मनन करना ये सारे के सारे अनुप्रेक्षा के ही रूप हैं, अतः स्वभाव परिवर्तन के लिए सत्संग तथा अनुप्रेक्षा ही सबसे अधिक प्रभावशाली एवं सरलतम उपाय है और उसे ही तात्त्विक भाषा में स्वाध्याय तथा ध्यान कहा जाता है।

कई लोग कहते हैं कि केवल सत्संग या प्रवचन सुनने से कुछ भी नहीं होने वाला है, उसे आचरण में लाना आवश्यक है। यह चिंतन अधूरा चिंतन है। अपनी-अपनी चेतना की भूमिका के अनुसार सद्विचार सुनने का असर कम ज्यादा हो सकता है, परन्तु सद्विचार सुनना पूर्णतः निष्फल नहीं जाता है। प्रभावी एवं स्थायी असर बार-बार सुनने पर ही होगा। किसी विशेष बुरे व्यक्ति या तीव्र विभाव वाले व्यक्ति द्वारा सत्संग सुनने पर भी उसके अनुसार आचरण न करने के कारण सत्संग एवं स्वाध्याय मात्र को ही निरर्थक बता दिया जाये तो यह सर्वथा अनुचित होगा। उदाहरण के रूप में एक ही बरसात का भूमि के उपजाऊपन के अनुसार अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग असर होता है। ऊसर भूमि पर बरसात का असर न देखकर समूची बरसात को ही अर्थहीन कहना अज्ञान ही है। जिस प्रकार भूमि में पैदावार के लिए बरसात अनिवार्य है, उसी प्रकार आत्मा में सद्गुणों की पैदावार के लिए सत्संग एवं अनुप्रेक्षा करने रूपी बरसात का होना आवश्यक है। उसी से आत्मा की उर्वरा भूमि में अध्यात्म एवं सद्गुणों की उपज होगी।

स्वयं द्वारा विशेष पुरुषार्थ या तपस्या आत्मा को उन्नत करने का एक बड़ा साधन है। किन्तु सामान्य व्यक्ति को प्रारम्भ में तप आदि की रुचि नहीं होती है, क्योंकि वह आत्मा की उपादेयता को जानते हुए भी सांसारिक भौतिक सुखों से प्रभावित होता है। अतः उसकी रुचि सांसारिक भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए ही अधिक रहती है। तप आदि आत्मिक पुरुषार्थ में रुचि अल्प रहती है। व्यक्ति की जिस कार्य में रुचि होती है वह कार्य उसके द्वारा आसानी से किया जाता है। अतः अध्यात्म में रुचि तभी बढ़ेगी जब व्यक्ति की जानने के साथ-साथ उसकी विशेष उपयोगिता के प्रति आस्था पैदा होगी।

अध्यात्म के प्रति वैसी आस्था सुनने या जानने से तुरन्त नहीं जाग पाती है और सुनने व जानने से मन में श्रद्धा भी उत्पन्न होती हुई नहीं दिखाई देती है, अतः कई लोग कह देते हैं, यदि सुनने से श्रद्धा नहीं पैदा होती है तो सुनना निरर्थक है। इस पर वे कहते हैं कि आप केवल सुनो ही नहीं, उस पर श्रद्धा एवं अमल करो तभी आपका सुनना सार्थक है। यहाँ श्रोता के सामने यह समस्या खड़ी हो जाती है कि आप जो कह रहे हैं उसके अनुसार मैंने सुना, जाना और मैं चाहता भी हूँ कि मैं उस पर श्रद्धा एवं अमल करूँ। परन्तु आप से सुनने के बावजूद भी न तो मेरे मन में ऐसी श्रद्धा

उत्पन्न हो रही है और न ही उस पर अमल कर पा रहा हूँ। यह प्रश्न गहराई से सोचें तो हम सभी के दिलों का प्रश्न होगा। ऐसी स्थिति में श्रोता को क्या करना चाहिये?

इस प्रश्न के उत्तर में कहा गया है कि आपको जो आध्यात्मिक चिंतन दिया जा रहा है उस चिंतन के प्रति आपके मन में श्रद्धा के भाव धीरे-धीरे जगेंगे। अतः आपको प्रथम प्रयास यही करना है कि जब तक आपकी श्रद्धा जागृत नहीं हो तब तक बार-बार उस आध्यात्मिक चिंतन को सुनते रहो, दुहराते रहो, अपने आप धीरे-धीरे आपके मन में आस्था और विश्वास बढ़ता जायेगा। जब आस्था और विश्वास हो जायेगा तो आचरण स्वतः होने लग जायेगा। एकाएक सुनने से आस्था नहीं होने का कारण यह है कि अनादि काल से हमारी आत्मा में भौतिक जगत् की श्रद्धा जमी हुई है, अतः उस श्रद्धा को हटाने के लिए बार-बार सम्यक्ज्ञान को दुहराने की जरूरत है। साधु जीवन की चर्या जिसे साधना कहा जाता है वह भी इसी अभ्यास का एक बड़ा रूप है। लौकिक जगत् में भी हम देखें तो बार-बार अभ्यास करने से एक मन्द बुद्धि व्यक्ति भी किसी कार्य विशेष में पारंगत बन जाता है, विशेषज्ञ बन जाता है। यदि आप वर्षों से निरन्तर आध्यात्मिक प्रवचन सुनते हैं या कोई अन्य आचरण करते हैं तो अवश्यमेव उसका प्रभाव आपके जीवन पर आयेगा ही, लेकिन कई बार यहाँ यह भूल हो जाती है कि श्रोता अपने ही प्रमाद तथा अन्य बुरे संस्कारों के कारण प्रवचन को केवल कानों तक ही सुनता है, अपने भावों तक नहीं सुन पाता है। तब उसका प्रभाव भी नज़र में नहीं आता है। इसी तरह ऐसा भी हो सकता है कि जिस प्रकार के वक्ताओं से श्रोता दीर्घकाल से आध्यात्मिक प्रवचन सुन रहा है वह प्रवचन भी वास्तव में आध्यात्मिक न होकर सांसारिक ही हो, क्योंकि कुछ प्रवचनों का भाव सांसारिक ही होता है, केवल कुछ औपचारिक शब्दों का जामा ही पहना हुआ होता है। वैसी परिस्थिति में उस प्रवचन का श्रोता के जीवन में प्रभाव नहीं हो सकता है। इन परिस्थितियों को देखकर यदि सत्संग के प्रभाव को ही नकार दिया जाये तो यह बहुत बड़ी भूल होगी। सत्संग कभी विफल होता ही नहीं है, उदाहरण के लिए जैसे बड़े पत्थर को तोड़ने के लिए बहुत बड़े हथौड़े से उस पर बार-बार प्रहार किया जाता है फिर कहीं जाकर उस पत्थर के टुकड़े होते हैं। सामान्य व्यक्ति को जिस अंतिम प्रहार में पत्थर टूटा, उसके पहले के सारे प्रहार बेकार गये, ऐसा लग सकता है, परन्तु उसका एक भी प्रहार बेकार नहीं होता। सभी

प्रहार भीतर से पत्थर को तोड़ते हैं, परन्तु हमें स्थूल परिणाम तो अंतिम प्रहार का ही दृष्टिगोचर होता है। ठीक ऐसा ही सत्संग एवं स्वाध्याय के लिए लागू होता है। जितनी आत्माओं ने संसार से मुक्ति की ओर कदम बढाये हैं उनमें अधिकतर आत्माओं के लिए आप्त पुरुषों या सद्गुरुओं के प्रवचन अथवा उपदेश ही कारणीभूत रहे हैं। अतः मनुष्य को सत्संग एवं स्वाध्याय को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाना चाहिये।

-मोतीलाल जी बागरेचा, खत्रियों का चौक, बालोतरा (राज.)

प्रज्ञा की जागृति

श्री भद्रंकर विजयजी गणिवर म.सा.

अज्ञान एवं अहम्मन्यता के आग्रह को मिटाने हेतु नमस्कार अनिवार्य है। नमस्कार का अर्थ है देव गुरु की आधीनता का स्वीकार। देव गुरु को नमस्कार करना शास्त्रों का महान् आदेश है। शास्त्रों के इस आदेश को समझने हेतु बुद्धि की आवश्यकता है। जिसमें स्वयं प्रज्ञा नहीं होती है, शास्त्र उसका क्या लाभ कर सकते हैं। यहाँ प्रज्ञा का अर्थ है सद्बुद्धि। सद्बुद्धि वह है जो शास्त्र वचन पर श्रद्धा पैदा करने में एवं उस श्रद्धा के बाद उसे जीवन में उतारने हेतु सहायक बने। शास्त्र वचन को समझने हेतु जो प्रज्ञा आवश्यक है, उस प्रज्ञा का उपयोग अवश्य करना चाहिये, उससे विपरीत प्रज्ञा अर्थात् कुतर्क का नहीं। प्रज्ञा से शास्त्र के वचन एवं उसका परमार्थ समझना सरल होता है, साथ ही उत्सर्ग-अपवाद व्यवहार निश्चय तथा ज्ञान-क्रिया इत्यादि के उपयोग की सच्ची दिशा समझी जाती है। सद्बुद्धि रूपी प्रज्ञा की सहायता से ही शास्त्र वचन का दुरुपयोग नहीं होता एवं सदुपयोग होता है। उससे शास्त्र वचनों की सापेक्षता समझी जाती है एवं प्रत्येक अपेक्षा का योग्य उपयोग कर जीव की क्रमिक आत्मोन्नति साधी जा सकती है। शास्त्रों का आदि वाक्य परमेष्ठी को नमस्कार है एवं उसका भी आदि पद नमो है। वे शास्त्राधीनता सूचित करते हैं। शास्त्रों के आदि प्रकाशक देव एवं गुरु की पराधीनता ही आत्मा की स्वाधीनता प्राप्त करने का एकमात्र राजमार्ग है यह नमो पद समझाता है।

-संकलन: श्री नवरतनमल डोसी, जोधपुर

धारावाहिक (क्रमशः57)

जम्बूकुमार

जैनदिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.

पूर्ववृत्तः- ललितांग और रानी के रूपक से गर्भावस्था के कष्टप्रद जीवन का वर्णन करते हुए जम्बूकुमार ने जेतश्री के समक्ष अपने निश्चय को दोहराते हुए कहा कि मुझे संयम ग्रहण करने से संसार की कोई भी विरोधी शक्ति डिगा नहीं सकती। मैं अज्ञानी था। आत्मिक सुख की प्राप्ति के उपायों से विमुख होकर दुःखों के मार्ग पर चला जा रहा था। श्री सुधर्मा स्वामी ने मुझे सावधान किया है। मुझ पर उनका अनन्त उपकार है। अब मैं अपने मनोरथ को पूर्ण करने वाले उपायों का अनुसरण करूँगा। पुनः जेतश्री को समझाते हुए कहने लगेः-

प्रिये! आत्मध्यान के साथ पहले बंधे हुए कर्मों का नाश करना अत्यावश्यक है। कर्मों की राशि को भस्म करने की जैसी शक्ति तपस्या में है वैसी शक्ति और किसी में नहीं। तप से संवर और निर्जरा दोनों ही साधना होती है। जो विवेकशील महापुरुष आत्म शुद्धि के महान् उद्देश्य से शुद्धोपयोग की प्राप्ति के लिए तपस्या करते हैं, उन्हें शुद्ध आत्मा की उपलब्धि होती है और वही मुक्ति के भागी होते हैं। शुभ उपयोग पुण्य-बंध का कारण है और शुद्ध उपयोग कर्मों के विनाश का कारण होता है। अतएव मुमुक्षु पुरुष को सांसारिक भोगोपभोग आदि के उद्देश्य से नहीं वरन् आत्मा के अधीन उत्पन्न होने वाले सहज सुख की प्राप्ति के लिए तपस्या करनी चाहिए।

शास्त्रों में तप दो प्रकार के बताए गए हैं- (1) बाह्य तप और (2) आभ्यन्तर तप। अनशन, ऊनोदरी, भिक्षाचरी, रस-परित्याग, कायक्लेश प्रतिसंलेखना, ये छह बाह्य तप हैं। बाह्य तपश्चरण करने से निर्जरा होती है और तपस्वी अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर लेता है।

किन्तु इन तपों का सम्बन्ध मुख्य रूप से शरीर के साथ है। इस प्रकार के तप अनेक ऐसे बाल-तपस्वी भी करते हैं जिन्हें आत्मज्ञान नहीं होता और जो आत्मा-अनात्मा के भेद-ज्ञान से हीन होते हैं। अतएव इन्हें बाह्य तप कहते हैं।

प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, व्युत्सर्ग और ध्यान, ये छह आभ्यन्तर तप हैं। इन तपों का प्रधान रूप से आत्मा के साथ सम्बन्ध है। आध्यात्मिक विकास के लिए इन तपों का अनुष्ठान करना अत्यन्त आवश्यक है। जो तपस्वी बाह्य तपस्या का अति आदर करता है और आभ्यन्तर तपों के प्रति उपेक्षा भाव रखता है, वह आत्मा के अभ्युदय में अधिक शक्तिशाली नहीं होता। अतएव बाह्य तप के साथ आन्तरिक तप का आचरण अवश्य करना चाहिए। बाह्य तप अंतरंग तप के सहायक बन जाएं, यह तपस्वी को ध्यान रखना चाहिए। तभी आत्म कर्मों से मुक्त हो सकती है। तपस्या वह अग्नि है जिसमें कर्मों का कचरा भस्म हो जाता है। जैसे सोने को आग में तपाने से वह एकदम निर्मल, स्वच्छ चमकदार बन जाता है उसी प्रकार तप की अग्नि से तप्त होकर आत्मा कर्ममल से युक्त और आत्मिक गुणों से प्रकाशमान हो उठता है। अतएव मोक्षाभिलाषियों को आत्मज्ञान के साथ-साथ तप का अनुष्ठान करना चाहिए। कहा भी है-

कोटि जन्म तप तपें ज्ञान बिना कर्म करें जे।
ज्ञानी के क्षण में त्रिगुप्ति तें सहज टरें तें।।

अर्थात् अज्ञानी-मिथ्या ज्ञानी-जीव करोड़ जन्मों तक तपस्या करके जितने कर्मों की निर्जरा कर पाता है, उतने कर्म ज्ञानी तीन गुप्तियों की आराधना करके एक क्षण में नष्ट कर डालते हैं।

यह ज्ञान की महिमा है। यों तो ज्ञान आत्मा का स्वाभाविक गुण है और वह प्रत्येक आत्मा में, प्रत्येक अवस्था में न्यूनाधिक रूप में सदा बना रहता है। यहाँ तक कि एकेन्द्रिय निगोदिया जीवों में भी मतिज्ञान और श्रुत का अंश विद्यमान रहता है। किन्तु मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का उदय जब होता है तब ज्ञान, अज्ञान या मिथ्या ज्ञान के रूप में परिणत हो जाता है। जैसे दूध स्वभाव से मीठा होने पर भी कडुवी तुंबी के संसर्ग से कटुक हो

जाता है इसी प्रकार ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न हुआ ज्ञान मिथ्यात्व का संसर्ग पाकर मिथ्या हो जाता है। मिथ्या ज्ञान ही सब अनर्थों का मूल है। उससे वस्तु का स्वरूप विपरीत भासित होता है। संसार रूपी वृक्ष मिथ्या ज्ञान से ही उत्पन्न होकर हरा-भरा रहता है। वह सुखाभास में सुख का बोध कराता है, अधर्म में धर्म की, कुगुरु में सद्गुरु की, कुदेव में देव की और कुमार्ग में सत्मार्ग की प्रतीति कराता है। सत् को असत् और असत् को सत् रूप में प्रदर्शित करके आत्मा को भ्रम में डाले रहता है। मिथ्याज्ञान पूर्वक की हुई समस्त क्रियाएँ संसार का कारण होती हैं। अज्ञानी जीव जो तपस्या करता है उसका फल अधिक से अधिक देवगति की प्राप्ति होना है। देवगति संसार रूप है, अतः उसकी तपस्या भी संसार का कारण है। जब तक आत्मा में शुद्ध सम्यग्दृष्टि उत्पन्न नहीं होती तब तक जीव मोक्ष-मार्ग के अनुकूल नहीं होता है। अतएव मोक्ष रूपी महल की प्रथम पंक्ति सम्यग्दृष्टि अर्थात् शुद्ध समकित है। सम्यक्त्व प्राप्त होने पर ज्ञान सम्यग्ज्ञान और चारित्र सम्यकचारित्र हो जाता है। सम्यक्त्व के बिना समस्त प्रयत्न वृथा हो जाते हैं। कहा है-

नरत्वेऽपि पशूयन्ते मिथ्यात्वग्रस्तचेतसः
पशुत्वेऽपि नरायन्ते सम्यक्त्वव्यक्तचेतनाः।

अर्थात् जिनकी आत्मा मिथ्यात्व से जकड़ी हुई है, वे मनुष्य होने पर भी पशु के समान हैं और सम्यक्त्व के द्वारा जिनके ज्ञान-दर्शन गुण व्यक्त हो गए हैं वे पशु भी मनुष्यों के समान हैं।

जैसे बिना अंक के शून्यों की लम्बी राशि का कुछ भी अर्थ नहीं होता उसी प्रकार बिना सम्यक्त्व के चारित्र का मोक्ष के लिए कुछ भी मूल्य नहीं होता। सम्यक्त्व की प्राप्ति होने पर आत्मा में एक प्रकार की अभूतपूर्व शान्ति का अनुभव होने लगता है। उससे पदार्थों का वास्तविक स्वरूप मालूम होने लगता है। राग भाव में न्यूनता आ जाती है और वैराग्य का रस बढ़ने लगता है। सम्यग्दृष्टि पुरुष यह समझने लगता है कि पर-पदार्थ से न तो बन्ध होता है और न मुक्ति होती है। वास्तव में आत्मा की रागवृत्ति अथवा ममता की भावना ही कर्म-बंध का कारण है और वीतराग भाव ही

कर्मों के नाश का कारण है।

वास्तव में जिसके पास धन-धान्य आदि बाह्य परिग्रह नहीं है उसके भी यदि राग की प्रचुरता हुई तो वह कर्मों का अधिक बन्ध करेगा। इसके विपरीत जिस सम्यग्दृष्टि जीव के पास धन-धान्य परिमाण में अधिक है, वह अपने सम्यग्ज्ञान और वैराग्य के कारण उसमें प्रगाढ़ ममता भाव नहीं रखता, उसे निज की वस्तु नहीं समझता और जल में कमल की तरह परिग्रह में अलिप्त होकर रहता है, तो उसके कर्म का बन्ध नहीं होता है। चारित्र मोहनीय कर्म का उदय होने के कारण अल्प द्वेष होता है उससे कर्म का बन्ध होता है। फिर भी वह बन्ध दीर्घ संसार-भ्रमण का कारण नहीं होता है। अज्ञानी का बन्ध संसार-भ्रमण का कारण है और ज्ञानी का बंध मोक्ष में बाधक नहीं होता अर्थात् इस बन्ध के होते हुए भी मोक्ष मार्ग की निर्बाध आराधना होती रहती है।

सम्यग्दृष्टि श्रावक धन-वैभव का संचय करते हैं फिर भी उनके पिछले कर्मों की निर्जरा अधिक होती है। क्योंकि वह भीतर से उस पर मोह नहीं रखते हुए मध्यस्थ भाव रखते हैं। जितने अंशों में राग भाव की कमी होती जाती है उतने ही अंश में कर्मबन्ध में कमी होती जाती है। अतएव हमें चाहिए कि हम आत्मा में अनादि काल से रहे हुए राग-द्वेष विभाव परिणाम को कम करने का प्रयत्न करें। रागभाव की कमी आत्मा अनात्मा के भेद विज्ञान से होती है। कहा भी है-

ज्ञानं विना नास्त्यहितान्निवृत्तिः,
ततः प्रवृत्तिर्न हिते जनानाम्।
ततो न पूर्वार्जित-कर्मनाशः,
ततो न सौख्यं लभतेऽयमभीष्टम्॥

भावार्थ- ज्ञान के बिना जीव अहित से विमुख नहीं होता है और अहित से विमुक्त हुए बिना हित में प्रवृत्ति नहीं होती है। हित में प्रवृत्ति हुए बिना पूर्व उपार्जित कर्म का नाश नहीं होता और पूर्व कर्मों का नाश हुए बिना अभीष्ट सुख की प्राप्ति नहीं होती। तात्पर्य यह है कि सुख को प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम सम्यग्ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

जब सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है तब यह जीव अनुभव करने लगता है कि मैं सुख को प्राप्त करने के उद्देश्य से अब तक दुःख के मार्ग में चलता रहा हूँ। संसार में मोही जीव जिसे सुख कहते हैं वह तो असीम दुःख का भण्डार है। वास्तव में सुख बाह्य पदार्थों में नहीं है। सुख आत्मा का एक स्वाभाविक गुण है और वह आत्मा में ही सदा विद्यमान रहता है। जीव जब अपनी आत्मा का अनुभव करता है तब आत्मा के सुख का भी उसे अनुभव होने लगता है। यह सुख इतना परिपूर्ण है कि इसके सामने इन्द्रियजन्य सुख नगण्य, निस्सार और सर्वथा हेय जान पड़ता है। जैसे कोई क्षीर सागर के मधुर जल का आस्वादन कर चुकने पर साधारण समुद्र के खारे जल को पीने की इच्छा भी नहीं करता। इसी प्रकार आत्मिक सुख का आस्वादन कर चुकने के बाद आत्म-सुख का स्वाद चख लेने पर, इन्द्रियजन्य सुखों की इच्छा भी नहीं होती। इन्द्रियजन्य सुख उस समय विष के समान सर्वथा त्याज्य प्रतीत होने लगते हैं।

आत्मिक सुख का भोग करने से वीतराग भाव बढ़ता है और वीतराग भाव की वृद्धि होने पर निर्जरा की मात्रा में भी वृद्धि होने लगती है। इस प्रकार इन्द्रिय सुख कर्म-बन्ध का प्रबल कारण है और आत्म-सुख कर्म-निर्जरा का सबल सहायक है। इन्द्रिय-सुख तृष्णा की वृद्धि करता है और आत्मिक सुख तृष्णा को नाश करके परम आत्मसन्तोष, साता और शान्ति प्रदान करता है। आत्मिक-सुख पराश्रित नहीं है, इन्द्रिय सुख बाह्य सांसारिक पदार्थों पर आश्रित है। आत्मिक सुख स्थायी है, इन्द्रियजन्य सुख बिजली की चमक की तरह क्षणिक है। ऐसी अवस्था में असली सुख को त्याग कर कौन विवेकी सुखाभास में प्रयत्नशील होगा? कहा है-

बाह्यं सौख्यं विषयजनितं मुञ्चते यो दुरन्तं।
स्थेयं स्वस्थं निरुपममसौ सौख्यमाप्नोति पूतम्।।

अर्थात् जो परिणाम में दुःख देने वाले, बाहरी, विषयजन्य सुख को त्याग देता है वह अपनी आत्मा में स्थित, अविनश्वर, उपमा रहित तथा पवित्र सुख को प्राप्त करता है।

जेतश्री! यदि तुम सच्चा सुख चाहती हो, यदि दुःखों से मुक्त होना चाहती हो, यदि तुम दुर्लभ मानवभव को सफल बनाना चाहती हो और जन्म-मरण आदि के विविध कष्टों से पीड़ित संसार सागर से पार उतरना चाहती हो तो सोचो, विचार करो, अपनी दृष्टि को अन्तर्मुखी बनाओ। बाहरी दृष्टि को बन्द करो। धर्म ही तुम्हारा आधार होना चाहिए, धर्म ही तुम्हारा प्राण होना चाहिए, धर्म ही तुम्हारा ध्येय होना चाहिए, धर्म ही तुम्हारे स्नेह का केन्द्र होना चाहिए। स्मरण रखो, संसार का कोई भी नातेदार किसी की रक्षा नहीं कर सकता। कोई किसी को दुःख से नहीं बचा सकता। सभी अपने-अपने दुःख से दुःखी हैं। जो अपना दुःख दूर नहीं कर सकता वह दूसरे का दुःख कैसे दूर करेगा। अतएव अपने पैरों पर खड़ी होओ, पर सुखापेक्षी न बनो। आत्मा में अनन्त शक्ति है। कर्मों ने उसे छिपा रखा है। अपनी दृष्टि अपने में ही जमाओ। भीतर की ओर देखो- अनन्त शक्तियों का असीम सागर तुम्हारे भीतर लहरा रहा है। उन शक्तियों का सदुपयोग करो। उन्हें प्रकाश में लाओ! उन पर जो मलिनता चढ़ गई है उसे तप की अग्नि के द्वारा, आत्मज्ञान के मंथन द्वारा साफ कर दो। फिर देखना, तुम्हारी आत्मा निर्मल हो जाएगी। उसमें अनन्त प्रकाश की अभिव्यक्ति हो जाएगी। वह प्रकाश आत्मा का प्रकाश है।

जम्बूकुमार ने अपनी आठवीं पत्नी जेतश्री के सामने वैराग्य रस का झरना बहा दिया। उसकी शीतलता का जेतश्री के हृदय पर बड़ा तीव्र प्रभाव पड़ा। इसके अतिरिक्त जम्बूकुमार की प्रबल युक्तियों ने उसके कथन के खण्ड-खण्ड कर दिए। अब जेतश्री के पास कुछ भी कहने योग्य बात नहीं रह गई थी। वह सर्वथा निरुत्तर हो गई। चुपचाप अपनी सहेलियों में जा मिली। इस प्रकार आठों स्त्रियों ने अपना-अपना बल पूरी तरह आजमा लिया फिर भी जम्बूकुमार को अपने पथ से विचलित करने में वे वह असमर्थ रहीं। यद्यपि पहले जैसा प्रगाढ़ मोह उनके हृदय में भी नहीं रह गया था, फिर भी मोह का सर्वथा उपशम भी नहीं हुआ था। अतएव आठों स्त्रियां मिलकर आपस में विचार-विनिमय करने लगीं। (क्रमशः)

उपन्यास (3)

छाया

युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी म.सा.

पूर्ववृत्तः- जिनदत्त और उसकी पत्नी भानुमती दोनों सरल स्वभावी थे। सभी पड़ौसी उनके मृदु व्यवहार से प्रसन्न थे। पुण्य योग से उन दोनों में धार्मिक ऐक्य भी था। दोनों का धर्ममय जीवन बड़े सुख से बीत रहा था। सब प्रकार का सुख उनको प्राप्त था, किन्तु निःसन्तान होने का दुःख भानुमती को कभी-कभी व्यथित कर देता था। तब जिनदत्त विभिन्न युक्तियों से उनके मन को शान्त करता। एक दिन मध्याह्न काल में गृहकार्यों से निवृत्त होकर सेठानी भानुमती गवाक्ष में बैठी मार्ग के नजारे को देख रही थी।

आज सभी में एक विशेष उत्साह है; विशेषरूप से बच्चों और महिलाओं में। बड़े-बूढ़ों में तो मेला-तमाशा देखने का उत्साह नहीं होता और इच्छा भी नहीं होती। ऐसे व्यक्ति जो बड़े तो हैं, पर बूढ़े नहीं, उन्हें अवकाश ही नहीं है, कहीं जाने का। व्यापारी व्यापार से फुरसत नहीं पाते और मजदूर मजदूरी करने चले गए हैं इसलिए टोल-की-टोल स्त्रियाँ ही सज-धज कर चौराहे पर इकट्ठी हो रही हैं। आज कौमुदी महोत्सव का पहला दिन है न, इसीलिए पुरिमताल नगर में इतनी चहल-पहल है पाँच दिन तक यह उत्सव चलेगा। निठल्ले पुरुष-छोकरे, तरुण भी भारी संख्या में जा रहे हैं, पर वे दूसरे पुरुष-पथ से होकर गुजर रहे हैं।

स्त्री-बच्चों के इकट्ठे होने का चौराहा, जिनदत्त के भवन के निकट ही है। मध्याह्नोत्तर बोला-तिपहरी का समय है। सब कामों से निवृत्त होकर सेठानी भानुमती तीसरे खण्ड के गवाक्ष में बैठी इस चहल-पहल को देख रही है कोई जोर से बोलती है, तो उसकी बातें भी सुन लेती है, भानुमती।

एक आई। आते ही बोली- "चम्पा! तू बड़ी जल्दी चली आयी? मैं रोकती रही, तू रूकी भी नहीं।"

चम्पा बोली- "देर तो तूने ही कर दी अनोखी! क्या करती रही अब तक?"

"करती क्या, यह नटखट तो पैदल चलता ही नहीं, इसे लेकर गोद में चलना एक मुसीबत है।"

चम्पा मुस्कुराई। बोली- "मुसीबत तो है ही अनोखी! पेट वाले को लेकर भी तो चलना पड़ता है।.........अरी, मेरा यह तो छह साल का है। पर मचलता ऐसे है, जैसे साल भर का हो। मैंने बहुतेरा समझाया कि अनोखी मौसी को आने दे, पर मचल गया कि जल्दी चलो, जल्दी चलो। इसीलिए तो मैं यहाँ आकर रुक गयी। अभी तो बहुत आ रही हैं।

"बहुत आ रही हैं चम्पा पर लौट भी तो बहुत रही हैं। इसे हाथी का खिलौना दिलवा दूँ। चल, अब तो चल।"

"चलते हैं अनोखी!" चम्पा बोली- "राधा और ललिता को भी आ जाने दे। नहीं तो फिर वे भी तेरी तरह उपालम्भ देंगी।"

चम्पा और अनोखी ललिता, राधा आदि सखियों की प्रतीक्षा करने खड़ी हो गयीं। यह स्थान ममता और वात्सल्य का संगम-सा हो गया। कोई माता अपने रोते बच्चे के मुँह में मिठाई देकर उसे चुप कर रही थी। कोई दूर खड़ी होकर कह रही थी- "अच्छा, दौड़कर मुझे पकड़ ले, तब गोद में लूँगी।" गोदलिप्सा के कारण बालक ठुमक-ठुमक कर दौड़ता और माता धीरे-धीरे पीछे खिसकती जाती। बालक जितना आगे बढ़ता उसकी माता की गोद उतनी ही दूर हो जाती। फिर तो बालक मचल ही गया और वहीं बैठ गया। विवश होकर वात्सल्यमयी माता को बालक के पास आना पड़ा और उसने उसे लेकर ऊपर उछालकर कहा- "अच्छा, अब आगे उतर जाना। तब मैं तेरी अँगुली पकड़ लूँगी।"

बालक ने अपने पैंतरे से माँ का दाँव काटा- "तो तुम मेरे लिए बहुत-से खिलौने ले दोगी?"

हाँ-हाँ बहुत से लूँगी। यह कहते हुए माता ने बालक का मुख चूम लिया।

एक माता ने अपने लाड़ले को धमकाया-"देख, रोयेगा तो यह बाबाजी पकड़ लेगा।"

सचमुच ही बालक जटाधारी बाबा को देखकर चुप हो गया। कोई छोटे-से शिशु को चूमती हुई चल रही थी। कोई माता खड़ी-खड़ी अपने लाड़ले के हाथों से कबूतरी को दाना चुगवा रही थी।

भानुमती माता-पुत्रों की अनोखी मोदकारी साकार छवि को देख रही थी। देखते-देखते उसके धीरज का बाँध टूट गया। आँखे भर आयीं और टप-टप आँसू गिरने लगे। उसके वात्सल्यरस के मातृत्व सरोवर में करुणा-सागर उमड़ चला। आँखे गंगा-जमुना बन गयीं। सोचने लगी भानुमती- 'हा कन्त! तुम मुझे दिलासा देकर बहलाते हो, पर मैं कैसी अभागिन नारी हूँ। ये माताएँ कितनी धन्य हैं! मैंने व्यर्थ ही नारी-देह पायी। जो नारी माता न बने, वह भी कोई नारी है? पिता का नाम सन्तान से ही चलता है, वह बात भी समझ में आ गयी। पर मेरे वक्ष प्रदेश में कभी क्षीर-सागर नहीं उमड़ेगा और मैं ममता का आनन्द लिये बिना कैसे जीवित रह सकूँगी! मेरे भी कोई पुत्र होता तो मैं भी उसे लेकर कौमुदी महोत्सव के मेले में जाती। उसे ऊपर उछालती, चूमती, गोद में लेकर चलती और न जाने क्या-क्या करती?"

भानुमती की खिन्नता तो हमने स्पष्ट देख ली। इसी पुरिमताल नगर में ऐसी अनेक माताएँ भी थीं, जो पुत्रों के होते हुए भी खिन्न होकर सोच रही थीं- 'ऐसे मेले में कैसे ले जाऊँ? नये कपड़े पहनने को मचल रहा है और पास में साबुत-पुराना भी नहीं है। मिठाई खरीदने को एक मेंमुदी तक नहीं। हे निष्ठुर देव! तू पुत्र देता है तो उनके रुदन को हास्य में बदलने के लिए धन क्यों नहीं देता?'

ऐसी निर्धन महिलाएँ भी मेले में नहीं जा रही थीं और धनवती भानुमती पुत्रहीन होने के कारण मेले की बहार देखकर रो रही थी। क्योंकि रूठते-मचलते और किलकारियाँ भरते बालक ही आज मेले की बहार थे और पुत्रवती माताएँ इस बाहर की आश्रय थीं। रोती रही भानुमती। पर कब

तक रोती? उसके आँसू तो सूख गये, पर गोरे कपोलों पर अपने चिह्न छोड़ गये और आँखों में सूनापन भी।

जिनदत्त ऊपर पहुँचा। उसने आज पहली बार अपनी प्रिया को ऐसा उदास और दुःखी देखा था। देखा तो सिहर गया और बोला-"प्रिये! आशा के विपरीत आज मैं क्या देख रहा हूँ। तेरा जिनदत्त निरा बनिया ही नहीं है, वह खड्ग चलाना भी जानता है। बता, आज किसे मृत्यु सुखकर लगी है? किसने तेरा मन दुखाया है?"

कुछ नहीं बोली भानुमती, बल्कि सिसक-सिसककर पुनः रोने लगी। जिनदत्त ने अपने करचीर से आँसू पोंछ डाले। वक्ष से लगा लिया निजप्रिया को। बोला-"मेरे मन में आशंकाएँ न भरो प्रिये! क्या तुम्हें मेरे ऊपर इतना विश्वास अब नहीं रहा कि तुम्हारा मन दुखाने वाले को मैं नष्ट कर दूँगा? तेरे मौन से तो मैं स्वयं भी बहुत दुखी हो जाऊँगा।"

पति के प्रेमाग्रह से भानुमती को बोलना पड़ा। वह बोली-"प्राणेश्वर! मेरे दुःख को तो आप भी जानते हैं। मेरा वह दुःख आपका भी दुःख रहा है। पुत्र के बिना हमारा घर-आँगन सूना है, भाग्य की प्रबलता देखकर आप धैर्य धारण किये रहते हैं और मैं भी दिन काट रही हूँ। पर आज तो मैं नहीं सह पायी। आज जो देखा, उससे मेरी पुत्र देखने की छिपी इच्छा चीत्कार कर उठी।"

"स्वामिन्! आप तो दुकान पर थे। यहाँ बैठी मैं उन धन्यभाग्य नारियों को देख रही थी, जो अपने बालकों की व्याकरणहीन तोतली वाणी सुनकर पुलकित हो रही थीं। वे स्त्रियाँ कितनी धन्य थीं, जो स्त्रियाँ होने के साथ माताएँ भी थीं और जो अपने धूल-धूसरित बच्चों को उसी तरह उठा लेती थीं, जैसे लोभी अपने मूल्यवान वस्त्रों की परवाह किये बिना धूल में लिपटे हीरे को उठा लेता है।

"स्वामिन्! मैं बन्ध्या हूँ। बंजर भूमि की तरह मेरा होना, न होना एक-सा ही है। एक पुत्र के बिना मेरा जीवन भार है। वात्सल्यरस में अवगाहन करते, जब आज मैंने पुरिमताल की नारियों को देखा तो अपने

को धिक्-धिक् करके कोसने लगी। यही मेरा चिरपोषित दुःख है अब और क्या कहूँ स्वामी?"

मिठास भरी वाणी में बोला जिनदत्त- "प्रिये! तू तत्त्व को जानकर भी खिन्न होती है। दुःख का कारण अपने सोचने का ढंग ही है। विडम्बना यह है कि सन्तान वाले भी दुःखी हैं और निस्सन्तान भी। सुख तो यहाँ कहीं भी नहीं हैं। (क्रमशः)

विचार-मोती

1. संसार का पथ है-प्रवाह में बहना, मोक्ष का पथ है - प्रवाह के विरोध में बहना।
2. धन, भोग, परिवार में जो सुख मानता है, वह अनाथ है और जो अपने में जीता है वह नाथ है।
3. आँख खुली है तब तक अपने हैं, आँख बन्द हुई तो सब पराये हैं।
4. जिनकी शरण में जाने से कषाय बढते हैं वे शरणभूत नहीं हैं। जिसकी शरण में जाने से कषाय-शमित होते हैं, वे शरणभूत हैं।
5. जिस ज्ञान से आचरण में पवित्रता न आती हो, धर्मभावना न बढती हो, नैतिकता न बढती हो, वह ज्ञान नहीं हैं, सिर्फ जानकारियाँ हैं।
6. निगोद से मनुष्य की साधना हमने करली, अब आत्मा से परमात्मा बनने की साधना करनी है।
7. धार्मिक व्यक्ति के जीवन में आने वाले दुःख उन्हें कर्ममुक्त कराने के लिए आते हैं।
8. धर्म का फल है :- दुःख आने पर भी दुःखी न होना।
9. सुख के प्रति राग और दुःख के प्रति द्वेष कर्मबन्ध के कारण हैं।
10. दुःख से घबराये नहीं, यह हमारा हितैषी है।
11. दुःख के प्रति विरोध ही कर्मबन्ध का कारण है।
12. भूत को बदला नहीं जा सकता है, अतः वर्तमान को बदलो।

नारी-स्तम्भ

गुरु सहयोग से आत्म-विकास

श्रीमती सुनीता डागा

सुनने को तो कई बार सुना- '**अप्प दीपो भव!**' लेकिन व्यावहारिकता के धरातल पर उतरे तो पग-पग पर पसीने छूटे।

बड़ी ही व्यावहारिक बात है कि अपना दीपक खुद अपने बनो अर्थात् स्वयं को भीतर से इतना दहकाओ कि जिससे भीतर में रहे अज्ञान रूपी अंधकार जल कर राख हो जाये और ज्ञान रूपी लौ प्रकट हो जाये। कारण जिस तरह की आधुनिकता की लहर इस समाज में चल रही है, उसमें सामने वाला आपके लिए दीप प्रज्वलित कर ज्योति प्रदान करेगा ऐसी अपेक्षा व्यर्थ है। संबंधों का दायरा संकुचित होता जा रहा है-

"माँ के लिए भी वही नन्दन प्यारा।
जिसके हाथ में हो नोटो का बंडल न्यारा।।"

जमीन-जायदाद के लिए भाई भाई का, बेटा बाप का खून कर रहा है तो दूसरी ओर हमारी संस्कृति नष्ट करने के पुरजोर प्रयास चल रहे हैं-स्कूलों में Sex Education, मोबाइल, टी.वी. आदि। ऐसे में अन्तर्मन को रोशनी देने वाला दीपक कोई ओर जलायेगा ऐसी आशा रखना महामूर्खता होगी।

आगम में भी कहा है- '**अप्पा मित्तममित्तं च**'। अर्थात् अपनी आत्मा ही मित्र है एवं शत्रु है। यह आत्मा का दीपक तेल और बाती से नहीं जलता, यहाँ संयम रूपी तेल-बाती का प्रयोग करना होता है। संकल्प रूपी बाती और सम्यग्ज्ञान रूपी तेल भर कर लक्ष्य रूपी लौ से प्रज्वलित करना होता है तभी मोक्ष रूपी ज्योति प्रकट हो जग में उजियारा करती है और यह तभी संभव है कि हमें सद्गुरु की शरण प्राप्त हो।

"**बिन गुरु होइ न ज्ञान**" सन्मार्ग पर चलना है तो सद्गुरु की शरण परम

आवश्यक है।

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्ति मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यम्।
पूजामूलं गुरोश्चरणं, मोक्षमूलं गुरोः कृपा॥

गुरु के शुभाशीर्वाद में तो मोक्ष प्रदान करने की ताकत रही हुई है। वे शिष्य धन्यतम हैं जो गुरु के हृदय में वास करते हैं। अरे! वे शिष्य भी धन्य हैं, जिनके हृदय में गुरु का वास है। चरण वहीं पड़ें जहाँ गुरु की शरण हो, नयन वहीं देखे जो गुरु दिखाये, सांस वही सार्थक जिसमें गुरुज्ञा रूपी ऑक्सीजन हो। गुरु कृपा अगर प्राप्त हो जाये तो मोक्ष रूपी दीपक जलते देर न लगेगी। पढ़ा था कहीं- बुद्ध मृत्युश्य्या पर पड़े थे। उनका प्रिय शिष्य आनंद उनसे बिछोह को समझ नहीं पा रहा था, लेकिन उसकी एक चिंता अन्य भी थी, वह रोने लगा, बुद्ध ने रोने का कारण पूछा तो आनंद ने बताया- "अब मैं क्या करूँगा? आप जा रहे हो और मुझे तो अभी ज्ञान भी नहीं मिला।"

बुद्ध के चेहरे पर एक रहस्यमयी मुस्कान झलक आयी। उन्होंने आनन्द से कहा- "रोओ मत, क्योंकि मैं तुम्हें ज्ञान नहीं दे सकता, तुम्हें स्वयं अपना प्रकाश बनना होगा- **'अप्प दीपो भव!"**

यह छोटा सा मंत्र एक जीवन दर्शन ही नहीं, 'जियें कैसे' का उत्तर ही नहीं अपितु वर्तमान पीढ़ी के लिए एक आह्वान भी है- "आओ! सद्गुरु रूपी दीपक के सामने कषायों की अग्नि को भस्मीभूत कर सम्यक् ज्ञान रूपी लौ बनकर जले ताकि समता के आंगन में सद्गुणों के दीप जले और उस रोशनी से जीवन पथ आलोकित हो ताकि लक्ष्य पर दृष्टि रख पवित्र भावना से पूरी शक्ति लगाकर देदीप्यमान बनें और अज्ञान रूपी अंधकार का नाश कर **'अप्प दीपो भव'** की इस उक्ति को सार्थक करें।

-E-301, New Ashok Nagar, B-1, Vazeera Naka,
L.T. Road, Borivali(w), Mumbai (Mh.)

कल का दिन किसने देखा, आज का दिन खोयें क्यों।
जिन घड़ियों में हँस सकते हैं, उन घड़ियों में रोएँ क्यों॥

स्वास्थ्य विज्ञान

खिंचाव चिकित्सा

डॉ. चंचलमल चोरड़िया

मांसपेशियों पर विजातीय तत्त्वों के जमा हो जाने के कारण शरीर के उस भाग पर प्राण ऊर्जा के प्रवाह में अवरोध होने लगता है। फलतः रक्त का प्रवाह बराबर नहीं हो पाता एवं व्यक्ति को दर्द या पीड़ा के रूप में रोग की अनुभूति होने लगती है । उस भाग का हलन-चलन प्रभावित होने लगता है। जितना ज्यादा अवरोध होता है, उतनी ही अधिक समस्याएँ होने लगती हैं।

अतः यदि किसी भी विधि द्वारा उन जमे हुए विकारों को दूर कर दिया जाय तो पुनः प्राण ऊर्जा और रक्त का प्रवाह आश्यकतानुसार होने लगता है और पीड़ा में आराम मिलने लगता है। **मांसपेशियों पर जमे विजातीय तत्त्वों को दूर करने का एक सरल उपाय शरीर के उस संबंधित भाग की मांसपेशियों का किसी भी विधि द्वारा हलन-चलन करना। अर्थात् उस भाग को सिकोड़ना और फैलाना, आगे-पीछे, ऊपर-नीचे, दांये-बांये जितना घुमाया जा सके, कुछ देर तक धीरे-धीरे घुमाने का प्रयास करना। ऐसा करने से वहाँ पर जमे विकार हटने लगते हैं और रोगी स्वस्थ हो जाता है।**

कपिंग चिकित्सा -

शरीर में बहुत सी मांशपेशियाँ ऐसी हैं, जिनका हलन-चलन इच्छानुसार करना आसान नहीं होता है। ऐसी मांसपेशियों पर हल्का-हल्का मसाज कर विकारों को हटाया जा सकता है। उन विकारों को दूर करने का एक सरल तरीका और भी है, जो खिंचाव (Suction) के सिद्धान्त पर आधारित है। टेनिस की गेंद के दो बराबर भाग करने से कप के आकार के दो भाग हो जाते हैं। **उपचार हेतु ऐसे कपों का प्रयोग करने से उपचार की इस विधि को कपिंग चिकित्सा भी कहते हैं।**

किसी भी स्थान की सफाई करने के लिए प्रायः आंगन पर झाड़ू लगाया जाता है। विशेष अवसरों पर अधिक स्वच्छता हेतु आंगन को पानी, साबुन अथवा अन्य रसायनों द्वारा स्वच्छ किया जाता है। परन्तु जहाँ ऐसा करना संभव नहीं होता

वहाँ वायु के दबाव द्वारा सफाई की जाती है। परन्तु आँगन पर बिछे गलीचे, दरी आदि पर जमी धूल को हटाने के लिये आजकल वेक्यूम क्लीनर से खिंचाव द्वारा मिट्टी को दूर किया जाता है। इसी प्रकार जिन मांसपेशियों पर विकार जमा हो जाते हैं, वहाँ गेंद के कपों को त्वचा पर रख, दबाने से उनके अन्दर की वायु निकल जाती है। कप के अन्दर शून्यता हो जाने से कप त्वचा पर चिपककर खिंचाव पैदा करने लगता है। उस स्थान पर खिंचाव बढ़ने से प्राण ऊर्जा और रक्त का प्रवाह बढ़ने लगता है। अवरोध के कारण रक्त वाहिनियाँ जो सिकुड़ जाती है, पुनः फैलने लगती हैं। परिणाम स्वरूप विजातीय तत्त्व उस स्थान से दूर होने लगते हैं और रोगी स्वस्थ होने लगता है। कपों को लगाने का तरीका हम निम्न चित्रों द्वारा भी समझ सकते हैं।

कमर, घुटनों, हाथ-पैर संबंधी रोगों में यह उपचार बहुत प्रभावशाली एवं शीघ्र राहत दिलाता है। मेरुदण्ड संबंधी रोग विशेषकर स्लिप डिस्क एवं साइटिका में लाभदायक होता है। वात संबंधी रोगों में कपिंग उपचार से शीघ्र आराम मिलने लगता है। फंसी हुई वायु अथवा गैस शीघ्र अपना स्थान छोड़ देती है। वात रोगों में कप द्वारा खिंचाव रोगी को प्रायः अच्छा लगता है। जो विजातीय तत्त्व दबाव और मसाज द्वारा दूर नहीं होते उन्हें दूर करने में खिंचाव से अच्छे परिणाम आते हैं।

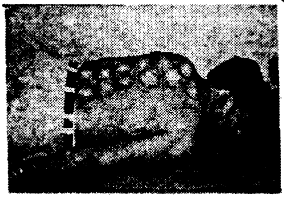

सीने पर इस प्रयोग से फेंफड़े मजबूत होते हैं। उन पर जमा कफ दूर होने लगता है। प्रारम्भ में 5-6 मिनट तक कप लगाकर उसके प्रभाव का अनुभव करना चाहिए। स्वस्थ अवस्था में प्रतिदिन हृदय और डायाफ्राम पर कप उपचार करने से हृदय और डायाफ्राम की कार्यक्षमता बढ़ती है। खिंचाव उतना ही दें जो सहनीय हो।

सावधानियां- कोई भी उपचार करते समय रोगी की अवस्था एवं उपचार से होने वाली प्रतिक्रिया का विवेक एवं सजगता पूर्वक ध्यान आवश्यक होता है। उसके अभाव में उपचार से अपेक्षित परिणाम नहीं मिलते। उपचार करते समय रोगी को

उपचार का सिद्धान्त समझाने से उसका आत्म विश्वास, श्रद्धा और सजगता बढ़ जाती है और उपचार अधिक प्रभावशाली बन जाता है। **अश्रद्धा और अनचाहा जबरदस्ती किया गया उपचार अपेक्षित परिणाम नहीं दे सकता।** त्वचा पर कप लगाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उस स्थान पर बाल न हों, बाल होने से कप में वायु की शून्यता न हो सकेगी। फलतः कप आवश्यक खिंचाव पैदा नहीं कर सकेगा। अतः बाल साफ करना आवश्यक होता है। अथवा जहाँ मामूली बाल हो उस स्थान पर पानी लगाना चाहिये ताकि कप में शून्यता की जा सके।

उपचार के पश्चात् कप को हटाने हेतु कप पर ताकत से सीधा खिंचाव नहीं देना चाहिए। परन्तु कप के चारों ओर के पास वाली त्वचा को दबाने से कप में वायु चली जाती है और अन्दर शून्यता समाप्त होने से कप से त्वचा का खिंचाव स्वतः समाप्त हो जाता है और कप वहाँ से स्वतः हट जाते हैं।

शरीर के कोमल अंगों अथवा बहुत छोटे बच्चों जिनकी त्वचा बहुत अधिक कोमल होती है, कपिंग उपचार जहाँ तक हो, नहीं करना चाहिए। अल्सर, घाव, चोट एवं फ्रेक्चर के समय उन स्थानों पर कप नहीं लगाने चाहिए।

-चोरड़िया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर (राज.)

बाल-स्तम्भ [दिसम्बर-2008] का परिणाम

जिनवाणी के दिसम्बर-2008 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'धूर्त की अमानत' कहानी के प्रश्नों के उत्तर कई बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 20 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	रत्नेश जैन-हिण्डौन	19.5
द्वितीय पुरस्कार-200/-	कानन जैन-जोधपुर	19.25
तृतीय पुरस्कार-150/-	गरिमा जैन-कोटा	19
सान्त्वना पुरस्कार-100/-	पूजा तातेड़-चेन्नई	18.5
	नीरज खींवसरा-जोधपुर	18.5
	सूचिता जैन-कपासन	18.5
	अंजलि जैन-हिण्डौन	18.5

बाल-स्तम्भ

संस्कार-परिवर्तन

श्री मधुकर मुनि जी म.सा.

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 मार्च 2009 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

राजा श्रेणिक द्वारा लाख प्रयत्न करने पर भी काल-सौकरिक कसाई ने अपना धन्धा बन्द नहीं किया। और तो क्या, एक दिन के लिए भी जीव-हिंसा नहीं छोड़ सका। उसकी यह क्रूरता, निर्दयता एवं हिंसकवृत्ति देखकर अभयकुमार के मन में आया- मनुष्य के संस्कार भय से नहीं बदल सकते, प्रलोभन से भी किसी हिंसक को अहिंसक नहीं बनाया जा सकता। किन्तु प्रेम एवं ज्ञान द्वारा समझाने पर ही उसका व्यवहार बदल सकता है। कालसौकरिक के हिंसा के संस्कार बद्धमूल हो गये थे, इसलिए अब वे बदले नहीं जा सकते, किन्तु कहावत के अनुसार-'बापू जैसा बेटा' निकला तो फिर राजगृह में हिंसक परिवार निरन्तर बढ़ता ही जायेगा। अतः उसकी सन्तान में हिंसा के संस्कार नहीं आयें, ऐसा प्रयत्न करना चाहिए। यह विचार कर अभय ने काल के पुत्र सुलस के साथ मित्रता बढ़ाई। उसे कभी-कभी भगवान् का उपदेश सुनने भी ले जाता और समय-समय पर हिंसा के कटुफल बताना, अहिंसा की अमृतफलदायिनी महिमा सुनाना आदि प्रयत्न करता रहा। अभय की संगत ने रंगत दिखाई। सुलस हिंसा से घृणा करने लगा, वह अपना पैतृक धन्धा छोड़कर किसी सात्त्विक आजीविका की खोज में लग गया।

एक बार कालसौकरिक भयंकर रोग का शिकार हो गया। अनेक उपचार

किये, पर रोग बढ़ता ही गया। वैद्यों ने कह दिया- अब इसका अन्तिम समय आ गया है, शरीर में अनेक महारोग उत्पन्न हो गये हैं। वह दारुण-व्यथा से पीड़ित होकर जोर-जोर से चिल्लाता, हाय माँ! हाय बाप रे! आदि शब्दों से क्रन्दन करता हुआ आर्तनाद करता। उसका पुत्र सुलस उसे ज्यों-ज्यों अनुकूल सामग्री देता, चन्दन आदि का लेप करता, शीतल जल पिलाता, स्वादिष्ट भोजन देता, मधुर शब्द सुनाता, त्यों-त्यों कालसौकरिक पीड़ा से भयंकर आर्तनाद करता, उसे अनुकूल साधन कान या जीभ में शूल चुभने जैसे अत्यन्त कष्टकर लगते।

पिता की यह करुण-दशा देखकर सुलस बहुत चिन्तित हुआ। नगर के सभी वैद्यों ने हाथ खड़े कर दिये थे। अब सुलस अपने सुहृद्वर अभयकुमार के पास आया और पिता की चिन्ताजनक दशा बताई। धर्मपरायण अभयकुमार ने कहा- "सुलस! अब तुम्हारे पिता का अन्तिम समय आ गया है। उसने इस जीवन में जो भयंकर पापकर्म किये हैं, उनके फलस्वरूप नरकगति में जाना तो निश्चित ही है, अन्तिम समय में इस प्रकार की दशा नरकानुपूर्वी आने की सूचना देती है। उनके तीव्र पापकर्मों का फल-विपाक अत्यन्त दारुण है।" इधर पुत्र सुलस से अपने पिता के दारुण दुःख देखे नहीं जाते थे। वह मन ही मन विचार करता कि जब इस जन्म में ही ये इतने दारुण पापों का फल प्रत्यक्ष भोग रहे हैं, तो नरक में इनका कितना बुरा हाल होगा?' विचार करते-करते हिंसा से उसे अत्यन्त घृणा होने लगी। देखते-देखते कालसौकरिक ने आँखें मूँद लीं। वह मर कर सातवीं अप्रतिष्ठान नामक नरक में गया।

पिता की मरणोत्तरक्रिया सम्पन्न कर सब स्वजन एकत्र हुए और सुलस से कहा-"अब तुम अपने पिता की गद्दी पर बैठकर उनका व्यवसाय सम्भालो, ताकि अपनी कुल-परम्परा चलती रहे, हम सब सनाथ बने रहें।"

सुलस ने कहा- "मैं यह घोर हिंसा का धंधा नहीं कर सकता। मैंने इन क्रूर कर्मों का दारुण फल भोगते इस जन्म में ही अपने पिता को प्रत्यक्ष देखा है, अगले जन्म में तो उन्हें और भी कटुफल मिलेंगे। मुझे जैसे अपने प्राण प्यारे हैं, वैसे ही अन्य प्राणियों को भी अपने प्राण प्यारे लगते हैं, फिर उन मूक जीवों की घात करने का मुझे क्या अधिकार है? मैं इतना क्रूर कर्म कदापि नहीं कर

सकता। मैं हिंसा के कटुफलों को जान चुका हूँ।"

सुलस की बातें सुनकर स्वजन आपस में बातें करने लगे-"संगत ने असर दिखा दिया। अभयकुमार की संगत में जब से यह जाने लगा, तभी हमने पहचान लिया-सुलस अब अपनी बिरादरी से गया।" फिर भी कुछ वृद्धजनों ने एक भैंसा मँगवाया और जबर्दस्ती सुलस के हाथ में तलवार देकर कहा- "सुलस! तुम्हें अपनी कुल-परम्परा का पालन करना ही चाहिए। लो, इस भैंसे पर तलवार का तेज प्रहार कर अपने कुल-धर्म-पालन की शपथ लो।"

सुलस ने कहा-" मैं इस निरीह पशु को मौत के घाट नहीं उतार सकता। इसने मेरा क्या अपराध किया है? क्यों इसकी हिंसा का पाप मैं अपने सिर पर बाँधू?"

वृद्धजन बोले- "सुलस! यदि प्राणिवध से पाप भी होगा तो हम सब तेरा पाप बाँट लेंगे, जैसे बाप के धन को पुत्र मिलकर बाँटते हैं, उसी प्रकार हम तेरे पाप-फल का बँटवारा कर लेंगे, डरो मत! हम सब तुम्हारे स्वजन हैं, तुम पहला भैंसा शीघ्र मारो!"

वृद्धजनों के आग्रह से सुलस ने हाथ में तलवार उठाई, सभी देख रहे थे कि सुलस का दिमाग ठीक हो गया है, पर यह क्या? प्रहार भैंसे पर नहीं, उसने अपनी जाँध पर कर डाला, जाँघ से खून बहने लगा और वह जोर से चीख उठा- "अरे बापरे! इस चोट से मैं घायल हो गया। बन्धुओं! स्वजनों! मैं पीड़ा से बेचैन हूँ, तुम मेरी वेदना को बाँट लो, मेरा दुःख लेकर मुझे इससे बचाओ। खड़े-खड़े क्या देखते हो? आओ! तुम मेरी पीड़ा का हिस्सा बँटाओ।"

सुलस की पुकार पर वे बोले-"सुलस! तुम्हारा दिमाग बिगड़ गया है? तुम्हारी पीड़ा दूसरा कोई कैसे बँटा सकता है?"

सुलस- "सचमुच, मेरी पीड़ा तुम लोग नहीं बँटा सकते?"

"नहीं! नहीं! अपनी तकलीफ खुद को ही भोगनी पड़ती है!"-बन्धुओं ने कहा।

सुलस ने तभी आँखें तरेरकर कहा- "धूर्तो! तुम लोग अभी कह रहे थे-पैतृक धन की तरह हम तुम्हारे पाप-फल को बँटा लेंगे और अब बदल गये? जब मेरी इतनी-सी पीड़ा भी नहीं बँटा सकते तो नरक में उन भयंकर वेदनाओं से बचाने

के लिए तुम कैसे आओगे? क्या कोई मुझे वहाँ अपने घोर पाप-फलों से बचाने आ सकेगा? झूठ! सब झूठ! अपना किया पाप अपने को ही भोगना पड़ता है। मैं अपने पिता को उनकी वेदना से नहीं बचा पाया तो मुझे कौन बचा सकेगा? मैं नहीं करूँगा यह पाप कर्म।''

सुलस इस प्रकार हिंसा-मूढ पारिवारिकजनों को ललकार ही रहा था कि तभी उस भीड़ में से अभयकुमार निकलकर आगे आया। सुलस को छाती से लगाते हुए उसने कहा- ''शाबाश सुलस! तुमने बहुत ही सुन्दर काम किया। तुम्हारा विचार सर्वथा सत्य है। वंश-परम्परा के पाप-पंक में फंसने की अपेक्षा तुमने दूर से ही उसका त्याग कर दिया है। किसी का पिता अंधा हो तो क्या पुत्र को भी अंधा होना जरूरी है? पिता के हिंसा-कृत्यों का पालन करना पुत्र के लिए कोई जरूरी नहीं है। तुमने अपनी आत्मा का विचार किया, धन्यवाद तुम्हें!''

पारिवारिकजन नीचा मुँह किये देखते रहे। सुलस ने तलवार फेंक दी, भैंसे को मुक्त कर दिया और अभयकुमार का अभिवादन कर उसने घोषणा की- ''मैं आज से अहिंसा धर्म का पालन करूँगा। सात्त्विक वृत्ति से अपनी जीविका चलाकर भगवान् महावीर का श्रावक बनूँगा।'' अभयकुमार के सत्संग से धीरे-धीरे कसाई-पुत्र सुलस परम्परागत कुसंस्कारों से मुक्त होकर बारह व्रतधारी श्रावक बन गया। हृदय-परिवर्तन का यह अद्भुत प्रयोग अभयकुमार की बुद्धि-कुशलता ने दिखाया। **-जैन कथामाला, भाग 9 से गृहीत**

प्रश्न :-

1. कालसौकरिक के जीवन में परिवर्तन क्यों नहीं हो पाया था?
2. पिता की अन्तिम स्थिति को देखकर सुलस के विचारों में क्या बदलाव आया?
3. ''संगति के प्रभाव से विचार और आचार बदल जाते हैं''- किसी घटना, संस्मरण या कथा के माध्यम से प्रतिपादित कीजिये।
4. संधि-विच्छेद कीजिये- नरकानुपूर्वी, मरणोत्तरक्रिया, कदापि।
5. अर्थ बताइये- बद्धमूल, अनुकूल, दारुण, बिरादरी।

संवाद (20)

माह दिसम्बर-2008 की जिनवाणी में पूछे गये निम्नांकित प्रश्न के कतिपय उत्तर यहाँ प्रकाशित हैं-

प्रश्न-मैं दसवीं कक्षा का छात्र हूँ और मेरी रुचि जीव विज्ञान में है। मैं आगे एम.बी.बी.एस. करना चाहता हूँ। समस्या यह है कि धार्मिक संस्कारों एवं परम्परावादी विचारों वाली मेरी माँ नहीं चाहती कि मैं मेंढक आदि काटूँ और इस विषय का अध्ययन करूँ। अतः आप बताइये कि मैं अपनी माँ को कैसे सन्तुष्ट करूँ?

-राजीव जैन, जोधपुर

नेमीचन्द कटारिया, अजमेर- आचारांग सूत्र के चतुर्थ अध्ययन के द्वितीय उद्देशक में कहा गया है कि-

जे आसवा ते परिस्सवा, जे परिस्सवा ते आसवा।
जे अणासवा ते अपरिस्सवा, जे अपरिस्सवा ते अणासवा।।

उपर्युक्त वाक्य में बताया गया है कि जो आस्रव कर्मबंध के स्थान हैं वे ही कर्म निर्जरा के स्थान बन जाते हैं और जो कर्म-निर्जरा के कारण हैं वे आस्रव हो जाते हैं। जो अनास्रव व्रत विशेष हैं वे भी अशुभ अध्यवसाय वाले के लिए कर्मबंध के कारण हो जाते हैं। जो परिस्सव पाप के कारण हैं वे कदाचित् कर्मबंध के कारण नहीं होते हैं और ज्ञानी पुरुषों के लिए वे कर्म-निर्जरा के स्थान हो जाते हैं।छात्र में जीव विज्ञान की शिक्षा प्राप्त कर मानव-सेवा की भावना है तो निश्चय ही उसके लिए वह कर्मबंध का कारण नहीं होगी। बहुधा जीव हिंसा द्वेष भावना, धन प्राप्ति, पेट भरने, स्वाद, यशकीर्ति व मौजमस्ती के लिए की जाती है।

परिवार धार्मिक संस्कार युक्त है, इसका असर बच्चे पर भी पड़े बिना नहीं रह सकता। माँ के मनोभाव बच्चे में प्रतिभासित होते हैं। किसी उच्च व श्रेष्ठ उद्देश्य की प्राप्ति हेतु अकरणीय कार्य भी स्वीकार्य होता है। जैन धर्म में अहिंसा व्रत श्रमण वर्ग पूर्णरूप से पालता है जबकि श्रावक वर्ग के लिए कुछ आगार का विधान है। श्रावक अहिंसा व्रत दो करण तीन योग से लेता है। प्रेक्टिकल ट्रेनिंग के अतिरिक्त विद्यार्थी स्वयं मेढ़क नहीं काटता है और यथाशक्ति टांके लगाकर उसे जीवित रखने का प्रयास भी करता है। शिक्षक भी जीव विज्ञान की शिक्षा 15-20 विद्यार्थियों को एक साथ देता है।

एक डॉक्टर प्रतिमाह लगभग 100 ऑपरेशन करता है वर्ष में 1200 एवं

अपने जीवनकाल में लगभग 40000ऑपरेशन करके मानव की प्राण रक्षा करता है,साता पहुँचाता है। जहाँ तक माँ को समझाने का प्रश्न है, सभी बिन्दु उनको समझाने चाहिये। यहाँ एक प्रसंग लिखना उचित होगा- कोई माँ-बेटे बाजार से गुजर रहे थे, यातायात तीव्र गति से आ-जा रहा था। तभी संयोगवश आमने-सामने से आ रही दो बसों का एक्सीडेन्ट हो गया, खून की नदियाँ बहने लगी, दर्द के मारे लोग चिल्ला कर मदद की गुहार कर रहे थे, छटपटा रहे थे। लेकिन योग्य डॉक्टर नज़र नहीं आ रहा था, जो कुछ राहत दिला सके, बहते खून को रोक सके। माँ-बेटे का धार्मिक हृदय करुणा से रो रहा था। दोनों सेवा में जुटे हुए थे, ड्रेसिंग भी कुछ हद तक दी जा रही थी, इसके आगे दोनों असहाय प्रतीत हो रहे थे। इस दृश्य को देखकर बेटे की भावना पुनः डॉक्टर बनने की हुई, उसने माँ से अनुरोध किया और आज्ञा माँगी। माँ ने उसके सुझाव को स्वीकार कर लिया, प्रत्याख्यान के साथ अनुमति पा कर छात्र अति प्रमुदित हुआ।

श्रीमती पुष्पा मेहता,पीपाड़ सिटी- जैन धर्म कभी भी हिंसा का उपदेश नहीं देता है। जिसकी माँ धार्मिक संस्कारों वाली है, घर के संस्कार धार्मिक हैं वह भला कब किसी को मारने या काटने की बात करेगा, वह तो हमेशा जोड़ने का प्रयास करेगा। जीवों को काटने का कार्य मात्र कसाई करता है, एक जैन व्यक्ति नहीं। अतः आप अपनी माता को संतुष्ट करने के लिए तथा अपने संस्कारों को सुरक्षित रखने के लिए अपने अध्ययन का विषय बदलिए।

श्री लक्ष्मीचन्द जैन, छोटी कसरावद- आप अपनी माताजी से कहिए कि आप चिन्ता न करें मैं अपनी पढ़ाई अहिंसक तरीके से करूँगा। क्योंकि वर्तमान में जीव विज्ञान में जीवित मेंढ़क का बिना डिसेक्शन किए भी पढ़ाने की विधि प्रयोग में लाई जा रही है। अगर आपके यहाँ इस विधि का प्रयोग न हो रहा हो तो आप अहिंसक चिकित्सा पद्धतियों में भी एम.बी.बी.एस. कर सकते हैं।

(यहाँ तीनों उत्तरदाताओं के उत्तरों में भिन्नता है। उद्देश्य पवित्र हो, शोषण का नहीं सेवा का हो तो डॉक्टर बनने में कोई दोष नहीं है। इस दृष्टि से श्री नेमीचन्द जी कटारिया का चिन्तन अधिक व्यावहारिक है।)

नया प्रश्न

प्रश्न- व्यक्ति को पहले धर्म में परिपूर्ण होने के बाद सदाचरण एवं व्यवहार की ओर बढ़ना चाहिए अथवा पहले आचरण व व्यवहार सुधार कर धर्म की

ओर अग्रसर होना चाहिए। - *सिद्धराज जैन, जोधपुर*

इस प्रश्न के उत्तर हमें यथाशीघ्र इस पते पर प्रेषित करें, ताकि आगामी अंक में उत्तर सम्मिलित किए जा सकें - *डॉ. धर्मचन्द जैन, 3 के 24-25, कुड़ी भगतासनी, जोधपुर (राज.) 342005*

जिनवाणी के लेखकों हेतु शुभ सूचना

जिनवाणी के प्रबुद्ध लेखकों को सूचित करते हुए प्रमोद है कि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा गत वर्ष यह निश्चय किया गया था कि 1 वर्ष के अंकों में प्रकाशित विभिन्न लेखों/रचनाओं में से सर्वश्रेष्ठ को निम्न वर्गानुसार पुरस्कृत किया जाएगा। तदनुसार इस वर्ष भी यह क्रम निरन्तर रखा गया है। **गत वर्ष की श्रेष्ठ रचनाओं का निर्णय शीघ्र ही लिये जाने की संभावना है।**

1. आध्यात्मिक/नैतिकशिक्षा परक लेख	5100/-
2. शोधालेख/वैज्ञानिक लेख	5100/-
3. आगमिक/तात्त्विक/जीवन-शैली से सम्बद्ध लेख	5100/-
4. अंग्रेजी भाषा में श्रेष्ठ रचना	5100/-
5. युवा-स्तम्भ में प्रकाशित श्रेष्ठ लेख	5100/-
6. नारी-स्तम्भ में प्रकाशित श्रेष्ठ लेख	5100/-
7. बाल-स्तम्भ में प्रकाशित श्रेष्ठ रचना	5100/-
8. श्रेष्ठ कविता	3100/-
9. संवाद स्तम्भ में श्रेष्ठ समाधान	3100/-
10. श्रेष्ठ प्रेरक-प्रसंग/क्षणिकाएँ/विचार	2100/-

उपर्युक्त पुरस्कारों की घोषणा उत्कृष्ट रचनाधर्मिता के संवर्धन एवं जिनवाणी के पाठकों हेतु प्रेरणाप्रद नूतन पाठ्यसामग्री उपलब्ध कराने की दृष्टि से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के **अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा-चेन्नई** की सहमति से की जा रही है। लेखकों की रचनाएँ मौलिक, स्पष्ट, प्रभावोत्पादक एवं पाठकों को दिशाबोध कराने वाली होनी चाहिए।

डॉ. धर्मचन्द जैन — सम्पादक

श्री प्रेमचन्द जैन — मंत्री

अभिव्यक्ति

आज सुबह जिनवाणी के नवम्बर अंक को पढ़ने में दो घंटे व्यतीत हुए। इन दो घंटो में मुझे कुछ समझने का, कुछ सीखने का अवसर मिला। कुछ आत्म-मन्थन के लिये, कुछ ज्ञानवृद्धि के लिये, कुछ समाज के लिए, कुछ संगठन के लिये इत्यादि सभी बातों से यह मिश्रित अंक था।

आचार्यश्री ने प्रेरणा दी कि जो नित्य सामायिक नहीं कर सकते, वे सप्ताह में एक दिन सामूहिक सामायिक करें तो संस्कार बने रहेंगे। यह बात महज उपदेश या सलाह नहीं है। हमें आचार्यश्री का आदेश मान कर चलना चाहिये। यह हमारे संस्कार की नींव होंगे।

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के नेतृत्व में संघ की सुदृढ़ता, शुचिता बढ़ी है, यह देखकर मुझे प्रमोद होता है। हमारे अन्य संघों को भी इससे सीख लेनी चाहिये। जहाँ अच्छा दिखे वहाँ गुण ग्रहण की भावना विकसित करनी चाहिये। लेकिन बन्धुओं! क्या आपको नहीं लगता कि कभी कभी हमारे अपनों में किसी की अच्छी सलाह, किसी की अच्छी योजना को अच्छी तरह सुनने से पहले ही उसकी आलोचना करने लग जाते हैं। सिर्फ इसलिये कि उनकी हैसियत बढ़ जायेगी, हमारी कम हो जायेगी।

हम लोगों में धैर्य व सहनशीलता की कमी है। उसको बढाना चाहिये। आवेश व आक्रोश का सहारा न लेकर बहुत शान्ति से दिल व दिमाग को ठंडा रखना चाहिये। संघ की गरिमा का खयाल रहना चाहिए, क्योंकि संघ की गरिमा ही अपनी गरिमा है।

-आर. प्रसन्नचन्द चोरड़िया, 52,कालाती पिलै स्ट्रीट, चेन्नई-600079

जिनवाणी, जनवरी 2009 के अंक में आपका संपादकीय 'गोधन से ग्रामों का विकास'; अन्य संपादकीयों से हटकर व अनूठा है। इस मननीय सम्पादकीय से नारी स्तंभ के अन्तर्गत 'तनावमुक्ति का उपायः परिश्रम' लेख का सहसम्बन्ध भी जुड़ गया है। गोपालन के साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था, कृषि, अहिंसा, संस्कृति, स्वास्थ्य, पर्यावरण आदि महत्त्वपूर्ण तथ्य जुड़े हुए हैं।

भारत गाँवों का देश है। गाँव और शहर के बीच की खाई को पाटने के लिए सरकारों को गोसंवर्द्धन पर विशेष ध्यान देना चाहिये। लेकिन हवा कुछ उल्टी ही बह रही है। इन दिनों सरकार को कुक्कुट पालन, मछली पालन, सुअर पालन, जैसी गैर-सांस्कृतिक व हिंसक व्यावसायिक गतिविधियों को बढ़ावा देना सूझ रहा है। महज मत्स्य को लेकर ही सरकारी विभाग और महाविद्यालय तक खुल गये हैं। मत्स्य मंत्री और अधिकारी तक बना दिये गये हैं। गरीबों के कथित कल्याण के नाम पर इन कार्यों के लिए मोटी राशियों के बजट पास हो रहे हैं।

भारत के पवित्र शास्त्रों में जिन आजीविकाओं को निन्दित बताया गया है, उनसे न तो गरीबों का स्थायी कल्याण हो रहा है और न ही गाँवों का विकास। अपितु 'पालन' के नाम पर 'मारण' के क्रूर क्रियाकलापों से आदमी की संवेदनाएँ मर रही हैं और वेदनाएँ बढ़ रही हैं। गाँवों का सामाजिक ढाँचा चरमरा रहा है। संस्कृति के केन्द्र गाँवों को पूज्य बापू ने 'भारत की आत्मा' कहा था, वहाँ अब हिंसा-हत्या और खून-खच्चर के लिए प्रशिक्षण और वित्तीय मदद दी जा रही है। यह बेहद चिन्ताजनक है कि मछलियों के बूथ और अण्डे के ठेले गाँवों में दस्तक देने लगे हैं। हम यह सब चुपचाप पढ़, सुन, देख रहे हैं और सह रहे हैं। ऐसा नहीं होना चाहिये न तो गाँवों में और न ही शहरों में। सुनियोजित तरीकों से इन चीजों का प्रतिकार होना चाहिये। इन्हें रोकने के लिए गोसंवर्द्धन एक सशक्त विकल्प है। विकल्प क्या, गोसंवर्द्धन तो सदियों से चली आ रही भारत की स्थापित व्यवस्था है। जिसे बिना सोचे समझे तहस-नहस किया जा रहा है। इस सर्वोपयोगी व्यवस्था को कायम रखने के समस्त निमित्तों व उपादानों पर व्यापक विमर्श होना चाहिये तथा समाज और सरकार को उस दिशा में गंभीरतापूर्वक कार्य करना चाहिये।

इसी अंक में साहित्य मनीषी श्री गौतममुनि जी का गद्यकाव्य 'हे संयमधाम! हे प्रज्ञापुंज!' बहुत अच्छा लगा। डॉ. जीवराज जैन के लम्बे अंग्रेजी लेख 'सांइस ऑफ धोवन-वाटर' से बहुतेरे बिन्दु स्पष्ट हुए हैं। शाकाहार पर डॉ. धर्मेन्द्र कांकरिया का अंग्रेजी लेख भी तथ्यपूर्ण है। हर वर्ग और रुचि के पाठक को जिनवाणी में सामग्री मिल जाती है। बधाई, धन्यवाद।

-डॉ. दिलीप धींग, उदयपुर

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

जैन विचारधारा में शिक्षा-प्रो. चाँदमल कर्णावट, ***प्रकाशक***-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302001(राज.), ***पृष्ठ*** 8+136, ***मूल्य***-25 रुपये, ***संस्करण***-सन् 2008

प्रो. चाँदमल कर्णावट की यह पुस्तक उनके 40 वर्ष के शैक्षणिक अनुभव, जैन विचारधारा के अध्ययन-अध्यापन एवं समाज-निर्माण की दृष्टि का सत्परिणाम है। वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री कर्णावट सा, शिक्षा विद्याभवन, टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, उदयपुर से सहायक प्रोफेसर के पद से सेवानिवृत्त हुए। इस अवधि में आपने शिक्षा-विषयक लेख लिखे, जिन्हें इस पुस्तक में सबके लिए सुलभ कराया गया है। पुस्तक में दो खण्ड है। प्रथम खण्ड में 23 अध्याय हैं, जिनमें शिक्षा की अवधारणा के साथ जैन परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के विभिन्न आयामों पर विचार किया गया है। इसमें शिक्षा-प्राप्ति में विनय, निरभिमानता, अप्रमत्तता, तप, अहिंसा, संयम आदि को महत्त्व दिया गया है। स्याद्वाद सिद्धान्त के साथ भी शिक्षा पर विचार किया गया है। क्रोध, अभिमान, रोग, आलस्य एवं प्रमाद ये सभी शिक्षा में बाधक हैं, इसका पृथक् अध्यायों में विवेचन किया गया है। द्वितीय खण्ड के 5 अध्यायों में राष्ट्रीय शिक्षा में धार्मिक शिक्षा, सामाजिक पुनर्निर्माण में शिक्षा की भूमिका, मूल्यों के विकास में शिक्षा की भूमिका आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है। प्रो. चांदमल कर्णावट के शब्दों में - ''एक समग्र जैन दृष्टि में शिक्षा व्यक्ति में निहित समस्त क्षमताओं, योग्यताओं एवं सुन्दर सद्भावनाओं का उद्घाटन एवं विकास है।''

पंच परमेष्ठी मीमांसा- साध्वी डॉ. सुरेखा श्री जी म.सा., ***प्रकाशक***- श्री विचक्षणस्मृति प्रकाशन, श्री शिवजी राम भवन, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.) फोन : 0141-2563884, ***पृष्ठ***-392, ***मूल्य***-उल्लेख नहीं, ***संस्करण***-2008

खरतरगच्छीया शासन प्रभाविका श्री विचक्षण श्री जी म.सा. की सुशिष्या डॉ. सुरेखा श्रीजी के इस ग्रन्थ पर उन्हें डी. लिट् की उपाधि प्राप्त हुई है।

साध्वीजी के ग्रन्थ के 9 अध्यायों में क्रमशः अग्राङ्कित विषयों का निरूपण किया है - भूमिका, ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि, अरिहन्त पद, सिद्धपद, आचार्य पद, उपाध्याय पद, साधुपद, ऊँकार एवं नमस्कार की मंत्र रूप में स्थापना। तीन परिशिष्ट भी हैं जिनमें से एक में मृत्यु के समय नवकार मंत्र के श्रवण के लाभ को प्रतिपादित किया गया है। इस पुस्तक में विदुषी साध्वी ने पंच परमेष्ठी पर गहन विमर्श किया है।

मांसाहार कितना उचित?- श्री चंचलमल चोरडिया, ***प्रकाशक***- कल्याणमल चंचलमल चोरडिया ट्रस्ट, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.) फोन : 0291-2621454, ***पृष्ठ***- 16, ***सहयोग राशि***- 10 रुपये।

चोरडिया जी ने इस पुस्तक में विभिन्न तथ्यों एवं तर्कों से स्थापित किया है कि बुद्धिमान व्यक्ति मांसाहारी नहीं हो सकता। मांसाहार शरीर, पर्यावरण एवं प्राणिजगत् सबके लिए हानिकारक है।

शांति का उपाय

श्री गणेशमुनि शास्त्री

चिंता पिशाचिनी से भी अधिक त्रासदायिनी है। चिन्ताग्रस्त मानव की कितनी दुर्दशा होती है, जीवन कितना संकटमय बन जाता है, और फिर उस चिन्ता से मुक्ति कैसे मिले, चिन्ता-मुक्ति से जीवन में कितना आनन्द और उल्लास लहराने लगता है, इसका एक उदाहरण देखिए-अमेरिका के धन कुबेर डी. राकफेलर के जीवन से।

संसार का सबसे बड़ा धनी डी. राकफेलर बहुत ही अधिक चिंताशील एवं आशंका वाला व्यक्ति था। चिंताओं के कारण पचास वर्ष की उम्र में उसका शरीर इतना जर्जर हो गया था कि वह रात दिन बिस्तर पर पड़ा रहता। डॉक्टरों ने उसके जीवन से निराशा व्यक्त कर दी और कह दिया- यदि वह चिंताओं से मुक्त नहीं होगा तो किसी भी समय उसकी हृदयगति बन्द हो सकती है।

राकफेलर के जीवन में सहसा एक नया मोड़ आया। व्यापार व धन की चिन्ता से उसने पिंड छुड़ाया, गरीबों को देना शुरु किया, विद्यार्थियों व विद्वानों का सहयोग प्रारम्भ किया। सदा प्रसन्न रहने लगा और इस चिंता-मुक्ति का प्रभाव उसके जीवन पर पड़ा। पचास करोड़ डालर का स्वामी होने पर चैन उसे नहीं मिला, वह अब उसे दान करने में मिलने लगा। राकफेलर स्वस्थ ही नहीं हुआ, किन्तु पचास वर्ष में मृत्यु के सिरहाने पर बैठने वाला 93 वर्ष की स्वस्थ व सुखी आयु भोगकर प्रसन्नतापूर्वक संसार से विदा हुआ। - *'प्रेरणा के बिन्दु' से साभार*

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड का परीक्षा परिणाम घोषित

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 4 जनवरी 2009 को आयोजित कक्षा 1 से 8 तक की परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के नामांक (रोल नं.) प्रकाशित किए जा रहे हैं। परीक्षा परिणाम की सूची केन्द्राधीक्षकों को प्रेषित कर दी गई हैं। **वरीयता सूची अगले अंक में प्रकाशित की जायेगी।** उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के रोल नं. प्रकाशन में यद्यपि सावधानी रखी गई है, तथापि सन्देह होने पर बोर्ड कार्यालय की सूचना को ही प्रमाण माना जाए। **यदि कोई परीक्षार्थी पुनर्मूल्यांकन कराना चाहे तो सादा कागज पर प्रार्थना–पत्र व 25 रूपये का शुल्क M.O. द्वारा शिक्षण बोर्ड कार्यालय में दिनांक 10 मार्च 2009 तक भिजवा सकते हैं। विलम्ब से प्राप्त आवेदन–पत्र स्वीकार नहीं किये जायेंगे।**

उत्तीर्ण परीक्षार्थी

जैन धर्म परिचय (प्रथम)

1 ,2 ,13 ,14 ,18 ,26 ,33 ,35 ,36 ,38 ,39 ,40 ,79 ,96 ,97 ,113 ,119 ,151 ,152 ,154 ,155 , 157,179,188, 189,191 ,201 ,202 ,206 ,208 ,211 212 ,213 ,214 ,215 ,218 ,219 ,220 ,222 ,223 , 224,225,227,228 ,231 ,232 ,234 ,235 ,237 ,238 ,239 ,240 ,242 ,244 ,245 ,248 ,249 ,250 251 , 252 ,265 ,266 , 267 ,268 ,269 ,270 ,271 ,272 ,273 ,275 ,278 ,279 ,280 ,282 ,283 ,288 ,290 , 291,293,295,296 , 298 ,299 ,300 ,301 302 ,303 ,324 ,325 ,326 ,327 ,328 ,330 ,331 ,350 ,353 , 354,355,361,363, 365 ,366 ,369 ,374 ,376 ,470 ,481 ,482 ,498 ,499 ,502 ,504 505 ,507 ,511 , 512 ,542 ,545 ,586 , 587 ,607 ,628 ,638 ,639 ,643 ,644 ,645 ,649 ,681 ,683 ,762 ,764 ,765 , 777,778,781,786 ,822 , 841 843 ,844 ,859 ,869 ,881 ,882 ,908 ,910 ,919 ,920 ,943 ,944 ,948 , 996 ,997 ,999 ,1000 ,3 ,4 ,6 ,8 ,13 ,15 ,26 ,32 ,33 ,35 ,37 ,41 ,43 ,44 45 ,52 ,53 ,55 ,61 ,69 ,71 , 72 ,76 ,77 ,82 ,89 ,93 ,96 ,97 ,98 , 100 ,102 ,113 ,117 ,127 ,129 ,136 ,139 ,140 ,142 ,143 ,146 , 150,155,159, 160,164,165 ,166 , 170 ,172 ,174 ,176 ,177 ,179 ,183 ,184 ,186 ,187 ,188 ,190 , 192,197,199 ,201 ,203 ,204 ,205 , 206 ,207 ,211 ,212 214 ,215 ,218 ,224 ,225 ,226 ,227 ,228 , 231 ,232 ,233 ,235 ,236 ,237 ,239 , 240 ,242 ,264 ,274 ,296 ,298 ,324 ,336 ,340 ,359 ,360 , 378,383,388,389,395,396 ,401 ,403 , 404 ,407 ,409 ,410 ,415 ,416 ,430 ,431 ,433 ,438 ,439 , 444,447,454,467,468 ,472 ,474 ,480 ,522 672 ,685 ,688 ,689 ,693 ,695 ,698 ,699 ,702 ,747 , 750,762,765,786 ,790 ,792 ,793 ,855 ,857 ,858 ,871 ,872 ,873 ,874 ,883 ,885 ,887 888 ,905 , 910 ,914 ,916 ,919 ,923 ,932 ,937 ,938 ,939 ,959 ,993 ,994 ,2027 , 58 ,59 ,60 ,71 ,85 ,86 ,98 , 102,111 ,112 ,114 ,117 ,138 139 ,142 ,152 , 154 ,176 ,179 ,183 ,195 ,196 ,197 ,198 ,199 ,253 , 254,257,260,262 ,265 ,267 ,268 ,270 ,271 ,285 ,287 ,289 ,296 ,313 314 ,346 ,422 ,423 ,426 , 428 ,429 ,431 ,433 ,435 ,462 ,479 ,480 ,481 , 482 ,483 ,484 ,516 ,517 ,518 ,525 ,526 ,527 , 528,537,539,565 566 ,569 ,570 ,588 ,590 ,594 , 596 ,597 ,598 ,640 ,641 ,685 ,687 ,688 ,690 ,

697,702,726,730,732,737,743,745,748,799,801,803 806,807,809,814,815,816,817, 818,820,821,843,844,845,846,847,850,851, 852,853,862,864,880,885,886,887, 889,890 891,892,926,929,931,932,983,984,985,986,987,988,989,991,992,994,996, 997,998,999,**3000**,2,3,4,5,7,9,14,15,16,18 19,22,25,29,31,32,34,35,37,38,39,42, 43,68,70,72,73,74,76,77,145,248,249,251,258,259,260,263,267,270,271,278 295, 302,307,358,360,362,366,367,553,556,558,559,560, 561,562,564,565,570,573, 574,577,588,589,590,592,627,628 629,702,705,709,710,744,745,771,772,776,779, 782,787,864,865,866,868,869,870,872,874,875,876,877,878,882,884 885,886,887, 889,890,906,912,962,963,966,970,971,972,973,975,980, 983,984,986,987,989, **4015**,29,34,60,63,69 103 104,106,141,166,168,169,171,172,173, 174,218,221,244, 248,353,360,395,396,397,419,436,437,438,482,484,519,520 538,539,540,542,550, 552,553,560,579,580,582,583,584,585,586,623,626,627,686,688, 689,690,691, 694,696,701,707 708,709,711,713,717,723,726,728,729,730,765,766,787,788,789, 794,795,797,799,801,803,804,826,829,831,833,849 850,851,852,853,855,856,857, 877,879,897,899,940,944,952,954,**5023**,24,28,31,34,36,40,41,54,55,57, 103,105,106, 107,108,110,111,112,124,125,126,129,134,152,170,195,202,203,207, 212,219,233,254,274,278,296,308,311,312,316 317,318,319,321,329,331,338,344, 367,387,396,414,415,417,419,505,511,528,542,543,554,555,556,570,608,621,623 625, 663,664,670,680,681,687,691,694,695,696,700,704,713,721,731,732,747, 748,751, 755,757,759,765,783,799,825 843,845,846,850,910,913,935,**6121**,124, 125,137,138, 140,178,180,192,198,199,200,201,209,211,212,216,226,227,239 242, 244,245,246, 247,248,252,253,255,258,262,265,266,268,276,294,296,297,298, 310,312,331,332, 335,336,337,338 348,349,361,375,405,425,428,431,434,436,449, 450,453,468,469,478,480,482,484,486,487,493,495,499,507,508,510 511,512,521, 523,524,527,528, 529,530,533,534,536,538,542,544,546,548,593,603,678,724, 734,783,794,796,799, 840 866,869,870,871,877,878,879,887,888,893,932,959,989, 999,**7023**,36,38,41,90, 92,93,94,95,128,130,133,138,222,232 234,240,251,252, 253,254,255,257,258,259, 262,264,265,266,306,307,310,321,327,330,344,345, 348,360,373,396,398 408,413, 414,415,418,419,420,432,437,438,439,446,461,462, 463,489,491,498,505,511,539, 542,545,548,549,555,561 562,576,578,580,606,607, 613,614,615,616,623,624,635, 641,644,651,655,684,689,692,693,696,699,700, 705,710,716 718,723,727,729,732, 762,770,772=**1007**

जैन धर्म प्रवेशिका (द्वितीय)

3,4,5,19,20,43,44,46,47,56,60,61,62,63,64,67,124,158,260,306,307,322,338, 436, 437,519,520,521,522,523,525,526,538,562,589,591,592,614,615,658,697, 698,704, 706,722,767,791,792,793,809,856,861,894,911,913,927,**1011**,74,75, 108,121,245,248, 249,250,256,257,258,259,260,483,709,710,711,712,713,714,715, 716,721,734,735, 772,773,784,795,859,955,957,958,963,964,965,967,969,976,980, 981,995,**2061**,72,73, 74,75,121,123,125,126,128,130,132,133,134,136,137,143, 144,145,146,147,148,149, 159,166,172,181,182,187,189,190,200,203,204,205, 206,208,209,210,299,300,301, 303,304,315,316,318,324,326,327,351,353,361, 369,392,409,416,442,454,455,457, 458,459,466,492,530,531,532,600,601,603, 605,606,607,608,609,652,656,658,691, 692,693,694,698,709,712,714,715,738, 739,750,752,755,756,757,758,759,762,764, 782,783,784,826,827,828,831,832, 868,869,893,894,895,896,897,898,899,900,901, 903,904,937,967,968,**3078**,79,80, 81,82,83,84,85,87,88,89,90,91,92,94,95,96,97,98, 100,102,103,104,105,146,147,

149 ,150 ,151 ,152 ,155 ,156 ,159 ,160 ,162 ,331 ,334 ,337 , 339 ,340 ,343 ,346 ,347 ,348 , 349 ,352 ,438 ,596 ,597 ,599 ,600 ,603 ,604 ,605 ,606 ,608 ,609 , 610 ,612 ,613 ,614 ,615 , 616 ,617 ,618 ,619 ,621 ,622 ,623 ,624 ,626 ,630 ,631 ,632 ,633 ,634 , 637 ,638 ,641 ,643 , 644 ,647 ,718 ,919 ,920 ,**4175** ,176 ,295 ,298 ,302 ,362 ,363 ,365 ,374 ,403 , 404 ,405 ,406 , 422,423,589,590 ,592 ,636 ,754 ,772 ,790 ,792 ,809 ,836 ,837 ,838 ,839 ,843 , 845,846,858 , 862,863 ,880 ,955 ,956 ,959 ,960 ,961 ,977 ,**5065** ,74 ,77 ,85 ,86 ,90 ,92 ,191 ,210 ,288 ,299 , 301 ,302 ,333 ,336 ,375 ,420 ,421 ,423 ,461 ,462 ,463 ,464 ,465 ,466 ,467 ,483 ,484 , 485 , 486 ,517 ,563 ,581 ,582 ,588 ,627 ,649 ,763 ,796 ,817 ,869 ,870 ,871 ,872 ,876 ,878 ,880 , 917 ,919 ,**6126** ,142 ,143 ,144 ,185 ,279 ,281 ,299 ,317 ,342 ,354 ,365 ,366 ,382 ,383 ,489 , 551 , 554 ,556 ,558 ,560 ,778 ,780 ,832 ,838 ,842 ,894 ,896 ,924 ,926 ,**7051** ,52 ,54 ,64 ,66 , 96,100, 102 ,270 ,271 ,356 ,357 ,400 ,401 ,428 ,433 ,472 ,475 ,497 ,513 ,514 ,517 ,518 ,520, 521 ,557 ,572 ,573 ,574 ,575 ,584 ,597 ,619 ,627 ,630 ,638 ,642 ,643 ,683 ,733 = **467**

जैन धर्म प्रथमा (तृतीय)

131 ,133 ,185 ,186 ,192 ,196 ,342 ,454 ,457 ,529 ,570 ,571 ,572 ,593 ,655 ,660 ,661 ,730 , 733 , 736,741 ,744 ,745 ,794 ,827 ,852 ,863 ,876 ,877 ,931 ,980 ,**1020** ,21 ,22 ,109 ,489 ,490, 492 ,493, 495,497 ,501 ,504 ,634 ,682 ,683 ,684 ,725 ,726 ,727 ,728 ,729 ,730 ,731 ,757 , 774,863,**2045** , 47 ,52 ,63 ,64 ,65 ,66 ,67 ,68 ,70 ,79 ,80 ,81 ,82 ,243 ,306 ,307 ,309 ,311 ,328, 373 ,393 ,470 ,471 , 472 ,495 ,521 ,522 ,523 ,533 ,534 ,535 ,560 ,574 ,659 ,660 ,662 ,663 , 717 ,766 ,767 ,786 ,836 , 837 ,856 ,905 ,906 ,907 ,908 ,909 ,910 ,911 ,940 ,970 ,971 ,972 , 973 ,975 ,976 ,977 ,978 ,**3272** , 273 ,274 ,670 ,752 ,**4189** ,313 ,323 ,375 ,377 ,379 ,411 ,426, 427 ,441 ,442 ,493 ,494 ,496 ,498 , 499,501,556 ,661 ,733 ,864 ,883 ,884 ,914 ,915 ,916 , **5044** ,45 ,78 ,79 ,93 ,94 ,95 ,121 ,122 ,200 ,205 ,221 ,227 ,249 ,250 ,251 ,281 ,289 ,303 ,324, 325 ,341 ,426 ,427 ,428 ,476 ,487 ,488 ,489 , 490 ,491 ,492 ,493 ,519 ,521 ,553 ,579 ,650 , 740 ,760 ,761 ,834 ,853 ,855 ,887 ,888 , **6112** ,133 , 146 ,147 ,148 ,149 ,150 ,151 ,164 ,165 , 166 ,167 ,168 ,169 ,170 ,171 ,172 ,173 ,174 ,206 ,229 , 256 ,264 ,286 ,320 ,494 ,562 ,565 , 568 ,658 ,774 ,801 ,845 ,848 ,900 ,901 ,903 ,905 ,915 ,976 , **7073** ,75 ,76 ,80 ,82 ,91 ,104 , 154 ,204 ,209 ,210 ,211 ,212 ,276 ,340 ,352 ,361 ,370 ,421 ,422 , 423 ,441 ,444 ,445 ,476 , 533 ,544 ,552 ,559 ,586 ,605 ,612 ,671 ,728 ,734 ,735 = **271**

जैन धर्म मध्यमा (चतुर्थ)

159,160,168,198 ,199 ,274 ,285 ,311 ,462 ,464 ,554 ,573 ,633 ,635 ,636 ,637 ,663 ,664 ,665 , 750 ,771 ,772 ,796 ,803 ,804 ,817 ,833 ,900 ,981 ,993 ,995 ,**1111** ,162 ,316 ,317 ,507 ,508 , 510 , 511 ,642 ,664 ,777 ,778 ,781 ,782 ,797 ,849 ,866 ,986 ,987 ,996 ,997 ,**2329** ,330 ,367 , 374 ,447 , 448 ,497 ,498 ,575 ,577 ,578 ,579 ,580 ,581 ,768 ,857 ,912 ,913 ,914 ,916 ,**3732** , 756 ,**4180** ,329 , 330 ,381 ,383 ,417 ,428 ,429 ,430 ,504 ,506 ,507 ,576 ,593 ,639 ,666 ,734 , 811 ,812 ,813 ,867 , 868,869,870,871 ,872 ,873 ,885 ,920 ,921 ,990 ,991 ,**5003** ,73 ,97 ,123 , 159 ,160 ,228 ,305 ,306 , 350 ,351 ,429 ,430 ,479 ,524 ,525 ,580 ,614 ,652 ,653 ,819 ,950 , 951 ,960 ,962 ,**6152** ,153 ,230 , 231 ,232 ,233 ,289 ,290 ,302 ,323 ,345 ,373 ,443 ,460 ,502 , 569 ,571 ,617 ,662 ,779 ,852 ,853 , 854 ,855 ,856 ,857 ,916 ,928 ,929 ,951 ,**7106** ,107 ,156 , 247 ,249 ,268 ,275 ,278 ,339 ,424 ,450 , 478 ,500 ,503 ,594 ,617 ,620 ,621 ,695 ,703 = **181**

जैन धर्म चन्द्रिका (पाँचवीं)

7,8,9 ,10 ,23 ,142 ,200 ,313 ,344 ,345 ,466 ,574 ,595 ,596 ,619 ,753 ,773 ,797 ,798 ,836 ,837 , 857 ,858 ,**1652** ,677 ,737 ,739 ,798 ,**2001** ,249 ,331 ,333 ,334 ,335 ,376 ,378 ,380 ,382 ,486 , 542 , 543 ,665 ,666 ,667 ,668 ,789 ,858 ,859 ,860 ,874 ,917 ,919 ,**3761** ,763 ,926 ,927 ,928 , **4182** ,385 , 433 ,443 ,510 ,530 ,594 ,595 ,596 ,672 ,674 ,761 ,784 ,814 ,887 ,963 ,**5098** ,216 ,

231, **240**, 353, 354, 583, 630, 640, 655, 894, 963, **6128**, 129, 154, 155, 156, 222, 257, 261, 326, **344**, 576, 577, 578, 579, 614, 663, 776, **7112**, 159, 187, 273, 403, 442, 471, 474, 596, 657, 685 = **114**

जैन धर्म विशारद (छठी)

143, 144, 145, 171, 172, 173, 174, 264, 559, 605, 671, 758, 775, 839, 840, 907, 985, **1670**, 759, 802, **2336**, 337, 338, 339, 340, 341, 502, 796, 842, 861, 920, **3677**, 678, 765, **4388**, 389, 390, 435, 531, 532, 534, 567, 568, 597, 676, 677, 678, 785, 816, 875, 876, 889, 890, 932, 933, 964, 994, 995, 997, 998, 999, **5048**, 80, 82, 99, 206, 326, 356, 413, 480, 481, 534, 549, 550, 584, 656, 658, 659, 896, 897, **6065**, 118, 158, 161, 162, 236, 237, 305, 306, 328, 346, 358, 465, 580, 581, 669, 670, 671, 806, 906, 910, 917, 918, **7164**, 165, 207, 250, 269, 412, 477, 604, 670, 726, 752 = **114**

जैन धर्म कोविद (सातवीं)

146, 349, 557, 575, 598, 606, 620, 811, 820, 889, 905, 934, **1025**, 658, 854, 868, **2002**, 55, 419, 488, 696, 779, 877, **4044**, 445, 446, 535, 537, 558, 598, 647, 819, 891, 892, 893, 894, 935, 965, **5019**, 357, 358, 359, 360, 361, 362, 363, 482, 536, 661, 827, 828, 830, 831, 832, 899, 900, 930, **6135**, 541, 583, 941, 975, **7168**, 274, 436, 554 = **66**

जैन धर्म भूषण (आठवीं)

336, 759, 986, 987, 988, **1320**, 678, 679, 805, 806, **2614**, **3276**, 277, **4392**, 394, 599, 786, **5384**, 526, 538, 822, 823, 824, **6136**, 467, 584, 585, 586, 625, 942, **7208**, 256, 469, 546 = **34**

परिणाम रोका गया :-

(1) सिनसिनी (2) 3067, 6073

आवेदक	उपस्थित	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रतिशत
7772	4119	2254	54.72%

बोर्ड की आगामी परीक्षा 19 जुलाई 2009 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा 1 से 14 तक की आगामी परीक्षा 19 जुलाई 2009, रविवार को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जायेगी। अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें- *अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर, फोन-* 0291-2630490

4 जनवरी 09 की परीक्षा का परिणाम (Result) देखने एवं 19 जुलाई 09 की परीक्षा हेतु आवेदन करने के लिए बोर्ड की वेबसाईट www.jainratnaboard.com का उपयोग कर सकते हैं।

सुशीला बोहरा
संयोजक
9414133879

राजेश कर्णावट
सचिव
9414128925

धर्मचन्द जैन
रजिस्ट्रार
9351589694

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के उल्लेखनीय कदम

जयपुर शाखा द्वारा दिसम्बर में परिवार संस्कार शिविर का आयोजन

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 27-28 दिसम्बर 2008 को दो दिवसीय परिवार संस्कार शिविर जयपुर से लगभग 15 कि.मी. दूर एस.एस. जैन सुबोध गर्ल्स छात्रावास में आयोजित किया गया। शिविर में परिषद् के 35 सदस्यों (सपरिवार) के अतिरिक्त अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के कार्याध्यक्ष श्री प्रमोद जी हीरावत ने भी सपरिवार भाग लिया। शिविर के दौरान दोनों दिन सभी प्रतिभागियों द्वारा पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार प्रातः 7.00 बजे प्रार्थना एवं सामायिक की गई एवं 10 बजे से पुनः ज्ञान-चर्चा का क्रम प्रारम्भ हो गया। दिनांक 27 को प्रतिभागियों ने पक्खी का प्रतिक्रमण भी किया। शिविर के दोनों दिन तीन-तीन सत्रों में विभिन्न विद्वानों द्वारा परिवार संस्कार से सम्बन्धित अलग-अलग पूर्व निर्धारित विषयों पर वक्तव्य दिये। प्रत्येक वक्तव्य के पश्चात् उपस्थित श्रोतागण में से कुछ लोगों ने जिज्ञासाएँ रखी एवं उनके समाधान भी प्राप्त किये।

दिनांक 27 दिसम्बर 08

प्रथम सत्र : **प्रातः 10 बजे से 12 बजे तक**

परिवार संस्कार शिविर के प्रथम सत्र का शुभारम्भ **राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर के भूतपूर्व न्यायाधीश श्री जसराज जी चौपड़ा** के वक्तव्य से हुआ। श्री चौपड़ा सा ने **वर्तमान के इस भौतिकवादी युग में परिवार संस्कार शिविर की आवश्यकता एवं उपयोगिता** पर विस्तृत प्रकाश डाला। श्री चौपड़ा सा ने कहा कि आज भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य सभ्यता का हमला होने से परिवारों में संस्कारों एवं नैतिकता के बीज धूमिल होते जा रहे हैं। आज हमारे घरों की बहू, बेटियाँ शादी-ब्याह में निकासी के समय

सड़कों पर नाचकर संस्कृति को धूमिल कर रही हैं। जैन परिवारों में खान-पान बिगड़ रहा है। टी.वी., कम्प्यूटर व इण्टरनेट के दौर में बच्चों के संस्कार बिखरते जा रहे हैं। वृद्ध माता-पिता को उनके पुत्र बोझ समझ रहे हैं। युवा माता-पिता के पास अपने बच्चों में धार्मिक संस्कार देने का समय ही नहीं है। संयुक्त परिवार तो गुजरे जमाने की बात हो गये हैं, आज तो एकल परिवार भी सम्भल नहीं पा रहे हैं। देश में, समाज में, परिवार में जहाँ देखें वही संस्कारों एवं नैतिकता का हनन होता जा रहा है। ऐसे में संस्कारों को प्रस्फुटित करने के लिये जीवन में प्रबल पुरुषार्थ के साथ जीवन को सरलता एवं गुणग्राहिता से पूर्ण बनाने की आवश्यकता है। बच्चों को संस्कारित करने के लिये हमें स्वयं को उन संस्कारों को अपने जीवन में जीना होगा। आपने एक कथानक के रूप में तथा अभिमन्यु एवं अष्टावक्र के उदाहरण देकर भी समझाया कि गर्भकाल में श्रवण किये हुए संस्कार जीवन में, व्यवहार में अपने आप सामने आ जाते हैं। अतः यदि आज का युवा वर्ग अपना भविष्य सुरक्षित चाहता है तो आवश्यक है कि वह स्वयं को संयमित करे, बुजुर्गों का आदर करे तथा अपनी संतति को धार्मिक संस्कार दे। सत्रान्त के बाद शिविर के सभी सहभागियों ने अपना व अपने परिवार का परिचय दिया।

द्वितीय सत्र **अपराह्न 1.30 बजे से 2.15 बजे तक**

वर्द्धमान महावीर कोटा खुला विश्वविद्यालय, जयपुर की निदेशक माननीया **डॉ. (श्रीमती) सुषमा जी सिंघवी ने पारिवारिक सामंजस्य** के बारे में अपने विचार रखते हुए कहा कि पारिवारिक सामंजस्य का प्रथम सूत्र है- "मैं दुःखी नहीं हूँ, मुझे कोई दुःखी नहीं कर सकता।" अर्थात् सुख, दुःख स्वयं पर निर्भर हैं। जब तक हम नहीं चाहें तब तक कोई भी अन्य व्यक्ति हमें दुःखी बना ही नहीं सकता। यदि हम अपने पारिवारिक सदस्यों, मित्रों व अन्य व्यवहारियों को उसी रूप में समभाव से स्वीकार कर लें जैसे कि वे स्वयं हैं तो हम जीवन में सुखी बन जायेंगे। परन्तु आज हम जितने स्वयं के दुःख से दुःखी नहीं हैं उतने अपनी अपेक्षाओं, आशाओं एवं इच्छाओं के अनुरूप अपने बच्चों तथा अन्य पारिवारिक सदस्यों द्वारा कार्य नहीं कर पाने पर दुःखी हैं।

आज परिवार के चार सदस्यों में सामंजस्य नहीं रहता और रहेगा भी

कैसे सभी के अपने अलग-अलग कमरे हैं और सब अपने कमरों में अपने-अपने कार्यों में व्यस्त रहते हैं। माता-पिता के पास एक साथ मिल बैठकर बात करने का समय ही नहीं है। उन्होंने कहा कि किसी काम को करने का आनन्द वही व्यक्ति ले सकता है जो उसके फल की चिन्ता नहीं करता। अतः हम परिवार में अपनी जिम्मेदारी पूर्ण निष्ठा से निभाएँ और अन्य सदस्यों से अपेक्षा न रखें। साथ ही श्रीमती सिंघवी ने कहा कि हम केवल बच्चों के परीक्षा परिणाम की ओर ध्यान देने के बजाय उनके गुणों के विकास हेतु प्रयत्नशील हों। बच्चों की संवेदनाओं को समाप्त न करें तथा उनकी रचनात्मकता (Creativity) को बढ़ाने का प्रयास करें।

अपराह्न 2.15 से 3.00 बजे तक

एस. एस. जैन सुबोध गर्ल्स कॉलेज, जयपुर की प्राचार्या **डॉ. (श्रीमती) प्रमिला जी जोशी** ने अपने वक्तव्य में **परिवारों में संस्कारों की कमी पर विस्तृत विवेचना** करते हुए संयुक्त परिवार के लाभ एवं एकल परिवार की हानियों पर अपने विचार रखे। परिवारों में संस्कारों की कमी का मुख्य कारण समाज तथा परिवार में हो रहे विघटन एवं बढ़ते हुए एकल परिवार को बताया। एकल परिवार के बढ़ने से पति-पत्नी के झगड़े बच्चों के सामने होने पर पारिवारिक सामंजस्य बिगड़ रहे हैं। अतः भले ही पति-पत्नी अथवा परिवार के सदस्यों में आपस में विचार भेद हो जाये तो भी बच्चों के सामने झगड़े न करें। श्रीमती जोशी ने कहा कि पारिवारिक संस्कार कायम रखने के लिए आवश्यक है कि युवा अपने माता-पिता व बुजुर्गों का आदर करें, उन्हें समय दें तथा उनकी सेवा करें। साथ ही बुजुर्ग भी बच्चों की भावनाओं व मजबूरियों को समझने का प्रयास करें।

तृतीय सत्र **अपराह्न 4.00 बजे से 4.45 बजे तक**

अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की अध्यक्षा माननीया **डॉ. (श्रीमती) मंजुला जी बम्ब** ने **संघ महत्त्व तथा संगठन की आवश्यकता** बताते हुए संघ का शाब्दिक अर्थ बताया कि घटकों का समूह अर्थात् एक साथ रहना ही संघ है। उन्होंने बताया कि नन्दीसूत्र में संघ को सूर्य, चन्द्र, रथ आदि 8 उपमाएँ दी हैं। संघ के बल का मापदंड उसकी एकता होती है। अतः संघ के

चारों अंग एक-दूसरे के विकास के हेतु बनें। उन्होंने श्रावक-श्राविकाओं का संघ के प्रति क्या उत्तरदायित्व है यह भी बताया।

सायं 7 बजे से 8 बजे तक **खुला मंच में विचार-विमर्श**

सभी प्रतिभागियों ने **आज के युग में धर्म एवं नैतिकता को जीवन में कितना व किस प्रकार उतारा जा सकता है?** विषय पर खुला मंच विचार-विमर्श में भाग लिया और इसमें अपने-अपने विचारों के साथ सुझाव भी रखे। विशेष कर श्री पीयूष जी जैन ने बच्चों में धर्म एवं नैतिकता के संस्कार प्रस्फुटित करने के लिए माता-पिता से यह अपेक्षा की कि वे अपने बच्चों को जिस तरह स्वीमिंग, डांस क्लास, ट्यूशन इत्यादि को प्राथमिकता देते हुए वहाँ भेजते हैं उसी प्रकार धार्मिक शिक्षण शिविर को भी सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए बच्चों को धार्मिक शिविरों में भेजें तथा अपने अन्य सम्बन्धियों को भी इसके लिए प्रेरित करें।

दिनांक 28.12.2008

प्रथम सत्र **प्रातः 10 बजे से 11 बजे तक**

युवा रत्न बन्धु श्री जितेन्द्र जी डागा ने **सांसारिक प्रवृत्तियों में रहते हुए धर्म-साधना करने** के सम्बन्ध में अपने विचार रखे। श्री डागा जी ने संत-दर्शन एवं वन्दना की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए स्वाध्याय से कर्म-निर्जरा के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि अधिकांश श्रावक-श्राविका संत-सतियों के दर्शनार्थ जाते हैं तो धर्माराधना की बातें तो कम और सांसारिक बातें अधिक करने हेतु संत-सतियों के पास बैठ जाते हैं। वे यह अपेक्षा करते हैं कि संत-सती मेरा नाम इत्यादि पूछे और जब संत मौन रहकर साधना एवं स्वाध्याय करते हैं तो हम लोग कहते हैं कि वे संत तो बोलते ही नहीं, उनके पास जा कर क्या करें? यह धारणा गलत है। साधु-संत मुख से कम तथा अपनी धार्मिक एवं चारित्रिक क्रियाओं से ही बोलते हैं। साधु-संतों से तभी बात करनी चाहिए जब कोई धार्मिक जिज्ञासा हो अथवा धार्मिक चर्चा करनी हो। आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. अपनी धार्मिक, आध्यात्मिक एवं चारित्रिक क्रियाओं से इतना बोलते थे कि उन्हें मुख से बोलने की आवश्यकता ही नहीं थी। श्री डागा जी ने कहा कि

संसार में रहते हुए अपने विवेक से धार्मिक क्रियाएँ करनी चाहिए और किसी के प्रति गलत विचार एवं बदला लेने की भावना नहीं रखनी चाहिए। हम यथाशक्ति स्वाध्याय करें, सन्त-समागम करें तो धीरे-धीरे हमारे जीवन में धर्म स्वतः ही उतरता चला जाएगा।

प्रातः 11 बजे से 12 बजे तक

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर के मंत्री माननीय **श्री प्रेमचन्द जी जैन** ने **धर्म एवं व्यवहार** विषय पर कहा कि वस्तु का स्वभाव ही धर्म है। धर्म दो प्रकार का होता है- एक अणगार धर्म और दूसरा आगार धर्म। अणगार धर्म साधु का तथा आगार धर्म श्रावक का होता है। उन्होंने बताया कि हिंसा, मिथ्याचरण, चोरी आदि का परित्याग कर तृष्णा पर अंकुश लगा कर अनासक्त भाव से रहना चाहिए।

जैसे भोजन करते समय स्वाद को ध्यान में रखते हुए नहीं, अपितु शरीर को चलाने के लिए भोजन कर रहा हूँ, ऐसा ध्यान रखना चाहिए। साथ ही व्यवहार के बारे में भी बताते हुए आपने कहा कि उन सभी कुरीतियों को हटाना चाहिए जिनसे धार्मिक एवं नैतिक क्रियाओं के साथ सामाजिक कार्य करने में बाधा आती हो। श्री जैन ने अनेक महापुरुषों के जीवन के उदाहरण देकर समझाया कि आज के युग में भी धर्म को जीवन में उतारा जा सकता है। आपने कहा कि धर्म करने का नहीं जीने का विषय है। अतः हम धर्म को जीवन में उतारें, तभी हमारा कल्याण हो सकता है।

द्वितीय सत्र **अपराह्न 2 बजे से 3 बजे तक**

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष माननीय **श्री आनन्द जी चौपड़ा** ने **व्यसन एवं फैशन का बढ़ता प्रकोप** विषय पर अपने वक्तव्य में कहा कि पूर्व में पुरुषों में व्यसन और महिलाओं में फैशन होता था, परन्तु आज तो व्यसन एवं फैशन का प्रभाव इतना बढ़ गया कि इसका प्रभाव केवल कुएँ में भांग के समान ही नहीं, सम्पूर्ण हवा में हो गया है। अथात् पुरुषों में भी फैशन एवं महिलाओं में भी व्यसन बढ़ गया है। इसका मुख्य कारण उन्होंने रूप और रुपये को बताया। आज स्वतंत्रता स्वच्छन्दता में परिवर्तित होती जा रही है। चौपड़ा सा. ने आज बढ़ रहे टी.वी. चैनलों को भी दोषी माना, जिनके कारण ये व्यसन

और फैशन बढ़ रहे हैं। उन्होंने सप्त कुव्यसन के बारे में भी विस्तृत विवेचना की और बताया कि आज किस कारण ये कुव्यसन हमारे जीवन में धीरे-धीरे स्थान बनाते जा रहे हैं।

अन्य विवरण

इसके अतिरिक्त शिविर में आये 5 से 15 वर्ष तक के बच्चों के लिए विशेष रूप से दो सत्र आयोजित किए गये थे। 27 दिसम्बर के सत्र में श्रीमती सुमन जी कोठारी ने बच्चों को छोटे-छोटे सद्गुण जीवन में उतारने हेतु प्रेरित किया। आपने बड़े ही रोचक तरीके से बच्चों को समझाया कि बड़ों का आदर करना चाहिए, जीव हिंसा से बचना चाहिए, सन्त दर्शन करना चाहिए, व्यर्थ में पानी नहीं गिराना तथा बिजली, पंखे नहीं चलाने चाहिए आदि।

28 दिसम्बर के सत्र में श्रीमती मंजू जी सेठ एवं श्री अनन्त जी सेठ ने जीवन में अनुशासन में रहना तथा प्रत्येक क्षण जागरूकता तथा शाकाहार, समय का महत्त्व, बड़ों का सम्मान आदि विषयों पर प्रकाश डाला। बच्चों के मनोरंजन हेतु उनकी चित्रकारी प्रतियोगिता तथा विभिन्न दौड़ प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गईं।

समापन सत्र

शिविर का समापन सत्र 28 दिसम्बर को सायं 6.30 बजे प्रारम्भ हुआ। समापन सत्र में अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष एवं सुबोध शिक्षा समिति के मानद् मंत्री **श्री सुमेरसिंह जी बोथरा** मुख्य अतिथि एवं अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के कार्याध्यक्ष **श्री प्रमोद जी हीरावत** विशिष्ट अतिथि थे। सर्वप्रथम शाखा प्रमुख श्री सुनील जी मोहनोत ने श्री सुमेरसिंह जी बोथरा का स्वागत अभिनन्दन कर दो दिन के शिविर गतिविधियों के बारे में अवगत कराया।

श्री बोथरा सा. ने परिषद् के सदस्यों को साधुवाद देते हुए कहा कि वे इस प्रकार के परिवार संस्कार शिविर समय-समय पर आयोजित करते रहें जिससे पारिवारिक नैतिक संस्कार की नींव मजबूत होती रहे। श्री बोथरा सा. ने यह भी कहा कि सकारात्मक सोच ही व्यक्ति को सही दिशा देती है। किसी भी स्तर पर चाहे परिवार में, चाहे समाज में, चाहे संघ में, चाहे व्यापार में एक साथ

काम करने वाले व्यक्तियों के विचारों में मतभेद होना तो स्वाभाविक है, परन्तु हम आपस में मन भेद न होने दें। यही शान्तिपूर्ण जीवन का मंत्र है।

इस सत्र में शिविर में भाग ले रहे अनेक युवा बन्धुओं ने इस कार्यक्रम के बारे में अपने विचार भी रखे। सभी ने शिविर के कार्यक्रम तथा व्यवस्था आदि की तारीफ की तथा भविष्य में भी इस प्रकार के शिविर अवश्य आयोजित करने का आह्वान किया। समापन सत्र में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता बच्चों को पुरस्कृत किया गया तथा सभी प्रतिभागियों को स्मृति चिह्न दिया गया। अंत में शाखा सचिव प्रशान्त करनावट द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

-पीयूष जैन, शिविर संयोजक, प्रशान्त कर्नावट, शाखा सचिव

युवक परिषद्, जयपुर की अन्य गतिविधियाँ

- दिनांक 23 दिसम्बर 2008 को एस.एस. जैन सुबोध बालिका विद्यालय एवं एस. एस. जैन सुबोध प्राथमिकशाला के निर्धन बालक-बालिकाओं को स्वेटर वितरित किए गए।
- पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-दिवस के अवसर पर महासती श्री शुचिता जी आदि ठाणा 4 की नेश्राय में सामायिक-दिवस मनाया गया। व्याख्यान में धर्मानुरागी श्रद्धालुओं ने गुरुदेव के गुणानुवाद करते हुए उन्हें मार्गदर्शक के रूप में याद किया तथा उनके द्वारा प्रचारित सामायिक-स्वाध्याय के मार्ग पर आगे बढ़ने का संकल्प लिया। इस अवसर पर लालभवन में 100 से अधिक दयाव्रत हुए। जिन्होंने दयाव्रत नहीं किया उन्होंने भी कम से कम 5 सामायिकें की। सायंकालीन प्रतिक्रमण में भी अच्छी उपस्थिति रही। प्रतिक्रमण में परिषद् के अधिकांश सदस्य उपस्थित थे। युवक परिषद् के 15 सदस्यों सहित लगभग 50 श्रावकों ने रात्रि में पौषध-संवर किया। जवाहर नगर, महावीर नगर, मानसरोवर आदि उपनगरों में भी आचार्य श्री की जयन्ती धर्मध्यान पूर्वक मनाई गयी। इस अवसर पर लालभवन एवं सुबोध कॉलेज के प्रांगण में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। 343 व्यक्तियों ने रक्तदान किया।
- जरूरतमंद परिवारों एवं स्वधर्मी बन्धुओं की सहायता के उद्देश्य से सेवानिधि योजना को निरन्तरता प्रदान की गई। इसके अन्तर्गत गत वर्ष

वितरित किये गये गुल्लक जमाकर नये खाली गुल्लक दिये गये।

युवक परिषद्, चेन्नई की विभिन्न गतिविधियाँ

धार्मिक शिविर– परीक्षा पूर्व तैयारी हेतु 28 दिसम्बर 2008, रविवार को चोरडिया स्कूल में प्रातः 8.15 से अपराह्न 4.00 बजे तक 'एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर' रखा गया, जिसमें वरिष्ठ स्वाध्यायियों एवं अनुभवी अध्यापकों द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया। शिविर समापन समारोह में डॉ. प्रिया जी जैन ने परीक्षा की उपयोगिता एवं महत्त्व को समझाते हुए परीक्षा में सम्मिलित होने की प्रेरणा की। शिविर में व्यवस्था एवं संचालन हेतु परिषद् के सभी कार्यकर्ताओं का सराहनीय सहयोग मिला। इस शिविर को श्रीमान् सोहनलाल जी, गौतमचन्द जी, दिनेशकुमार जी हुण्डीवाल, पल्लावरम, चेन्नई के सौजन्य से आयोजित किया गया।

धार्मिक परीक्षा– 4 जनवरी को आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर के तत्त्वावधान में चेन्नई से संचालित सभी 60 केन्द्रों में संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के सदस्यों एवं परिषद् के कार्यकर्ताओं की नियुक्ति की गई। परीक्षा के सुव्यवस्थित संचालन एवं नकल आदि की प्रवृत्ति को रोकने के लिए आकस्मिक जाँच समिति का गठन किया, जिसमें श्री गौतमराज जी सुराणा, श्री पी.एस.सुराणा, श्री बस्तीमल जी चोरडिया, श्री पी.एम. चोरडिया, श्री महेन्द्र जी कांकरिया, श्री अशोक जी कवाड़ एवं श्री बुधमल जी बोहरा का सहयोग प्राप्त हुआ। यह समिति विभिन्न केन्द्रों में पहुँचकर जाँच द्वारा परीक्षार्थियों के उत्साहवर्द्धन एवं परीक्षा के सफल संचालन में सहायक रही एवं चेन्नई में उपस्थित सभी परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार श्री सुधीरकुमार जी सुराणा, क्रोमपेट, चेन्नई के सौजन्य से प्रदान किये गये।

दया दिवस एवं सामूहिक सामायिक का आयोजन– दिनांक 10 जनवरी 2009 को आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. की 99वीं जन्म-जयन्ती पर स्वाध्याय भवन के प्रांगण में गुणानुवाद, सामायिक एवं तप-त्याग के साथ मनायी गई। (विस्तृत विवरण संक्षिप्त समाचार में उपलब्ध है)।

प्रतिभा निखार कार्यशाला– परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के चेन्नई चातुर्मास काल में प्रारम्भ हुए प्रति

रविवारीय शिविर में ज्ञानार्जन करने वाले शिविरार्थियों के लिए श्री जैन रत्न युवक परिषद्, चेन्नई के तत्त्वावधान में चेन्नई सेन्ट्रल से करीब 15 किलोमीटर दूर प्रकृति के नैसर्गिक शांत एवं मनोहर वातावरण जैन विद्याश्रम, रेडहिल्स में दिनांक 18 जनवरी 2009 रविवार को एक दिवसीय "प्रतिभा निखार कार्यशाला" सम्पन्न हुई। शिविरार्थियों ने बड़े ही उत्साह के साथ भाग लिया। शिविर का आयोजन स्व. श्री जवाहरलाल जी ओस्तवाल के सुपुत्र श्री हीरालाल जी, पन्नालाल जी, मोतीलाल जी ओस्तवाल, अयनावरम, चेन्नई (कोसाणा वाले) के सौजन्य से किया गया। युवक परिषद् के निर्देशन में इस एक दिवसीय कार्यशाला में 130 शिविरार्थियों ने अनुशासित रूप से प्रश्नमंच कार्यक्रम, ज्ञानवर्द्धक अध्यात्म पहेलियों एवं विभिन्न प्रकार के आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक ज्ञान को पुष्ट करने तथा मोबाइल, इंटरनेट के प्रयोग में विवेक रखने तथा ऐसा कार्य न करने की प्रतिज्ञा दिलाई जिससे माता-पिता को नीचा न देखना पड़े। सभी कार्यक्रमों का संचालन श्रीमती निर्मला जी संकलेचा, श्रीमती निर्मला जी चोरडिया एवं श्री अशोक जी कवाड़ द्वारा किया गया। श्री सुरेश कुमार जी हिंगड़ (धार्मिक अध्यापक) ने बच्चों को बताया कि अहिंसा, संयम एवं तप ही उत्कृष्ट मंगल है। उनकी प्रभावी प्रेरणा से बच्चों ने एक वर्ष तक महीने में 2 दिन रात्रि-भोजन एवं जमीकन्द का त्याग रखकर महीने में 5 दिन धोवन पानी पीने की प्रतिज्ञा करवाई। बच्चों ने सहजता के साथ स्वीकार की। अध्यापक श्री विनोद जी जैन ने वर्तमान में जंक फूड से होने वाली हानियों से अवगत कराया एवं इसके साथ ही श्री सुमेरचन्द जी बाघमार, श्री ज्ञानचन्द जी बाघमार, श्री सुनील कुमार जी सांखला आदि ने आदर्श जीवन जीने की कला एवं अच्छी संगत पर प्रकाश डाला। इस शिविर में प्रातः 7 बजे से शाम 7 बजे तक परिषद् के कार्यकर्ताओं ने व्यवस्था सम्बन्धित रजिस्ट्रेशन, यातायात, भोजन-व्यवस्था आदि के लिए श्री नरेन्द्र जी बाफना, अशोक जी लोढ़ा, प्रकाश जी कांकरिया, अशोक जी बाफना, विरेन्द्र जी कांकरिया, संदीप जी ओस्तवाल, प्रेम जी छाजेड़, अशोक जी बाघमार, सुरेन्द्र जी कांकरिया, हेमन्त जी बाघमार, विकास जी चौधरी का अमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ।

-बी. सुरेश चोरडिया, शाखा प्रमुख, बी. अशोक लोढ़ा, शाखा सचिव

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नजर में

(1 फरवरी, 2009)

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 9		भिलाड़ में 17 जनवरी तक विराजने के पश्चात् आचार्यप्रवर तथा श्री नन्दीषेण मुनि जी अलग-अलग सिंघाड़े में विहार कर 23 जनवरी को वापी पधारे। वहाँ से वलसाड़ होते हुए नवसारी व सूरत पधारना संभावित है।
परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	बालोतरा से विहार कर असाडा, टापरा, कालुंदी, लोहडिया, सिणधरी आदि क्षेत्र फरसते हुए 28 जनवरी को रावतसर पधारे। यहाँ से विहारकर 1 फरवरी को महावीर भवन, बाड़मेर पधारे है।
साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 6	:	दाधीच नगर से पावटा पधारे। आचार्यप्रवर की जयन्ती पर घोड़ों का चौक पधारे तथा पुनः विहार कर पावटा विराज रहे हैं।
सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	अजमेर के उपनगरों में धर्मप्रभावना कर मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए 29 जनवरी को रीढ पधारे हैं। यहां से जावला की ओर विहार संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7	:	16 जनवरी को रालेगांव पधारे। यहाँ से वलोना बाजार, वड़की, खाहरी,

		मारेगाँव होते हुए वरोरा, चन्द्रपुर की ओर विहार संभावित है।
तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	दूदू से विहार कर मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए 24 जनवरी को मदनगंज-किशनगढ़ पधारे हैं। अजमेर-ब्यावर की ओर विहार संभावित है।
विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	सकारण बेलगाँव विराज कर धर्म की महती प्रभावना कर रहे हैं।
विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	गंगापुर सिटी से विहार कर वाडकला, पीपलाई, लालसोट से 29 जनवरी को तुंगा पधारे हैं। तुंगा से बस्सी होते हुए जयपुर की ओर विहार संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 11	:	अलग-अलग सिंघाड़ों में विहार कर 14 जनवरी को पालनपुर पधारे। यहां से विहार कर महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा कलोल विराजित हैं और अन्य दो सिंघाड़े 10-10 कि.मी. के अन्तराल से विहार कर रहे हैं। अहमदाबाद की ओर अग्र विहार संभावित है।
महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	सोजत रोड से विहार कर 28 जनवरी को ब्यावर पधारे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7	:	बैंगलोर के उपनगरों में धर्मप्रभावना कर रहे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	सूरत से विहार कर 27 जनवरी को भरूच पधारे। भरूच से विहार बड़ोदरा की ओर चल रहा है।

व्याख्यात्री महासती श्री इन्दिराप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 5 : माधवनगर से विहार कर अरसीकेरे, विद्यापीठ, गुडी होते हुए 29 जनवरी को कराड़ पधारे हैं। अग्र विहार सातारा की ओर संभावित है।

महासती श्री पुष्पलता जी म.सा. आदि ठाणा 5 : विदर्भ क्षेत्रों में धर्म की महती प्रभावना करते हुए 17 जनवरी को पांढरकवड़ा पधारे हैं। यहां से वरोरा, चन्द्रपुर की ओर विहार संभावित है।

आचार्यप्रवर द्वारा फाल्गुनी चौमासी सूरत एवं अक्षय तृतीया बड़ोदरा स्वीकृत

परमाराध्य परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने सूरत श्री संघ की पुनःपुनः विनति पर फाल्गुनी चौमासी की साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ स्वीकृति फरमा दी। दिनांक 28 जनवरी 2009 को बड़ोदरा श्रीसंघ की पुरजोर विनति को ध्यान में रखकर आचार्यप्रवर ने तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया की भी साधु मर्यादानुसार बड़ोदरा श्रीसंघ की विनति स्वीकार कर ली है। **सम्पर्क सूत्र-** *श्री स्वरूपचन्द जी बाफना, सूरत-09374721094, श्री महेन्द्रजी कांकरिया, बड़ोदरा-09426179479*

आचार्यप्रवर के विचरण से गुजरात क्षेत्र में धर्म-प्रभावना

परमाराध्य परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 9 29 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक बोर्डी ग्राम में जैन मन्दिर के उपाश्रय में विराजे। जहाँ दूरस्थ एवं निकटस्थ ग्राम-नगरों के श्रावक समुदाय का दर्शन-वन्दन हेतु आगमन होता रहा। सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेण मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 4 का विहार उक्त तिथि को उम्बरगांव के लिए हो गया था। 1 जनवरी को प्रातःकाल आचार्यप्रवर का

मंगल विहार उम्बरगांव रोड के लिए हुआ तथा सेवाभावी गुरुभक्त श्री प्रकाशचन्द जी मेहता के बंगले पर विराजे। नववर्ष के दिन इस ग्राम के सभी जैन परम्पराओं मन्दिरमार्गी, कच्छी परम्परा, स्थानकवासी आदि संघों के श्रावक-श्राविकावृन्द तथा बाहर से पधारे हुए बड़ी संख्या में श्रद्धालुजन पावन दर्शन-वन्दन हेतु उपस्थित हुए। स्थानीय श्रीसंघ ने आगन्तुक स्वधर्मी बन्धुओं की सेवा का भरपूर लाभ लिया तथा स्वधर्मी वात्सल्य का पावन परिचय दिया। यहाँ पर सिलवासा, भिलाड़, वापी, सूरत, बोर्डी, इरानी रोड, डहाणु, वलसाड़ और उम्बरगांव रोड आदि क्षेत्रों के श्रावक-श्राविकाओं ने पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा. के आगामी पुनीत जन्म-दिवस हेतु अपने क्षेत्र की विनतियाँ प्रस्तुत कीं। आचार्यप्रवर ने उम्बरगाँव रोड के श्रावक-श्राविकागण की श्रद्धा-भक्ति, त्याग-प्रत्याख्यान एवं सेवा-भावना को लक्ष्य में रखकर उम्बरगांव रोड श्रीसंघ को स्वीकृति प्रदान की।

परमश्रद्धास्पद सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. का 99वाँ पावन जन्म-दिवस पौष शुक्ला चतुर्दशी 10 जनवरी 2009 सबके लिए त्याग-तप, सामायिक-स्वाध्याय एवं धर्म-साधना के उत्साह का संचार कर रहा था। उम्बरगांव श्रीसंघ पुलकित एवं प्रमुदित होकर धर्म-साधना हेतु जुट गया। जन्म-दिवस पर घरों की संख्या सीमित होते हुए भी उपवास, आयंबिल और एकासन 101, अष्टप्रहर पौषध, चौपहरी पौषध, कई संवर, प्रतिक्रमण, एक साथ 5 सामायिक की साधना आदि का आराधन हुआ। नियमित स्वाध्याय की प्रवृत्ति हेतु नियम-प्रत्याख्यान लिए गए। नियमित सामायिक का भी नियम लिया गया। युवा एवं मध्यम आयु के छः सुश्रावकों ने सपत्नीक आजीवन शीलव्रत का नियम अंगीकार कर अपनी श्रद्धा-भक्ति का परिचय दिया तथा उपकारों के प्रति कृतज्ञता के भाव ज्ञापित किए। जन्म-दिवस पर गुणानुवाद का कार्यक्रम स्थानीय जैन मन्दिर के विशाल प्रांगण में आयोजित किया गया। जहाँ सभी परम्परा के श्रावक-श्राविका एवं श्रद्धालु भक्तजन उपस्थित थे। विशाल प्रवचन कक्ष भी छोटा पड़ रहा था। अधिकांश भक्त सामायिक की साधना में थे। आचार्यप्रवर एवं संतों ने पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। सर्वप्रथम श्री बलभद्रमुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा., श्री योगेशमुनि जी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी

म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. के अनन्तर पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने अपनी ओजस्वी वाणी में गुरुदेव के जीवन प्रसंगों से प्रेरणा प्रदान की।

उम्बरगांव से 13 जनवरी को प्रातः संझाण नगर पधारे जहाँ जैन मन्दिर के उपाश्रय में विराजे। 14 जनवरी को 11 किलोमीटर का विहार कर भिलाड़ पधारे, जहाँ श्री धनरूपचन्द जी अमितकुमार जी मेहता, बैंगलोर (पीपाड़ शहर) के द्वारा नवनिर्मित एवं संघ को समर्पित सामायिक-स्वाध्याय भवन में पावन पदार्पण किया। श्री मेहता जी 15 दिनों से यहाँ विराज रहे थे तथा विहार सेवा का भी लाभ ले रहे थे। यहाँ से 18 जनवरी को 7 किलोमीटर की दूरी पर नरौली ग्राम पधारे। यहाँ से 19 जनवरी को सिलवासा पदार्पण हुआ। यहाँ चार दिनों तक धर्मप्रभावना कर 23 जनवरी को वापी पदार्पण हुआ। यहाँ आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. का 89वाँ दीक्षा-दिवस मनाया गया। 28 जनवरी को अलीगढ़ रामपुरा से 20 सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल वापी में उपस्थित हुआ तथा उपाध्यायप्रवर के आगामी चातुर्मास हेतु भावभीनी विनति आचार्यप्रवर की सेवा में निवेदित की। यहाँ से 29 जनवरी को आचार्यप्रवर आदि ठाणा 5 सात किलोमीटर का विहार कर भगवाड़ा पधारे तथा सेवाभावी श्री नन्दिषेणमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 4 का उदवाड़ा पधारना हुआ। आगे नवसारी एवं सूरत की ओर विहार चल रहा है। मुम्बई से अब तक विहार सेवा में अग्रांकित श्रावकों ने विशेष लाभ लिया है- श्री केवलचन्द जी जैन-विरार, श्रीमान राजेन्द्र कुमार जी भंडारी-सांताक्रुज, श्री विनोद कुमार जी गांधी-मलाड़, श्री सुनील कुमार जी लुणिया-वर्ली, श्री अजय कुमार जी हीरावत-वर्ली, श्री विरेन्द्र कुमार जी जैन-वर्ली, श्री कुशलचन्द जी गोलेछा-बोरीवली, श्री नरेन्द्र कुमार जी डागा-बोरीवली, श्री अशोक कुमार जी कर्णावट-बोरीवली, श्री राजकुमार जी नाहर-बोरीवली, श्री सुरेश कुमार जी भंसाली-विलेपार्ले, श्री यशकुमार जी भंसाली-विले पार्ले, श्री मनोज कुमार जी जैन-बोरीवली, श्री मुकेशकुमार जी जैन-भायन्दर, श्री भैरूलाल जी जैन-भायन्दर।

सम्पर्क सूत्र- *श्री स्वरूपचन्द जी बाफना, ए-414, इण्डिया टेक्सटाइल्स मार्केट, चौथी मंजिल, रिंग रोड, सूरत (गुजरात) फोन नं. 0261-2328844, मोबाइल- 09374721094*

उपाध्याय प्रवर के विचरण से सिंवाची पट्टी लाभान्वित

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 4 महावीर नगर में सालेचा परिवार के भवन में14 दिन विराजे, जहाँ उस क्षेत्र के युवाओं एवं युवतियों ने ज्ञानचर्चा का लाभ लिया तथा नई जागृति का अनुभव किया। 9 जनवरी को यहाँ से विहार कर नये स्थानक पधारे, जहाँ परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का 99वाँ जन्म-दिवस मनाया गया। इस दिन करीब 100 दयाव्रत, लगभग 50 उपवास, लगभग 200 सामूहिक 5-5 सामायिक, दोपहर में ज्ञानचर्चा तथा रात्रि में पौषध-संवर का आराधन हुआ। प्रवचन सभा के समय गुणानुवाद सभा में संत-प्रवरों का व्याख्यान तो हुआ ही कतिपय वक्ताओं ने भी अपनी भावनाएँ व्यक्त की। श्री अरविन्द जी सालेचा, श्री कमलेश जी चौपड़ा, सुश्री नयना गोलेछा, श्री दिनेश जी गोलेछा, श्री ओम जी बांठिया एवं प्रकाश जी श्रीश्रीमाल ने भी गुणानुवाद किया। श्री अरविन्द जी सालेचा की प्रस्तुति के बोल थे- "गुरु के मिले चरण कि मेरे रोम रोम खिल गए। पुलकित हुआ मन, मेरे रोम रोम खिल गए। नमन करूँ मैं सौ सौ बार।।"

इस अवसर पर अलीगढ़ रामपुरा के शिष्ट मण्डल ने अपने यहाँ चातुर्मास की भावभीनी विनति प्रस्तुत की। यहाँ से 12 जनवरी को विहारकर श्री रूपकुमार जी मोहनराज जी मदनराज जी धर्मेशकुमार जी कुंकु चौपड़ा के केसरकुंज भवन में पदार्पण किया। 13 जनवरी को प्रातः हाउसिंग बोर्ड (गलुकुंज) पधारे। विहार में 200-300 लोग उपस्थित थे। माघ कृष्णा चतुर्थी, 14 जनवरी को असार्डा पधारे। मार्ग में जसोल ग्रामवासियों ने अपनी श्रद्धा-भक्ति का परिचय दिया। उपाध्यायप्रवर के 75वें जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में श्री शांतिलाल जी संकलेचा, श्री महेन्द्र जी सेठिया, श्री अरविन्द जी सालेचा, श्री कौशल्या जी सालेचा, श्रीमती शान्ता जी सालेचा, श्री राजेन्द्र जी भण्डारी, श्री गौतम जी जैन, श्री दुलीचन्द जी बोहरा, श्रीमती कमला जी मधुर आदि ने भजनों एवं विचारों के माध्यम से उपाध्यायप्रवर का गुणानुवाद किया। यहाँ 2 दिन विराज कर 16 जनवरी को टापरा पधारे। फिर महुंदी, लोहड़िया, सिणधरी, धन्ने की ढाणी, टापू की बेरी, सरणू,

आरोदिया, मगजी की ढाणी, सवा होते हुए 28 जनवरी को रावतसर पधारे। यहाँ आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का. 89वाँ दीक्षा-दिवस मनाया गया। यहाँ से शिवकर, कुडला होते हुए 31 जनवरी को बाड़मेर के उपनगर में पधारे। अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती मंजुला जी बम्ब ने भी उपाध्यायप्रवर के विचरण के समय दर्शन-वन्दन एवं ज्ञानचर्चा का लाभ लिया।

सम्पर्क सूत्र- *1. श्री दिनेश जी लुणिया-बाडमेर, 09829792201, 2. श्री धर्मेश जी चौपड़ा-बालोतरा, 09414108191*

पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्म-जयन्ती पर विभिन्न क्षेत्रों में गुणानुवाद एवं तप-त्याग

परमश्रद्धेय अध्यात्मयोगी, युगमनीषी आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. का 99वाँ जन्म-दिवस पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में उम्बरगांव रोड में तथा उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में बालोतरा में तप-त्याग एवं सामायिक-स्वाध्याय के साथ मनाया गया। जहाँ-जहाँ भी महासती-मण्डल विराज रहे थे वहाँ पर भी दया-संवर, उपवास-पौषध एवं सामायिक-स्वाध्याय के साथ इस दिन पावन आराधना की गई। चेन्नई, बैंगलोर, जयपुर, जोधपुर, जलगाँव, मुम्बई, सवाईमाधोपुर, हिण्डौन सिटी, करौली आदि विभिन्न नगरों एवं ग्रामों में भी आचार्यप्रवर के जन्म-दिवस को गुणानुवाद एवं धर्म-साधना के साथ मनाया गया। कतिपय स्थानों की रिपोर्ट इस अंक में अलग-अलग स्थानों पर दी गई है एवं कुछ नीचे दी जा रही हैं-

जोधपुर- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के सान्निध्य में सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक में आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. की 99वीं जन्म-जयन्ती सामायिक-स्वाध्याय दिवस के रूप में श्रद्धा व उल्लास के साथ मनायी गयी। सर्वप्रथम महासती श्री शशिकला जी म.सा., महासती श्री विनीत प्रभा जी म.सा. ने आचार्य भगवन्त के गुणगान किए। तत्पश्चात् साध्वीप्रमुखा जी ने आचार्य भगवन्त के साधनामय जीवन का वर्णन किया। उन्होंने आचार्यप्रवर के जीवन-प्रसंगों के माध्यम से उनकी ज्ञान-गरिमा, त्याग-तप तथा साधना-आराधना की झाँकी श्रावक-श्राविकाओं के समक्ष रखी। शासन सेवा समिति के सदस्य श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना, महामंत्री श्री

नवरतन जी डागा, श्री चन्दनमल जी जैन, श्री महेन्द्र जी सेठिया, श्रीमती प्रसन्न जी अब्बानी, श्रीमती सविता जी जीरावला, श्री गजेन्द्र जी चौपड़ा, श्री चन्दनमल जी चौपड़ा, श्री धर्मचन्द जी जैन,श्री नवरतनमल जी डोसी, श्री सोहन जी मेहता ने भी गद्य-पद्य के माध्यम से आचार्यप्रवर का गुणानुवाद किया। व्याख्यान पश्चात् प्रश्नमंच का आयोजन हुआ जिसका संचालन प्रकाश जी सालेचा ने किया। दोपहर में ज्ञानचर्चा, सायंकाल प्रतिक्रमण का आयोजन रखा गया।

पुष्कर- श्रद्धेय महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्म-जयन्ती एवं श्रमण सूर्य श्री मिश्रीमल जी म.सा. की पुण्य तिथि संयुक्त रूप से मरुधर केसरी पारमार्थिक समिति के सभा भवन में समारोह के साथ मनाई गई, जिसमें अनेक गाँवों के गणमान्य महानुभाव पधारे।

चेन्नई- पौष शुक्ला 14, शनिवार दिनांक 10 जनवरी 2009 को श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद्, युवती मण्डल एवं स्वाध्याय संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में अनंत आस्था के केन्द्र आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. की 99वीं जन्म-जयन्ती सामायिक-स्वाध्याय दिवस के रूप में दया-संवर, एकासन, आयम्बिल, उपवास-पौषध, व्रत-नियम एवं 3 सामायिक के साथ 'स्वाध्याय भवन' साहुकार पेट, चेन्नई में मनाई गई। सामूहिक मंगलाचरण के पश्चात् वक्ताओं में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर के अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा, श्री सुरेश जी हिंगड़, श्री महावीरचन्द जी तातेड़, श्री रमेशकुमार जी जांगड़ा, श्री नरेन्द्रकुमार जी कांकरिया, श्रीमती इन्द्रा जी बोहरा, श्री चम्पालाल जी बोथरा, श्री उगमचन्द जी कांकरिया आदि ने गद्य-पद्य द्वारा गुरु-गुणगान एवं श्रद्धाभाव प्रस्तुत किये। आचार्य भगवन्त के जीवन-दर्शन पर बालक-बालिकाओं ने बहुत ही सुन्दर ढंग से परिसंवाद प्रस्तुत किया, जो सराहनीय रहा। रत्नसंघ आचार्य पट्टावली, आचार्य भगवन्त के जीवन से सम्बन्धित एवं उनके द्वारा रचित भजन तथा सामायिक सूत्र पर प्रश्नमंच का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें 5 दलों-श्रावक संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद्, युवती मडल, स्वाध्याय संघ ने भाग लिया। महामंत्र जाप का कार्यक्रम भी रखा गया। सभी कार्यक्रम प्रेरणादायक एवं उत्साहवर्द्धक रहें, उपस्थिति अच्छी रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन संघ मंत्री श्री जवाहरलाल जी कर्णावट ने किया।

परिसंवाद में सरिता जी सेठिया एवं प्रश्नमंच में निर्मला जी संकलेचा व निर्मला जी चोरडिया ने कुशल संचालन किया। *-जवाहरलाल कर्णावट, मंत्री*

जलगाँव- आचार्य भगवन्त का जन्म-दिवस यहाँ आचार्य श्री उमेशमुनि जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तपस्वी श्री कानमुनि जी म.सा. की सुशिष्या महासती श्री समर्पिता जी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में मनाया गया। महासती जी ने आचार्यप्रवर के सादगी, सरलता, तप, संयम, क्षमा आदि सद्गुणों को उजागर करते हुए इन्हें जीवन में अपनाने हेतु प्रेरणा की तथा स्वाध्याय को विशेष महत्त्व देते हुए अधिक से अधिक स्वाध्यायी बनाने का निवेदन किया। इससे प्रेरित होकर शासनसेवा समिति के प्रमुख श्री रतनलाल जी बाफना ने स्वाध्यायियों को प्रेरित करने एवं परिवार की समुचित व्यवस्था के प्रति दायित्व निर्वहन करने की स्वीकृति प्रदान की। पण्डित श्री प्रकाशचन्द जी जैन ने इन दिनों में उत्तराध्ययन सूत्र के 29वें अध्ययन का सारगर्भित विवेचन किया। अनेक श्रावकों ने आचार्यप्रवर का गुणानुवाद किया। तप, त्याग एवं साधना का इस अवसर पर आराधन कर सबने आनन्द का अनुभव किया। लगभग 101 बेले हुए जो एक उल्लेखनीय घटना है।

ब्यावर- संघशास्ता श्री सुदर्शनलाल जी म.सा. के सुशिष्य पूज्य श्री प्रकाशचन्द जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में श्री स्थानकवासी जैन वीर संघ, ब्यावर के तत्त्वावधान में आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का जन्म-दिवस एवं मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी म.सा. की पुण्य तिथि सामायिक-स्वाध्याय तथा तप-त्याग के साथ मनाई गई। शासन सेवा समिति के सदस्य श्री हस्तीमल जी गोलेछा ने आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का गुणानुवाद करते हुए पूज्य श्री मरुधर केसरी जी म.सा. एवं पंजाब से पधारे संत-भगवन्तों के रत्नसंघ से अतीत से लेकर वर्तमान तक के सम्बन्धों को रेखांकित किया। धर्मसभा में संत-भगवन्तों के अतिरिक्त भिनाय के श्री लोढ़ा जी, श्री अमरचन्द जी मोदी, श्री भागचन्द जी छाजेड़, श्रीमती सुशीला जी सुराणा, श्रीमती मंजू जी भण्डारी, श्री महेन्द्र जी गोलेछा आदि ने दोनों महापुरुषों के गुणगान किए।

बैंगलोर- आचार्यप्रवर की 99वीं जन्म-जयन्ती पर यहाँ श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा एक अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया गया। बैंगलोर निवासी श्री चन्द्रशेखर के एक पाँव में गैंगरिन होने के कारण उसका ऑपरेशन तथा दूसरे पाँव में कृत्रिम जर्मन पाँव लगाया गया। श्राविका मण्डल ने इसके लिए 1,76000 रुपये

व्यय कर अपंग को पाँव दिए। भाई चन्द्रशेखर ने व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के मुखारविन्द से गुरुदेव की जयन्ती पर आजीवन मद्यपान का त्याग किया। *-वैजयन्ती मेहता, मंत्री*

आलन्दुर- श्रद्धेय श्री पन्नालाल जी म.सा. की सुशिष्या डॉ. ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. की 99वीं जन्म-जयन्ती तप-त्याग, साधना-आराधना के साथ मनाई गयी। लगभग 300 जनों की उपस्थिति में आचार्यप्रवर के गुणग्राम किये गये। *-सुधीर सुराणा, चेन्नई*

उदयपुर- सन्मति जैन महिला मंडल की ओर से महावीर साधना एवं स्वाध्याय समिति सभागार में आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की 99वीं जन्म-जयन्ती के उपलक्ष्य में उनके जीवन दर्शन पर विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्यवक्ता प्रो. चाँदमल जी कर्णावट ने आचार्य श्री के साथ व्यतीत यादगार क्षणों का जिक्र करते हुए कहा कि उनकी छोटी-छोटी बातें भी बड़ी अर्थपूर्ण एवं प्रेरक होती थीं। डॉ. दिलीप धींग ने आचार्य हस्ती आरती काव्य का पाठ किया और आगामी जन्म शताब्दी वर्ष के लिए उनके जीवन दर्शन पर आधारित समयबद्ध कार्ययोजना बनाकर क्रियान्वित करने का सुझाव दिया। श्री मानमल कुदाल ने उनके सामायिक व स्वाध्याय के संदेशों की प्रासंगिकता बताई। श्री एच.एस. वर्डिया, रेखा जैन, रश्मि पगारिया आदि ने भी विचार रखे। संचालन श्री राजेन्द्रमल कुम्भट ने किया। महिला मण्डल अध्यक्ष श्रीमती माया कुम्भट ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

गोपालगढ़ भरतपुर- आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की 99वीं जन्म-जयन्ती के उपलक्ष्य में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ मौहल्ला गोपालगढ़ की ओर से जनाना अस्पताल में रोगियों को फल वितरण किया गया। संघ के पदाधिकारियों ने अस्पताल पहुँचकर महिलाओं तथा बच्चों को फल एवं बिस्कुट वितरित किए।

बैंगलोर में द्विदिवसीय कार्यशाला

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, बैंगलोर के तत्त्वावधान में श्री जैन रत्न युवक परिषद् एवं श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के सहयोग से द्विदिवसीय कार्यशाला का दूसरी बार आयोजन किया गया। कार्यशाला का संक्षिप्त शीर्षक था- "FIL" (Fruitfull Inspiration in Life)। कार्यशाला का आयोजन आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वीप्रमुखा महासती श्री

मैनासुन्दरी जी म.सा. की सुशिष्या व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा., महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा 7 की सन्निधि में हुआ। कार्यशाला में कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश एवं तमिलनाडु प्रान्तों के 17 स्थानों से लगभग 780 शिविरार्थियों ने ज्ञानाराधन के साथ त्याग-प्रत्याख्यान में विशेष रुचि प्रदर्शित की। प्रातः 7 बजे से रात्रि 9 बजे तक चले कार्यक्रमों में सादा सरल जीवन, जिनशासन के लिए युवाशक्ति, जैन जीवन शैली, अनुकम्पा, निन्दा, साधना के सोपान, सुख-दुःख, चेतन की अनुभूति आदि विषयों का विवेचन किया गया। शिविर में प्रश्नोत्तरों के माध्यम से सुश्रावकों के धार्मिक जीवन की जानकारी प्राप्त की गई। शिविरार्थियों ने अनेकविध संकल्प किये, यथा- संघ-सेवा में कुछ दिन लगाना, संघ में दान देना, निन्दा नहीं करना, प्रतिदिन सामायिक करना, संत-सती की सेवा का लाभ लेना, प्रातः 9 बजे पूर्व व्यापारिक मीटिंग नहीं करना, जमीकन्द का त्याग, रात्रिभोजन का त्याग आदि। शिविरार्थियों ने सन् 2009 में एक शास्त्र का स्वाध्याय करने, नया थोकड़ा सीखने, संवर-साधना करने, सपरिवार साधना करने तथा तप-आराधना करने का भी नियम लिया। शिविर में अनुशासन, उत्साह एवं परीक्षा के माध्यम से 7 शिविरार्थियों का चयन किया गया, जिनमें से श्रेष्ठ को SUNFIL उपश्रेष्ठ को MOON FIL तथा शेष पाँच को STAR के रूप में सम्मानित किया गया। थाली धोकर पीने की व्यवस्था से भोजन में जूठन नहीं गया। प्रत्येक कक्षा में अनुशासन हेतु कक्षा मॉनिटर नियुक्त किये गये, सभी शिविरार्थियों से Feed Back फार्म भी भरवाये गये, जिनके माध्यम से शिविर के बारे में शिविरार्थियों के विचार ज्ञात हुए। बैंगलोर श्रीसंघ की सभी व्यवस्था उत्तम रही। श्री भरत जी सांखला के संयोजन में सभी कार्यक्रम सुव्यवस्थित सम्पादित हुए।

महाराष्ट्र क्षेत्र में धार्मिक प्रचार यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर एवं महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगाँव के संयुक्त तत्त्वावधान में 17 से 22 जनवरी 2009 तक महाराष्ट्र के वरणगांव, मुक्ताईनगर, बोदवड़, फत्तेपुर, तोंडापुर, भराडी, सिल्लोड़, पहुर, शेन्दुर्णी, पाचोरा, भड़गाँव, कजगाँव, लासलगाँव, विंचुर, निफाड़, कसबे सुकाणा, चांदवड़, मालेगांव, धुलिया, नरडाणा, शिरपुर, होलनांथा, लासुर, धरणगांव आदि क्षेत्रों में प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रचार कार्यक्रम में स्वाध्याय संघ शाखा मेवाड़ के परामर्शदाता एवं

विद्वान् श्री फूलचन्द जी मेहता-उदयपुर, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्यालय प्रभारी श्री प्रकाश जी सालेचा-जोधपुर की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुई। महाराष्ट्र शाखा के संयोजक श्री कस्तुरचन्द जी बाफना-जलगांव, श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ के प्राचार्य श्री प्रकाशचन्द जी जैन-जलगांव, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री माणकचन्द जी गादिया-चालीसगांव, महाराष्ट्र क्षेत्र के प्रचारक श्री हीरालाल जी मण्डलेचा-फत्तेपुर, श्री अनिल जी गेलड़ा-जलगांव की भी अल्पकालीन सेवाएँ प्रचार-कार्यक्रम के दौरान प्राप्त हुई। सभी स्थलों पर नये स्वाध्यायी बनने, पर्युषण में स्वाध्यायी बुलाने, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में भाग लेकर ज्ञानवृद्धि करने, धार्मिक शिक्षण शाला प्रारम्भ करने के साथ ही संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की गतिविधियों से अवगत कराया गया। प्रचार-प्रसार के दौरान 25 नये स्वाध्यायी बनाए गए। जिनवाणी एवं स्वाध्याय शिक्षा पत्रिका के सदस्य भी बनाए गए। सभी स्थानों पर स्थानक में सामूहिक प्रार्थना, सामायिक एवं स्वाध्याय करने की प्रभावी प्रेरणा की गई। *-मोहनकौर जैन, सचिव*

विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन

हस्तिनापुर में भगवान् पार्श्वनाथ के 2885वें जन्म-कल्याणक के अवसर पर 21 दिसम्बर 2008 को आयोजित विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील के करकमलों से हुआ। सम्मेलन में देशभर से लगभग 15000 जैन श्रद्धालु शामिल हुए। गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से आयोजित इस सम्मेलन में विद्वज्जनों के वक्तव्य भी हुए। विद्वानों में डॉ. अनुपम जैन-इन्दौर, प्रो. टीकमचन्द जैन-दिल्ली आदि ने सम्बोधित किया।

चेन्नई में एक दिवसीय कार्यशाला

चेन्नई- श्री जैन स्वाध्याय संघ, चेन्नई की ओर से 20 की सायंकाल से 21 दिसम्बर सायंकाल तक एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें युवापीढ़ी को धर्म से जोड़ने, दुःखनिवारण, स्वाध्याय, सकारात्मक सोच, सम्यग्दर्शन एवं जीवन व्यवहार, निन्दा से बचाव के उपाय, समय-प्रबन्धन आदि विषयों पर वक्तव्य हुए। इस कार्यक्रम में 90 व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

-सुधीर सुराणा, चेन्नई

संक्षिप्त समाचार

साण्डेराव- उपाध्याय श्री कन्हैयालाल जी म.सा. 'कमल' की दीक्षाभूमि साण्डेराव में 31 जनवरी को मुमुक्षु श्री फूटरमल जी एवं श्री सागरमल जी की दीक्षा का आयोजन है तथा उपाध्याय श्री की स्मृति में निर्मित कमल विहार का उद्घाटन है। इस अवसर पर श्री सौभाग्यमुनि जी 'कुमुद', प्रवर्तक श्री रूपचन्द जी म.सा. 'रजत', उपप्रवर्तक श्री विनयमुनि जी 'वागीश' आदि अनेक संतों के विराजने की संभावना है।

दिल्ली- न्यायविद् डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी के सम्मान में 'दृष्टि में सृष्टि : डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी दिग्दर्शन' ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है। पांचाल शोध संस्थान की ओर से प्रकाश्य इस ग्रन्थ के प्रायोजक हैं श्री चन्द्रप्रकाश अग्रवाल। संयोजक, समन्वयक एवं सम्पादक क्रमशः श्री ललित नाहटा, श्रीमती कमला सिंघवी एवं श्री ओंकार श्री हैं। विद्वानों एवं सुधीजनों से निवेदन है कि वे डॉ. सिंघवी सम्बन्धी दुर्लभ/प्रेरक सामग्री/पत्र/चित्र/संक्षिप्त संस्मरण नाहटा चेम्बर्स, 231-मस्जिद मोठ, साउथ एक्सटेंशन, भाग-2, नई दिल्ली 110049 के पते पर भिजवाएँ।

थाना- मुनि श्री जयानन्दविजयजी द्वारा लिखित-सम्पादित "माँ के चरणों में समर्पित" माँ की महिमा को मण्डित करती हुई 212 पृष्ठीय पुस्तक निम्नांकित पते पर 5 रुपये के पोस्टेज स्टाम्प भेजने पर भेंट स्वरूप भेजी जायेगी। पता- *जे.के. संघवी, कल्पतरु प्रकाशन, 305 स्टेशन रोड, संघवी भवन, शंकर मंदिर के सामने, थाने (प.)-400601 (महा.)*

बूंदी- राजकीय कन्या महाविद्यालय के इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. एस.एल. नागौरी की 108वीं पुस्तक का लोकार्पण जालोर के जिला कलेक्टर श्री एस.एस. बिस्सा के सान्निध्य में हुआ। अध्यक्षता झालावाड़ जिलासत्र न्यायाधीश श्री के.बी.कट्टा ने की। श्री नागौरी विगत 16 वर्षों से ब्रह्मचर्य का पालन कर रहे हैं। प्रति रात्रि 7 सामायिक करते हैं तथा गत 7 वर्षो से घी एवं शक्कर का उनके त्याग है।

जोधपुर- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर द्वारा जोधपुर की रत्नसंघीय निर्देशिका का प्रकाशन किया जा रहा है। जोधपुर के सभी रत्नबन्धुओं से निवेदन है कि स्वयं का फार्म व अपने क्षेत्र से सम्बन्धित किसी प्रकार का कोई संशोधन हो तो 23 फरवरी से 28 फरवरी तक सायं 5.30 से 7.30 बजे तक युवक परिषद्

कार्यालय, घोड़ों का चौक में सम्पर्क करके संशोधन करावें। *-शेखर सुराणा, सचिव, फोन नं. 0291-2641445 (कार्यालय)*

जोधपुर- करुणा इन्टरनेशनल के जोधपुर केन्द्र द्वारा राज्य स्तर पर वार्षिक समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें बीकानेर, पाली, हनुमानगढ़, सवाईमाधोपुर, नदबई, लालसोट आदि अनेक स्थानों से अध्यापकों एवं करुणा केन्द्रों के पदाधिकारियों व सदस्यों ने भाग लिया। इस अवसर पर श्रेष्ठ केन्द्रों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता लाचू मैमोरियल कॉलेज के प्राचार्य श्री आर. एल. माथुर ने की। श्री सुरेशचन्द जी कांकरिया-चेन्नई, श्री भद्रेश जी-चेन्नई, श्री इन्दरचन्द जी दुग्गड़-बीकानेर आदि ने भी अतिथियों के रूप में सम्बोधित किया। श्रीमती सुशीला बोहरा ने अतिथियों का स्वागत किया तथा जोधपुर केन्द्र के अध्यक्ष श्री मनोज जी डागा ने केन्द्र की गतिविधियों से परिचित कराया। इस अवसर पर विभिन्न विद्यालयों के अध्यापकों एवं छात्रों ने भाग लेकर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया। समारोह के अन्तर्गत करुणा, दया, प्रेम, मैत्री, परोपकार आदि के भावों को छात्र में सिंचित करने की प्रेरणा की गई।

जयपुर- जैन सोशियल ग्रुप टोपाज, पी.डी. जेम्स एवं राजरतन ज्वैलर्स के संयुक्त तत्त्वावधान में 11 जनवरी को आयोजित विशाल रक्तदान शिविर में 925 यूनिट रक्त एकत्र हुआ।

हैदराबाद- अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संभागीय अध्यक्ष श्री श्रीपाल देशलहरा एवं उनके सहयोगियों ने विजयवाड़ा की ओर जाते हुए एक ट्रक लॉरी में 58 गाय-बछड़ों को बचाया।

बधाई

श्री आर. एम. लोढ़ा उच्चतम न्यायालय के न्यायाधिपति बने

जोधपुर- श्रद्धानिष्ठ श्रावकरत्न एवं न्यायाधिपति श्री राजेन्द्रमल जी लोढ़ा पटना

उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश पद से अब उच्चतम न्यायालय, नई दिल्ली के न्यायाधीश पद पर सुशोभित हो गए हैं। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संरक्षक एवं सेवानिवृत्त न्यायाधिपति श्री श्रीकृष्णमल जी लोढ़ा के सुपुत्र श्री राजेन्द्रमल जी लोढ़ा का जन्म 28 सितम्बर 1949 में हुआ। बी.एस.सी., एल.एल.बी., उत्तीर्ण करने के पश्चात् उन्होंने वकालात में ख्याति प्राप्त की और राजस्थान में कुछ

माह न्यायाधीश नियुक्त होकर मुम्बई उच्च न्यायालय में न्यायाधीश बने। तेरह वर्ष तक वहाँ प्रभावी रीति से कार्य करने के पश्चात् राजस्थान उच्च न्यायालय में कतिपय माह रहकर 13 मई 2008 को पटना उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश बने। वहाँ आपके कार्य को भूरि-भूरि प्रशंसा मिली तथा 17 दिसम्बर 2008 को नई दिल्ली में उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में आपने शपथ ग्रहण की है। रत्नसंघ आपकी इस उपलब्धि से गौरवान्वित है।

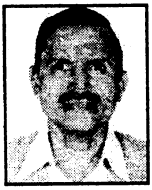

जोधपुर- जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन को जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। उन्होंने 3 जनवरी 2009 को कार्यभार संभाल लिया है।

मैसूर- जूनियर चेम्बल इण्टरनेशनल की शाखा जे सी आई मैसूर रॉयल सिटी के

वर्ष 2009 के लिए अध्यक्ष रूप में जेसी राजन बाघमार निर्विरोध चुने गए। रत्नसंघीय कर्मठ कार्यकर्ता, जीवदया एवं गो-सेवा कार्य में समर्पित श्री सोहनलाल जी बाघमार (कोसाणा वाले) के वे कनिष्ठ पुत्र हैं। राजन बाघमार ने इससे पूर्व संस्था में दो बार उपाध्यक्ष एवं कोषाध्यक्ष के रूप में सेवाएँ दी हैं।

उदयपुर- श्रीमती पुष्पा जैन खोखावत धर्मपत्नी श्री रमेश जी खोखावत ने

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से एम.ए. (जैनोलॉजी एवं प्राकृत) में 80.75 प्रतिशत अंक प्राप्त कर सन् 2008 की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। आप एक समाजसेविका के रूप में भी अपनी पहचान रखती हैं तथा कई संस्थाओं से सम्बद्ध हैं।

कोलकाता- अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेन्स, नई

दिल्ली की ओर से श्रीमती मंजू प्रेम भण्डारी को राष्ट्रीय महिला उपाध्यक्ष चुना गया है। आप कोलकाता की गुरु हस्ती दिवाकर जैन सेवा समिति, चन्दनबाला महिला मण्डल, जागृति महिला मण्डल इत्यादि संस्थाओं के साथ ही मैत्री चेरिटेबल फाउन्डेशन, दिल्ली व आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर से भी जुड़ी हुई हैं।

चेन्नई- 'श्री मुक्तामिश्री दानवीर भामाशाह अलंकरण वर्ष 2008' श्री जबरचन्द जी खींवसरा, आवड़ी (मरुधरा में बिलाड़ा) को दिया गया है। श्री खींवसरा जी जिनशासन की सेवा, तप-त्याग-दान आदि में अग्रणी रहे।

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर- श्रद्धानिष्ठ, सत्यनिष्ठ, सुश्रावक श्रीमान् मूलराज जी धारीवाल का 93 वर्ष की आयु में 7 जनवरी 2009 को स्वर्गगमन हो गया। कर्त्तव्यपरायणता, सेवाभावना, विनम्रता, स्वावलम्बिता, दानशीलता आदि अनेक गुणों से सम्पन्न श्री धारीवाल जी के संस्कार उनकी सुपुत्री आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की संयोजक श्रीमती सुशीला जी बोहरा तथा सुपुत्री श्रीमंती शान्ता जी मोदी, पूर्व संयोजक श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, जयपुर के द्वारा समस्त परिवार में आगे बढ़ाये जा रहे हैं। श्री धारीवाल साहब का जीवन सामायिक-स्वाध्याय एवं तप-प्रत्याख्यान से युक्त था। आप प्रशासनिक सेवा में उच्च पद पर कार्यरत रहे। राजकीय सेवा में होते हुए भी आपकी कार्यपद्धति में निष्कपटता, नैतिकता एवं प्रामाणिकता विद्यमान थी। आपने चिरकाल तक अपने जीवन में स्वावलम्बी के गुण को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया।

जोधपुर- अनन्य गुरुभक्त श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ सेवाभावी सुश्रावक श्री पारसमल जी बोथरा सुपुत्र स्व. सुश्रावक श्री रतनलाल जी चौपड़ा का 13 जनवरी 2009 को हृदय गति रुक जाने से आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे दृढ़धर्मी श्रावक थे। गुरु भक्ति, संघनिष्ठा और स्वधर्मी वात्सल्य की सेवा-भावना प्रमोदजन्य थी। चेन्नई से व्यापार-व्यवसाय से मुक्त होकर वे विगत पाँच-छः वर्षों से जोधपुर रहकर धर्म-साधना करते हुए अपना जीवन शांति पूर्वक व्यतीत कर रहे थे। गुरु हीरा-गुरु मान के प्रति उनकी अटूट आस्था थी। वे अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं। उनके सुपुत्र श्री जितेन्द्र जी एवं ललित जी बोथरा की संघ के प्रति पूर्ण निष्ठा है।

जयपुर- समाजसेवी, श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री हीराचन्द जी नवलखा सुपुत्र स्व.

श्री सिरहमल जी नवलखा का 4 जनवरी 2009 को जर्मनी में आकस्मिक देहावसान हो गया। आप विगत 32 वर्षों से जर्मनी में इडार और ओस्टन में निवास कर रहे थे। संस्कारित एवं श्रद्धानिष्ठ परिवार में जन्मे नवलखा साहब का उनकी पत्नी श्रीमती उर्मिला जी एवं एकमात्र सुपुत्री श्रीमती पूनम जी सुराणा ने अन्त समय में हर प्रकार से सहयोग किया।

ब्यावर- दृढ़धर्मी, आदर्श श्रमणोपासक श्री लाभचन्द जी मकाना का 10 जनवरी

2009 को हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। पीपलिया बाजार, जैन स्थानक के सामने निवास स्थान होने से आपको चरित्र आत्माओं के प्रति सेवारत रहने का लाभ मिलता था। आपका पूज्य आचार्य श्री जयमल जी म.सा. के प्रति समर्पण भाव रहा, फिर भी आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के संवत् 2032 के चातुर्मास में आपके परिवार का तन-मन-धन से समर्पण रहा। श्रावकों के लिए चौका व्यवस्था में आपने अपने मकान का सहयोग दिया। संवत् 2046 में उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के चातुर्मास में आपका पूर्ण सहयोग रहा है। आपके अनुज श्री सम्पतराज जी, सुपुत्र युवारत्न श्री दुलीचन्द जी सेवाभावी श्रमणोपासक हैं।

जोधपुर- सरलमना, स्नेहमयी, सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती गुलाब गांग

धर्मपत्नी श्री जसवन्तमल जी गांग तथा सुपुत्री स्व. श्री परमात्माचन्द जी भण्डारी का 15 जनवरी 2009 को आकस्मिक निधन हो गया। रत्नसंघ के प्रति समर्पित श्राविका अपनी मधुरवाणी से सबको प्रभावित कर सम्बन्धों को गरिमा प्रदान करती हुई आत्मीयता और अपनत्व से सबके मन को मोह लेती थी।

जोधपुर- युवारत्न श्री लखपत जी सिंघवी का 11 जनवरी 2009 को युवावय में

देहावसान हो गया। आप समाजसेवी, मिलनसार एवं स्पष्टवादी थे। यथासमय धार्मिक कार्यक्रमों में संलग्न रहते थे। आप रत्नसंघ में दीक्षित संत स्व. श्री कैलाशमुनि जी म.सा. के सांसारिक भतीजे थे। युवक परिषद् द्वारा आयोजित विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में उनका सहयोग रहता था। इसके साथ ही अन्य कई सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं से आप जुड़े हुए थे।

वर्धा- सुश्राविका श्रीमती जीजाबाई धर्मपत्नी सुश्रावक श्री घेवरचन्द जी सेठिया

का 99 वर्ष की आयु में 21 दिसम्बर 2008 को निधन हो गया। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति समर्पित थीं। आपका जीवन अनेक सद्‌गुणों से ओतप्रोत था।

सवाईमाधोपुर- श्रद्धानिष्ठ श्री लोकेश जी जैन सुपुत्र श्री सोमप्रकाश जी जैन,

आवासन मण्डल का 8 जनवरी को युवावय में आकस्मिक देहान्त हो गया। वे मालवीय इंजीनियरिंग कॉलेज, जयपुर में बी.टेक. तृतीय वर्ष के प्रतिभासम्पन्न छात्र थे तथा कक्षा में अव्वल स्थान पर थे। शान्तप्रवृत्ति के धनी एवं मृदुभाषी लोकेश जी की सन्त-सतियों के प्रति पूर्ण श्रद्धा थी। वे श्रावकरत्न श्री कपूरचन्द जी (बिलोपा वाले), मुम्बई के भतीजे थे।

हिण्डौन- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री हजारीलाल जी जैन का 87 वर्ष की आयु में 4

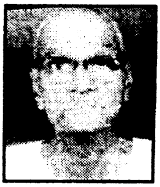

जनवरी 2009 को स्वर्गगमन हो गया। सरलता, सादगी, उदारता एवं मधुरता जैसे गुणों के कारण घर-परिवार एवं संघ-समाज में आप सबके प्रियपात्र थे। आप धर्मनिष्ठ, संघनिष्ठ सहृदयी श्रावक थे। आप इस वय में भी प्रतिदिन सामायिक करते थे तथा स्थानक में आकर शास्त्रवाचन तथा धर्मचर्चा करना आपकी दिनचर्या में था। संत-सतियों के प्रति आपके मन में अनन्य भक्ति-भाव था। आपके सद्प्रयासों से तथा सहयोग से श्री जैन रत्न हितैषी जीवदया ट्रस्ट की स्थापना की गई, जिसके आप संस्थापक थे। आप अपने पीछे सुसंस्कारित, धर्मनिष्ठ एवं सेवाभावी परिवार छोड़कर गए हैं। - धर्मचन्द जैन, मंत्री

बैंगलोर- सुश्रावक श्री कुन्दनमल जी भण्डारी का 28 नवम्बर 2008 को

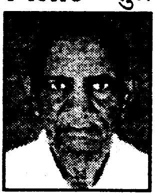

आकस्मिक देहावसान लगभग 95 वर्ष की वय में हो गया। मूलतः कुचेरा निवासी श्री भण्डारी जी बैंगलोर के प्रतिष्ठित श्रावक थे। आप प्रतिदिन 8 से 10 सामायिक करते थे। प्रत्येक चतुर्दशी को उपवास करना आपका नियम था। विगत 60 वर्षों से वे हाथ से बनी शुद्ध खादी के वस्त्रों का ही प्रयोग करते थे तथा 30 वर्षों से सजोड़े शीलव्रत का पालन कर रहे थे। विगत 60 वर्षों से आपके रात्रि-भोजन त्याग था। प्रातः दूध ग्रहण करने के पश्चात् एक समय ही भोजन करते थे। प्रतिमाह स्वधर्मी बन्धुओं को अर्थ सहायता करते थे। आप साधु नहीं, किन्तु साधु सरीखे थे। आप गुणग्राही, स्वाध्यायप्रेमी एवं निन्दा-विकथा से दूर थे।

श्रीकाला हस्ती (आ.प्र.)- मेड़ता सिटी की धर्मनिष्ठ श्राविका श्रीमती रतनी देवी

जी बागमार धर्मपत्नी स्व. श्री मांगीलाल जी बागमार का 86 वर्ष की आयु में 26 दिसम्बर 2008 को स्वर्गवास हो गया। वे प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करती थीं एवं गुरु हस्ती-गुरु हीरा के प्रति आपकी अपार श्रद्धा थी।

बारां- श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री प्रेमचन्द जी मारु का आकस्मिक देहावसान 11 दिसम्बर 2008 को हो गया। आप धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यपरायण एवं जागरूक श्रावक थे। सामायिक-स्वाध्याय में आपकी गहन रुचि थी। संत-सती वृन्द की सेवा में आप अग्रणी रहते थे।

विल्लीपुरम- श्री कंवरलाल जी ओस्तवाल मूल निवासी मीठापुर खारिया का 24

दिसम्बर 2008 को हृदयगति रुक जाने से 71 वर्ष की वय में स्वर्गवास हो गया। अहिंसाप्रेमी, तपस्वी एवं दानवीर श्री ओस्तवाल सा. पूज्य श्री समर्थमल जी म.सा. के भक्त थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

बैंगलोर- सुश्रावक श्रीमान् एस. कन्हैयालाल जी बम्ब का संथारापूर्वक 5 जनवरी

2009 को सायंकाल 84 वर्ष की वय में स्वर्गगमन हो गया। आपने व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के मुखारविन्द से इसी दिन संथारे के प्रत्याख्यान लिए थे। धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक का जन्म निमाज में हुआ तथा आपने आचार्य भगवन्त के संथारे के समय खूब सेवाएँ दीं। आप प्रतिवर्ष मित्रों के साथ संतों की सेवा में जाना अपना कर्त्तव्य समझते थे।

अहमदाबाद- सुश्रावक श्री अजयराज जी मेहता सुपुत्र स्व. श्री किशनचन्द जी

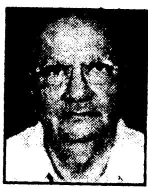

मेहता (भोपालगढ़ निवासी, उम्बरगांव एवं अहमदाबाद प्रवासी)का देहावसान 73 वर्ष की आयु में 25 नवम्बर 2008 को हो गया। गुरु हस्ती एवं गुरु मान के प्रति अनन्य श्रद्धा भक्ति से समन्वित, संघ में समर्पित, सुश्रावक का जीवन सामायिक, स्वाध्याय एवं नित्य-नियमों से ओत-प्रोत था। वे प्रतिवर्ष गुरु भगवन्तों के दर्शन कर आध्यात्मिक क्षेत्र में आगे बढ़ने का प्रयत्न करते थे। मैत्री, सेवा एवं परोपकार

क़ी भावना उनमें कूट–कूट कर भरी थी। कई वर्षों पूर्व उन्होंने आजीवन शीलव्रत अंगीकार कर लिया था। सरलता, सादगी एवं उदारता की प्रतिमूर्ति श्री मेहता जी अपने पीछे भरा–पूरा परिवार छोड़कर गए हैं। 25 नवम्बर को प्रातः पूरी जागरूकता के साथ संथारा अंगीकृत करने के पश्चात् शाम 4 बजे उन्होंने देह–त्याग कर दिया था।

मैसूर- श्री बाबूलाल जी रांका का 21 दिसम्बर 2008 को 56 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया।

जयपुर- श्रीमती चाँदबाई धर्मपत्नी श्री देवीलाल जी सांखला भिनाय वालों का 86 वर्ष की आयु में निधन हो गया। सांखला परिवार ने पल्ला प्रथा का त्याग किया तथा सात दिन में ही शोक का निवारण किया। –नरेन्द्र कक्कड़

हिण्डौन सिटी- सुश्राविका श्रीमती सम्पत्ति देवी धर्मपत्नी सुश्रावक स्वर्गीय श्री रामसहाय जी जैन, कंजोली वाले का सागारी संथारे के साथ 95 वर्ष की आयु में 11 जनवरी 2009 को स्वर्गवास हो गया। धर्मनिष्ठ श्राविका अपने पीछे 6 पुत्रों का भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं। पूरे परिवार की आचार्य एवं उपाध्यायप्रवर के प्रति अटूट आस्था है।

खेतिया (बड़वानी)- सुश्राविका श्रीमती मदनबाई जी धर्मपत्नी सुश्रावक श्री छगनलाल जी चोरडिया का 62 वर्ष की वय में 11 अक्टूबर 2008 को स्वर्गगमन हो गया। आप पूज्या महासती श्री मदनकुंवर जी म.सा. की सांसारिक भाभीजी थीं। आपका जीवन धर्मनिष्ठ था तथा एवं अनेकविध सद्गुणों से सम्पन्न थी।

मुम्बई- सुश्रावक श्री नरेन्द्र कुमार जी जोटा सुपुत्र श्री प्रतापसिंह जी जोटा, उदयपुर का आकस्मिक निधन 17 दिसम्बर 08 को मुम्बई में हो गया। श्री जोटा सा एक कर्मठ उद्योगपति रहे। सूरत में एक कॉलेज एवं उदयपुर में जैन शिक्षण संस्था तथा अन्य कई संस्थाओं को आपने सहयोग प्रदान किया था। अन्तिम समय में वे धार्मिक प्रवृत्ति में ही लीन रहे। आप अपने पीछे धर्मपत्नी सहित दो पुत्र व एक पुत्री छोड़ गए हैं। आपकी धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती विमला जी जोटा जिनवाणी पत्रिका की लेखिका हैं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

2500/- साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु

682 Shri Champa Lal ji Bothra, Sowcarpet, Chennai (Tamilnadu)
683 Shri J. Bhag Chand ji Jain, Triplicane, Chennai (Tamilnadu)
684 श्री हितैष कुमार जी जैन, गंजखेरली-अलवर (राजस्थान)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

11818 श्री संपतराज जी देसर्डा, शिखरजी दर्शन, आनन्द पार्क, शंकरसेठ रोड, पुणे (महाराष्ट्र)
11819 सौ. छाया जी ओसवाल, सुगंधा चेम्बर्स, रास्ता पेठ, पुणे (महाराष्ट्र)
11820 Shri Prakash ji Jain, Jayanagar, Bangalore (Karnataka)
11821 श्री कांतिलाल जी गोलेछा, बाड़मेर कलैण्डर रोड, बालोतरा, बाड़मेर (राजस्थान)
11822 श्री श्रीपालसिंह जी मोहनोत, सेक्टर 46, गुड़गाँव (हरियाणा)
11823 Shri J. Bhag Chand ji Jain, Triplicane, Chennai (Tamilnadu)
11831 Smt. Shanta Bai ji Bhurat, Hirepeth, Hubli (Karnataka)
11832 श्रीमती सीमा जी जैन, जैन भवन, बुर्ज मौहल्ला, हापुड़ (उत्तरप्रदेश)
11833 Smt. Deepali ji Bothra, Dhanu Fort, Distt. Thane (M.H.)
11834 श्री ओमप्रकाश जी चपलोत (सी.ए.), भूपालपुरा, उदयपुर (राजस्थान)
11835 Shri Mahavir ji Surana, Mangalore (Karnataka)
11836 Shri Shripal ji Chordia, Nr. Hotel Ambita, Chennai(T.N.)
11837 Shri Manish ji Mehta, Worli Sea Face, Mumbai (M.H.)
11838 श्री सुमन जी फुलफगर, प्रथम पोलो, पावटा, जोधपुर (राजस्थान)
11839 श्री अंकित कुमार जी सिपानी, मीरा रोड (ईस्ट), जिला-थाने (महाराष्ट्र)
11840 श्री प्रवीण जी लोढ़ा (एडवोकेट), दफ्तरियों का बास, मोती चौक, जोधपुर (राजस्थान)
11841 Shri Parasmal ji Bagrecha, Ahemdabad (Gujrat)
11842 Shri Vikram N. Bothra ji, Dahanu (M.H.)
11843 श्री तपस्वीलाल जी बाघमार, आजाद चौक, गोरखपुर, जबलपुर (मध्यप्रदेश)
11844 श्री महावीरचन्द जी जैन, सिविल लाईन, चन्द्रपुर (महाराष्ट्र)
11845 Shri Goutam Chand ji Jain, Kothapet, Hyderabad (A.P.)
11846 श्री अनिल कुमार जी जैन, न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राजस्थान)
11847 Smt. Kanta Bai ji Baghmar, Mysore (Karnataka)
11848 Smt. Kunal ji Bachhawat, Circular Road, Kolkata (W.B.)
11849 Shri Raju ji Mehta, Plot No.4, Vashi Navi, MUMBAI (M.H.)
11850 श्री राकेशकुमार जी सांड, नन्दिनी होटल के पास, बिब्बेवाडी, कोडवा रोड, पूना (महा.)

11851 श्रीमती अरूणाजी डूंगरवाल, फ्रीडम फाइटर इन्कलेव,प्रथम मंजिल,नेबसराय,नई दिल्ली

11852 श्री संजीव जी बोकाड़िया, कबाड़ गली, सीमेण्ट कॉर्नर, बीड़ (महाराष्ट्र)

11853 श्री महेन्द्रजी कटारिया,केनरा बैंक के सामने,टोकरखाड़ा, सिलवासा (दादर-नगरहवेली)

11854 श्री मुनीश्वरनाथ जी मोदी,गुरुदेव कॉम्पलेक्स,सायली रोड,सिलवासा(दादर-नगरहवेली)

11855 श्री शांतिलाल जी मोदी, योगी हॉस्पिटल के सामने, सिलवासा (दादर-नगरहवेली)

11856 श्री विनीतजी गोयल,पार्क सिटी, सिलवासा (दादर-नगरहवेली)

11857 श्री दिनेश बी. कटारिया, पदमावती विहार, सिलवासा (दादर-नगरहवेली)

श्री विमलचन्द जी धोका, मैसूर के सौजन्य से

11824 Shri D. Ugamraj ji Roonwal, Mysore (Karnataka)

11825 Shri Jeyhmal ji Roonwal, Mysore (Karnataka)

11826 Shri Pukhraj ji Roonwal, K. T. Street, Mysore (Karnataka)

11827 Shri Sampatraj ji Patwa, Mysore (Karnataka)

11828 Shri Vinod Kumar ji Lunawat, Mysore (Karnataka)

11829 Shri Prakash Chand ji Luniya, Tirupathy, Chitoor (A.P.)

11830 Shri Naval Mull ji Kothari, Tagadgaon, Beed (M.H.)

श्री आर. पदमचन्द जी बाघमार, चेन्नई के सौजन्य से

11858 श्री कुन्दनमल जी मुणोत, 51, अमरनगर, जोधपुर (राजस्थान)

जिनवाणी हेतु साभार

11000/-श्री सज्जनराज जी बाफणा, जलगाँव, सौ.कां. अशिता जी(रजनी) सुपुत्री श्री सुरेशचन्द जी माँगीलाल जी बाफणा, जलगाँव संग चि. नरेश कुमार जी सुपुत्र श्रीमान् शाह अशोक कुमार जी ललवाणी, सूरत का शुभ विवाह दिनांक 02.12.2008 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

11000/-श्री रावलचन्द जी इन्दरचन्द जी चौपड़ा, जोधपुर, श्रीमती चम्पादेवी-रावलचन्द जी चौपड़ा के वैवाहिक जीवन के 51 वर्ष पूर्ण होने तथा उनके सुपौत्र चि. पीयूष चौपड़ा (सुपुत्र श्री भंवरलाल जी चौपड़ा) का परिणय सौ. कां. श्वेता (सुपुत्री श्री राजेन्द्र जी लुणिया) के संग सानन्द सम्पन्न होने तथा प्रपौत्री परी चौपड़ा के प्रथम जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

10000/-श्री महेश जी दलाल, मुम्बई, सुपुत्र चि. कुणाल का शुभविवाह दिनांक 10.01.2009 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

5100/-श्री सम्पतराज जी, ज्ञानचन्द जी बाघमार, श्रीकालहस्ती-चित्तूर, धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती रतनी देवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री माँगीलाल जी बाघमार का 86 वर्ष की आयु में दिनांक 26.12.2008 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

5000/-श्रीमती पुष्पा धर्मपत्नी स्व. श्री महिपालचन्द जी भण्डारी एवं श्री दिलीप जी भण्डारी, चेन्नई, साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 63वीं दीक्षा

जयन्ती के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/-श्री हस्तीमल जी महेन्द्र कुमार जी बोहरा (रतकुड़िया वाले), पीपाड़ शहर, हृदय का सफल ऑपरेशन एवं पूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संतवृन्द के दर्शन लाभ लेने के उपलक्ष्य में भेंट।

2100/-श्री प्रसन्नचन्द जी, सुरेशचन्द जी, दिलीपचन्द जी, उत्तमचन्द जी पौत्र स्व. श्री रीढमलचन्द सा भण्डारी (बारणीखुर्द वाले), चेन्नई, साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. के पावटा चातुर्मास में दर्शनलाभ लेने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/-श्रीमती केसरकंवर जी धारीवाल एवं समस्त परिवार, जोधपुर, स्व. श्रीमान् मूलराज सा धारीवाल की पुण्य स्मृति में भेंट।

2000/-श्री शांतिलाल जी, ज्ञानचन्द जी भंडारी, बैंगलोर, सुश्रावक रत्न श्रीमान् कुन्दनमल जी भंडारी (कुचेरा वाले) का स्वर्गवास दिनांक 28.11.2008 को होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

2000/-श्रीमती मंजू जी कोठारी, जयपुर, श्री पदमचन्द जी कोठारी की तृतीय पुण्य स्मृति में भेंट।

1101/-श्री ज्ञानचन्द जी मुणोत, हुबली, दक्षिण भारतीय स्तर पर दिनांक 25 व 26 जनवरी को "Fruitful Inspiration in Life 2009" नामक कार्यशाला का सफल आयोजन होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/-श्री जे. रमेशचन्द जी, कीर्तिकुमार जी, अंकित कुमार जी चौधरी, मैसूर, आचार्य श्री की जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/-श्रीमती शांताबाई जी धर्मपत्नी स्व. श्री शांतिलाल जी धोका, मैसूर, आचार्यश्री की जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/-श्रीमती विमला जी, श्री प्रकाश जी, राजेश जी, श्री रमेश जी, श्रेयांश जी, ऋषभ जी, वेदान्त जी लोढ़ा, जयपुर, श्री रतनचन्द जी लोढ़ा की प्रथम पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/-श्री पदमचन्द जी, नेमीचंद जी बम्ब, बैंगलोर, पूज्य पिताश्री श्री एस. कन्हैयालाल जी बम्ब का दिनांक 7.01.2009 को संथारे सहित महाप्रयाण हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/-श्री पुसालाल जी महेन्द्र कुमार जी कोठारी, चेन्नई, साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के पावटा चातुर्मास में दर्शन लाभ लेने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/-श्री प्रकाशचन्द जी खारीवाल, चामराजपेठ-बैंगलोर, सुपुत्र चि. गौरव का शुभविवाह दि. 07.12.09 को सौ. कां. सपना सुपुत्र श्री निर्मल कुमार जी चौपड़ा, बैंगलोर, के साथ सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

1001/-श्री प्रेमबाबू जी जैन, सवाईमाधोपुर कुमारी शिल्पी जी जैन सुपुत्री श्रीमती विजयलक्ष्मी जी प्रेमबाबू जी जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर के इन्फोसिस टेक्नोलॉजी, पूना में

सोफ्टवेअर इंजीनियर के पद का कार्य ग्रहण करने के उपलक्ष्य में भेंट।

1001/-श्री मांगीलाल जी, प्रकाशचन्द जी कोठारी (कवासपुर वाला) हाल मुकाम चेन्नई, साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के पावटा चातुर्मास में दर्शन लाभ लेने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/-श्री सतीशचन्द जी, गिरीश कुमार जी, पवन कुमार जी जैन, गंगापुरसिटी-सवाईमाधोपुर, पूज्य माताजी श्रीमती पुष्पलता जी जैन धर्मपत्नी श्री अमीरचन्द जी जैन की 18वीं पुण्य स्मृति में भेंट।

1000/-श्री जितेश कुमार जी बाघमार, जबलपुर, सुपुत्र संयम जी बाघमार के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/-श्री विमलचन्द जी, रिखबचन्द जी, सुभाषचन्द जी, अशोक कुमार जी, श्रेणिकराज जी धोका, मैसूर, आचार्यप्रवर की जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/-श्री सोहनलाल जी बुधमल जी, सम्पतराज जी बाघमार, मैसूर, आचार्यप्रवर की जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/-श्री देवराज जी, किरणराज जी चौपड़ा, शूले-बैंगलोर, सौ. कां. सपना सुपुत्री श्री निर्मल कुमार जी चौपड़ा का शुभविवाह दि. 7.12.08 को चि. गौरव सुपुत्र श्री प्रकाशचन्द जी खारीवाल, चामराजपेठ के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

600/-श्रीमती केशर जी गांग धर्मपत्नी श्री चंचलमल जी गांग, जोधपुर (राज.), अपने 60 वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/-श्री पारसचन्द जी अंकित कुमार जी जैन (श्यामपुरा वाले), जयपुर, उपाध्याय प्रवर पंडित रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के गढ सिवाना में सपरिवार दर्शनलाभ करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/-कुमारी पल्लवी जी जैन (एडवोकेट) श्यामपुरा वाले, जयपुर, श्री अंकित कुमार जी जैन सुपुत्र श्री पारसचन्द जी जैन का बी.टेक करने के उपरान्त Deutschey Bank में नियुक्ति प्राप्त कर लन्दन में दो माह का सफल प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/-श्री पारसचन्द जी शकुन्तला जी जैन (श्यामपुरा वाले), जयपुर, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकुँवर जी म.सा. आदि ठाणा-4 द्वारा मानसरोवर चातुर्मास सानन्द सम्पन्न कर ए-39, त्रिवेणी नगर, जयपुर में पधार कर धर्मोपदेश देने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/-श्री धनसुरेश जी अशीष कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर, परम श्रद्धेय पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. की 99वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/-श्री कपूरचन्द जी, ओमप्रकाश जी, सोमप्रकाश जी जैन, सवाईमाधोपुर, श्री लोकेश जी सुपुत्र श्री सोमप्रकाश जी जैन का दिनांक 08.01.2009 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

501/-श्री बाबूलाल जी अभिनन्दन कुमार जी जैन, जयपुर, चि. रवि जी सुपुत्र श्री अभिनन्दन जी

जैन के विवाह उत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/-श्री पारस कुमार जी जैन, इन्द्रगढ़-बूंदी अपने सुपुत्र चि. ऋषभ-उषा जी जैन को पुत्र रत्न प्राप्ति होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/-श्री लक्ष्मीमल जी श्रीमती किरण जी सुराणा, जयपुर विवाह की 40वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/-श्री प्रवीण जी, नितीन जी, दीपक जी, प्रफुल्ल जी रूणवाल, माधवनगर, पूज्य पिताश्री स्व. श्रीमान् दुर्गालाल जी रूणवाल सा बिलापुर वालों की 9वीं पुण्यस्मृति के उपलक्ष्य में भेंट।

500/-श्री दुलीचन्द जी, सुनील कुमार जी खाबिया, मैसूर, आचार्यप्रवर की जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/-श्री शांतिलाल जी, राजेश कुमार जी खाबिया, मैसूर, आचार्यप्रवर की जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/-श्री दौलतराज जी बांठिया, अहमदाबाद, सुपौत्र चि. कल्पेश कुमार जी सुपुत्र श्री सम्पतराज जी बांठिया का शुभ विवाह सौ.कां. संतोष जी सुपुत्री श्री रोहित कुमार जी बालड, गढ सिवाना निवासी के संग दिनांक 24.11.2008 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/-श्री अशोक कुमार जी, अनिल कुमार जी, अजय कुमार जी मारू, बारां, के अग्रज भ्राता श्री प्रेमचन्द जी मारू का दिनांक 11.12.2008 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/-श्री देवेन्द्रनाथ जी मोदी, श्रीमती कमला जी मोदी, श्री लोकेन्द्रनाथ जी एवं ऋतु जी मोदी, जोधपुर, श्री हुकमनाथ जी मोदी एवं श्रीमती कृष्णा जी मोदी की पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

500/-श्रीमती प्रमिता नरेन्द्र जी मेहता, कोलकाता, अपने पौत्र अंश (प्रपौत्र श्रीमती गुलाबकंवर-स्व. श्री सायरमल जी चतुर मेहता) पुत्र श्रीमती मंजरी-अनुज मेहता के जन्मोत्सव एवं स्वर्ण निसरणी आरोहण के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/-श्रीमती अमरकंवर एवं श्री महावीरचन्द जी सिंघवी, जोधपुर, अपने प्रपौत्र रत्न एवं श्रीमती सरला-राजकुमार जी सिंघवी के पौत्ररत्न तथा श्रीमती प्रिया-रोहित जी सिंघवी के पुत्ररत्न की प्राप्ति के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/-श्री धर्मचन्द जी, सुमेरचन्द जी, केशरीचन्द जी, महेशचन्द जी, जिनेशचन्द जी, सतीशचन्द जी जैन, हिण्डौन सिटी, अपनी पूज्य माताश्री श्रीमती सम्पत्तिदेवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री रामसहाय जी जैन (कंजौली वाले) का स्वर्गवास दि. 11.01.2009 को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/-श्री मूलचन्द जी ओस्तवाल, विजयवाड़ा, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती नेमकंवर जी का 19.12.2008 को स्वर्गवास हो जाने पर पुण्य स्मृति में भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को प्राप्त साभार

20000/-श्री पी. एस. सुराणा, चेन्नई अध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल, मंडल से प्रकाशित पुस्तक श्रावक के बारह व्रत के पुन: मुद्रण हेतु अर्थ सहयोग प्राप्त हुआ।

11000/-श्री चंचलचन्द जी सिंघवी, जोधपुर सत्साहित्य के प्रकाशन हेतु अर्थ सहयोग प्राप्त हुआ।

जीवदया हेतु प्राप्त साभार

501/-श्री जसवन्तमल जी गांग, जोधपुर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती गुलाबजी गांग (पुत्रवधू स्व. श्री बस्तीमल जी गांग) सुपुत्री स्व. श्री परमात्माचन्द सा भण्डारी का देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/-श्री नरेन्द्र जी मेहता, कोलकाता, अपने पौत्र अंश (प्रपौत्र श्रीमती गुलाबकंवर-स्व. श्री सायरमल जी चतुर मेहता) पुत्र श्रीमती मंजरी-अनुज मेहता के जन्मोत्सव एवं स्वर्ण निसरणी आरोहण के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/-श्री जगदीशमल जी महावीर जी कोठारी, लक्ष्मीनगर, जोधपुर (राज.) की तरफ से भेंट।

श्राविका मण्डल, जयपुर को प्राप्त साभार

4000/- श्री गुप्तदान भेंट।

1100/- श्रीमती उषा जी गौतमचन्द जी सुराणा, जयपुर, पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुम्बई चातुर्मास में श्रीमती उषा जी सुराणा के मासखमण की तपस्या सानन्द सफल होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार सहयोग

5100/- श्री सम्पतराज जी ज्ञानचन्द जी बागमार, श्रीकालाहस्ती (आ.प्र.), अपनी माताजी श्रीमती रतनदेवी जी बागमार धर्मपत्नी स्व. श्री मांगीलाल जी बागमार (मेड़ता सिटी वाले) के दिनांक 26.12.08 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

1000/- श्री वर्धमान स्थानकवासी श्रावक संघ, पारसोली

501/- श्री कनकमल जी दौलतमल जी चोरडिया, चेन्नई, नये वर्ष में आगम रत्नाकर, व्यसन फैशन के निवारक आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के बोरडी में दर्शनों के पावन उपलक्ष्य पर सप्रेम भेंट।

501/- श्री कनकमल जी दौलतमल जी चोरडिया, चेन्नई, परमपूज्य चारित्र चूड़ामणि आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. के 99वें जन्म-दिवस पर घोड़ों का चौक में साध्वीप्रमुखा मैनासुन्दरी जी म.सा. के दर्शनों के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री कनकमल जी दौलतमल जी चोरडिया, चेन्नई, आसाडा में विराजित परमपूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतम मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के उपाध्यायप्रवर के 75वें जन्म दिवस पर दर्शन के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री कनकमल जी दौलतमल जी चोरडिया, चेन्नई, साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका

महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. की 63वीं दीक्षा जयन्ती दिनांक 7.2.09 के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती प्रतिमा जी-श्री नरेन्द्र जी मेहता, कोलकाता, अपने पौत्र अंश (प्रपौत्र श्रीमती गुलाबकंवर-स्व. श्री सायरमल जी चतुर मेहता) पुत्र श्रीमती मंजरी-अनुज मेहता के जन्मोत्सव एवं स्वर्ण निसरणी आरोहण के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

1,08,000/- मैसर्स धनराज ढढ्ढा रिलीजियस फण्ड, मुम्बई (महा.)

96,000/- श्री एम.हरीश कुमार जी कवाड़, पुनमल्ली, चेन्नई (तमि.)

60,000/- श्री अनूपकुमार जी बाघमार, चेन्नई, के अपने पुत्र श्री पंकज बाघमार के विवाह के उपलक्ष्य में भेंट।

60,000/- श्री प्रेमचन्द जी मोहित कुमार जी बाघमार, चेन्नई, नूतन गृह-प्रवेश के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

24,000/- श्री संजीव जी नाहर, द्वारा नाहर बद्रर्स, सूरत।

12,000/- श्री मदनजी बोहरा (श्री मीना बाई जैन) आवड़ी, चेन्नई।

12,000/- श्री शैलेन्द्र जैन (श्रीमती मन्जुला जी जैन) जबलपुर।

12,000/- श्री आनन्दजी विमलाजी चोरडिया, चेन्नई,।

12,000/- श्री गोतम जी रेणु जी जैन, मुम्बई।

12,000/- श्री सागरमल जी छाजेड़, द्वारा सागर मारबल्स एवं ग्रेनाइट, गुलबर्गा।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़,* 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

फाल्गुन कृष्णा 8	मंगलवार, 17.02.2009	अष्टमी
फाल्गुन कृष्णा 14	सोमवार, 23.02.2009	चतुर्दशी
फाल्गुन कृष्णा 30	मंगलवार, 24.02.2009	पक्खी
फाल्गुन शुक्ला 8	बुधवार, 04.03.2009	अष्टमी
फाल्गुन शुक्ला 14	मंगलवार, 10.03.2009	फाल्गुनी चौमासी, पक्खी

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अनूठा दान छात्रवृत्ति का
जीवन बनता एक विद्यार्थी का

With Best Compliments From :

SURANA
INDUSTRIES LIMITED

SIL

Manufacturers & Exporters of

Symbolises the Aspiration of Discerning Steel Buyers !

Premium Quality Steels, viz., HSD/CTD Bars, MS Rounds Structurals Like Flats, Channels Angles and Squares

Always Use SURANA STEELS to
Highlight your House/Industry

Regd. Cum Corporate Head Office
29, Whites Road, II Floor Royapettah, Chennai-600 014
Grams : **GURUHASTI**
Phone : 28525127 (3 Lines) Fax : 044 28521143
E-mail : suranast@vsnl.com
Website : www.suranaind.com

Works

F-67, 68 & 69 SIPCOT Industrial Complex
Gummidipoondi 601 201, Tiruvallur Dist. Tamilnadu
Ph.: 954119 222881 Telefax : 954119222880

Sales Yard

30, G.N.T. Road, Madhavaram, Chennai 600 110
Ph.: 25375531/32/33 Fax : 044 25375400

जयगुरु हस्ती · जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

ज्ञान का एक दीया जलाइये
सहयोग के लिए आगे आइए
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का
लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बन्धुवर

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए Rs. 12,000 के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट (Donations to Gajendra Nidhi are Exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) से निम्नांकित पते पर भेजे, पुण्यधन कमाइऐं।

Ashok Kavad
PRITHVI EXCHANGE
33, Montieth Road. Egmore, CHENNAI-600008
Tele Fax 044-43434249, 09381041097

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ाइसके पालन का।।

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

No. 4 Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

N0. 5, Car Street,
Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 26272906, 55689588

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

रत्नसंघ की विभिन्न संस्थाओं के प्रमुख पदाधिकारी

1. **संयोजक-संरक्षक मण्डल** 022-30645000/23648004
   श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई
2. **संयोजक-शासन सेवा समिति**
   श्रीमान् रतनलाल सी. बाफना, जलगाँव 0257-2225903/09823076551
3. **गजेन्द्र निधि/गजेन्द्र फाउण्डेशन**
   अध्यक्ष-श्रीमान् नवरतन जी कोठारी, मुम्बई 022-23673939/23698880
4. **अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर** **0291-2636763**
   अध्यक्ष-श्रीमान् सुमेरसिंह जी बोथरा, जयपुर 0141-2620571
   09414048830/09314048830
   कार्याध्यक्ष-श्रीमान् ज्ञानेन्द्र जी बाफना, जोधपुर 0291-2434355/09414093147
   महामंत्री-श्रीमान् नवरतन जी डागा, जोधपुर 0291-2654427/09828032215
5. **सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर** **0141-2575997, 2570753**
   अध्यक्ष-श्रीमान् पी. शिखरमल जी सुराणा, चेन्नई 044-25380387/25391597
   09884430000
   कार्याध्यक्ष-श्रीमान् नवरतन जी भंसाली, बैंगलोर 080-22265957/09844158943
   कार्याध्यक्ष-श्रीमान् आनन्द जी चौपड़ा, जयपुर 0141-3233318/09414090931
   मंत्री- श्रीमान् प्रेमचन्द जी जैन, जयपुर 0141-2212982/09413453774
6. **अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर** **0291-2636763**
   अध्यक्ष-श्रीमती (डॉ.) मंजुला जी बम्ब, जयपुर 0141-2362692/09314292229
   कार्याध्यक्ष-श्रीमती मधु जी सुराणा, चेन्नई 044-25293001/42765646
   मंत्री-श्रीमती आशा जी गांग, जोधपुर 0291-2544124/9314044124
7. **अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर** **0291-2641445**
   अध्यक्ष-श्रीमान् कुशल जी गोटेवाला, सवाईमाधोपुर 07462-233550/09460441570
   कार्याध्यक्ष-श्रीमान् प्रमोद जी हीरावत, जयपुर 0141-2742665/09314507303
   कार्याध्यक्ष-श्रीमान् बुधमल जी बोहरा, चेन्नई 044-26425093/09444235065
   महासचिव-श्रीमान् महेन्द्र जी सुराणा, जोधपुर 0291-2546501/09414921164
8. **श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर** **0291-2624891**
   संयोजक-श्रीमान् चंचलमल जी चोरडिया, जोधपुर 0291-2621454/09414134606
   सचिव-श्रीमती मोहनकौर जी जैन, जोधपुर 0291-3296033/09351590014
9. **अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर** **0291-2630490**
   संयोजक-श्रीमती सुशीला जी बोहरा, जोधपुर 0291-5108799/09414133879
   सचिव-श्रीमान् राजेश जी कर्णावट, जोधपुर 0291-2549925/09414128925
10. **अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर** **0291-2622623**
    संयोजक-श्रीमती विमला जी मेहता, जोधपुर 0291-2435637/09351421637
    सचिव-श्रीमान् सुभाष जी हुण्डीवाल, जोधपुर 0291-2555230/09460551096

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)

098407 18382

2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.

S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.

NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES

NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS

NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 66 ★ अंक : 2 ★ मूल्य : 10 रु.
10 फरवरी, 2009 ★ माघ 2065

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

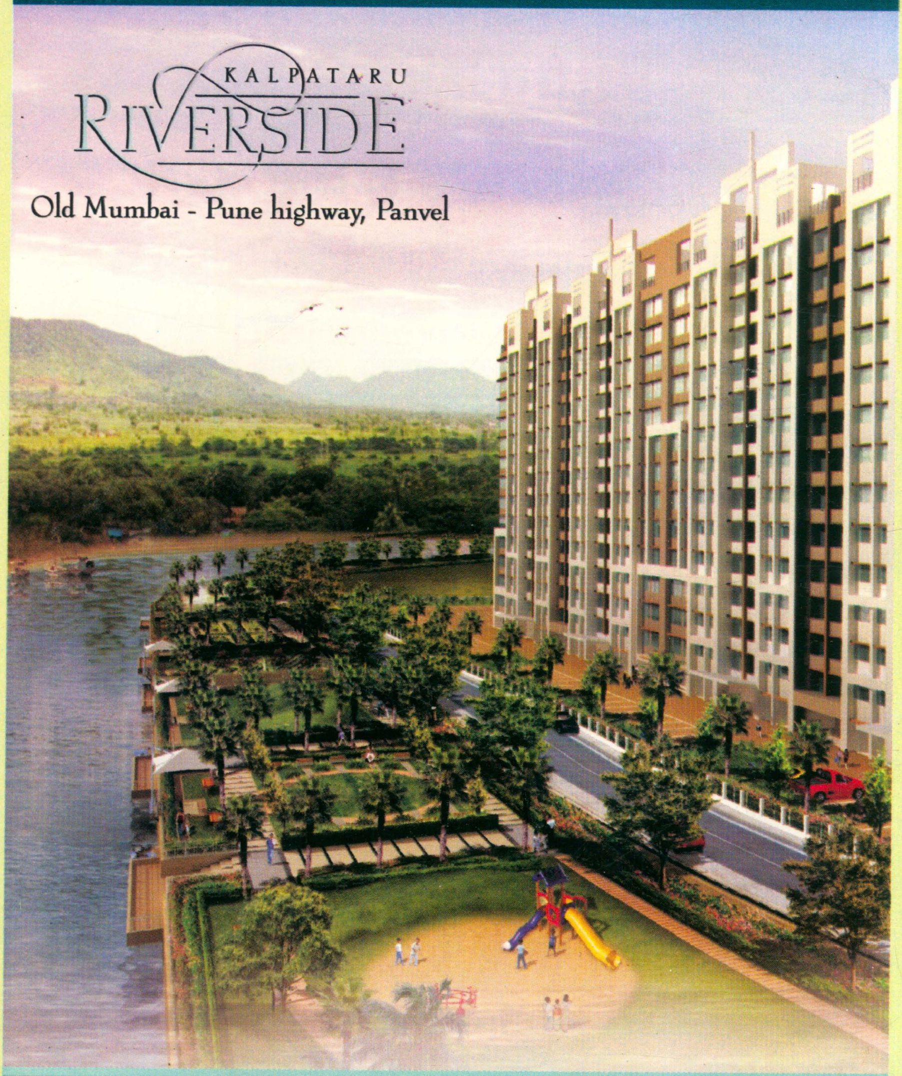

KALPA-TARU®
101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East),
Mumbai - 400 055. ● Tel.: 3064 3065, 98339 45470 ● Fax: 3064 3131
Website: www.kalpataru.com

स्वामी-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिये मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक प्रेमचन्द जैन, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।